بِهٖ فَسَيُدْخِلُهُمْ فِيْ رَحْمَةٍ مِّنْهُ وَفَضْلٍ ۙ وَّيَهْدِيْهِمْ اِلَيْهِ صِرَاطًا

थामी तो अ़न्क़रीब अल्लाह उन्हें अपनी रह़मत और अपने फ़ज़्ल में दाख़िल करेगा[436] और उन्हें अपनी त़रफ़ सीधी राह

مُّسْتَقِيْمًا ؕ﴿١٧٥﴾ يَسْتَفْتُوْنَكَ ؕ قُلِ اللّٰهُ يُفْتِيْكُمْ فِي الْكَلٰلَةِ ؕ اِنِ امْرُؤٌا

दिखाएगा ऐ मह़बूब तुम से फ़तवा पूछते हैं तुम फ़रमा दो कि अल्लाह तुम्हें कलालह[437] में फ़तवा देता है अगर किसी मर्द

هَلَكَ لَيْسَ لَهٗ وَلَدٌ وَّلَهٗۤ اُخْتٌ فَلَهَا نِصْفُ مَا تَرَكَ ۚ وَهُوَ يَرِثُهَاۤ

का इन्तिक़ाल हो जो बे औलाद है[438] और उस की एक बहन हो तो तर्के में से उस की बहन का आधा है[439] और मर्द अपनी बहन का वारिस होगा

اِنْ لَّمْ يَكُنْ لَّهَا وَلَدٌ ؕ فَاِنْ كَانَتَا اثْنَتَيْنِ فَلَهُمَا الثُّلُثٰنِ مِمَّا تَرَكَ ؕ

अगर बहन की औलाद न हो[440] फिर अगर दो बहनें हों तर्के में उन का दो तिहाई

وَاِنْ كَانُوْۤا اِخْوَةً رِّجَالًا وَّنِسَآءً فَلِلذَّكَرِ مِثْلُ حَظِّ الْاُنْثَيَيْنِ ؕ

और अगर भाई बहन हों मर्द भी और औ़रतें भी तो मर्द का ह़िस्सा दो औ़रतों के बराबर

يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمْ اَنْ تَضِلُّوْا ؕ وَاللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ﴿١٧٦﴾ ع ٢٤ ٥

अल्लाह तुम्हारे लिये साफ़ बयान फ़रमाता है कि कहीं बहक न जाओ और अल्लाह हर चीज़ जानता है

اٰياتها ١٢٠ ۞ ٥ سُوْرَةُ الْمَآئِدَةِ مَدَنِيَّةٌ ١١٢ ۞ ركوعاتها ١٦

सूरए माइदह मदनिय्या है, इस में एक सो बीस आयात और सोलह रुकूअ़ हैं[1]

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो बहुत मेहरबान रह़्म वाला

436 : और जन्नत व दरजाते आ़लिया अ़त़ा फ़रमाएगा। 437 : "कलालह" उस को कहते हैं जो अपने बा'द न बाप छोड़े न औलाद। **438 शाने नुज़ूल :** ह़ज़रते जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से मरवी है कि वोह बीमार थे तो रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم मअ़ ह़ज़रत सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ के इयादत के लिये तशरीफ़ लाए, ह़ज़रते जाबिर बेहोश थे, ह़ज़रत ने वुज़ू फ़रमा कर आबे वुज़ू उन पर डाला, उन्हें इफ़ाक़ा हुवा आंख खोल कर देखा तो हुज़ूर तशरीफ़ फ़रमा हैं, अ़र्ज़ किया : **या रसूलल्लाह!** मैं अपने माल का क्या इन्तिज़ाम करूं ? इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई (بخاری و مسلم), अबू दावूद की रिवायत में येह भी है कि सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم ने ह़ज़रते जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से फ़रमाया : ऐ जाबिर ! मेरे इ़ल्म में तुम्हारी मौत इस बीमारी से नहीं है। इस ह़दीस से चन्द मस्अले मा'लूम हुए। **मस्अला :** बुज़ुर्गों का आबे वुज़ू तबर्रुक है और इस को ह़ुसूले शिफ़ा के लिये इस्ति'माल करना सुन्नत है। **मस्अला :** मरीज़ों की इयादत सुन्नत है। **मस्अला :** सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم को अल्लाह तआ़ला ने उ़लूमे ग़ैब अ़त़ा फ़रमाए हैं, इस लिये हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم को मा'लूम था कि ह़ज़रते जाबिर की मौत इस मरज़ में नहीं है। 439 : अगर वोह बहन सगी या बाप शरीक हो। 440 : या'नी अगर बहन बे औलाद मरी और भाई रहा तो वोह भाई उस के कुल माल का वारिस होगा। 1 : सूरए माइदह मदीनए त़य्यिबा में नाज़िल हुई सिवाए आयत "اَلْیَوْمَ اَكْمَلْتُ لَكُمْ دِیْنَكُمْ" के, येह आयत रोज़े अ़रफ़ा, ह़ज्जतुल वदाअ़ में नाज़िल हुई और सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم ने ख़ुत़्बे में इस को पढ़ा इस में एक सो बीस आयतें और बारह हज़ार चार सो चौंसठ ह़र्फ़ हैं।

www.dawateislami.net

یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْۤا اَوْفُوْا بِالْعُقُوْدِ ؕ۬ اُحِلَّتْ لَكُمْ بَهِیْمَةُ الْاَنْعَامِ

ऐ ईमान वालो अपने क़ौल (अ़हद) पूरे करो[2] तुम्हारे लिये ह़लाल हुए बे ज़बान मवेशी

اِلَّا مَا یُتْلٰى عَلَیْكُمْ غَیْرَ مُحِلِّی الصَّیْدِ وَ اَنْتُمْ حُرُمٌ ؕ اِنَّ اللّٰهَ یَحْكُمُ

मगर वोह जो आगे सुनाया जाएगा तुम को[3] लेकिन शिकार ह़लाल न समझो जब तुम एह़राम में हो[4] बेशक **अल्लाह** हुक्म फ़रमाता है

مَا یُرِیْدُ ۝۱ یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا لَا تُحِلُّوْا شَعَآىِٕرَ اللّٰهِ وَ لَا الشَّهْرَ

जो चाहे ऐ ईमान वालो ह़लाल न ठहरा लो **अल्लाह** के निशान[5] और न अदब

الْحَرَامَ وَ لَا الْهَدْیَ وَ لَا الْقَلَآىِٕدَ وَ لَاۤ آٰمِّیْنَ الْبَیْتَ الْحَرَامَ یَبْتَغُوْنَ

वाले महीने[6] और न ह़रम को भेजी हुई क़ुरबानियां और न[7] जिन के गले में अ़लामतें आवेज़ां[8] और न उन का माल आबरू जो इ़ज़्ज़त वाले घर का क़स्द कर के आएं[9]

فَضْلًا مِّنْ رَّبِّهِمْ وَ رِضْوَانًا ؕ وَ اِذَا حَلَلْتُمْ فَاصْطَادُوْا ؕ وَ لَا یَجْرِمَنَّكُمْ

अपने रब का फ़ज़्ल और उस की ख़ुशी चाहते और जब एह़राम से निकलो तो शिकार कर सकते हो[10] और तुम्हें किसी

شَنَاٰنُ قَوْمٍ اَنْ صَدُّوْكُمْ عَنِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ اَنْ تَعْتَدُوْا ۘ وقف لازم

क़ौम की अ़दावत कि उन्हों ने तुम को मस्जिदे ह़राम से रोका था ज़ियादती करने पर न उभारे[11]

2 : उ़क़ूद के मा'ना में मुफ़स्सिरीन के चन्द क़ौल हैं : इब्ने जरीर ने कहा कि अहले किताब को ख़िताब फ़रमाया गया है, मा'ना येह हैं कि ऐ मोमिनीने अहले किताब ! मैं ने कुतुबे मुतक़द्दिमा (साबिक़ा आस्मानी किताबों) में सय्यिदे आ़लम मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم पर ईमान लाने और आप की इत़ाअ़त करने के मुतअ़ल्लिक़ जो तुम से अ़हद लिये हैं वोह पूरे करो। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन का क़ौल है कि ख़िताब मोमिनीन को है, इन्हें उ़क़ूद के वफ़ा करने का हुक्म दिया गया है। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि इन उ़क़ूद से मुराद ईमान और वोह अ़हद हैं जो ह़राम व ह़लाल के मुतअ़ल्लिक़ क़ुरआने पाक में लिये गए। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन का क़ौल है कि इस में मोमिनीन के बाहमी मुआ़हदे मुराद हैं। **3 :** या'नी जिन की हुरमत शरीअ़त में वारिद हुई उन के सिवा तमाम चौपाए तुम्हारे लिये ह़लाल किये गए। **4 मस्अला :** कि ख़ुश्की का शिकार ह़ालते एह़राम में ह़राम है और दरियाई शिकार जाइज़ है जैसा कि इस सूरत के आख़िर में आएगा। **5 :** उस के दीन के मआ़लिम (अरकाने ह़ज या अह़कामे इस्लाम)। मा'ना येह हैं कि जो चीज़ें **अल्लाह** ने फ़र्ज़ कीं और जो मन्अ़ फ़रमाईं सब की हुरमत का लिह़ाज़ रखो। **6 :** माह-हाए ह़ज जिन में ''क़िताल'' ज़मानए जाहिलिय्यत में भी मम्नूअ़ था और इस्लाम में भी येह हुक्म बाक़ी रहा। **7 :** वोह क़ुरबानियां। **8 :** अ़रब के लोग क़ुरबानियों के गले में ह़रम शरीफ़ के अश्जार की छालों वग़ैरा से गुलूबन्द बुन कर डालते थे ताकि देखने वाले जान लें कि येह ह़रम को भेजी हुई क़ुरबानियां हैं और इन से तअ़र्रुज़ (छेड़छाड़) न करें **9 :** ह़ज व उ़मरह करने के लिये। **शाने नुज़ूल :** शुरैह़ बिन हिन्द एक मश्हूर शक़ी (बद बख़्त) था, वोह मदीनए त़य्यिबा में आया और सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ करने लगा कि आप ख़ल्क़े ख़ुदा को क्या दा'वत देते हैं ? फ़रमाया : अपने रब के साथ ईमान लाने और अपनी रिसालत की तस्दीक़ करने और नमाज़ क़ाइम रखने और ज़कात देने की, कहने लगा बहुत अच्छी दा'वत है, मैं अपने सरदारों से राय ले लूं तो मैं भी इस्लाम लाऊंगा और उन्हें भी लाऊंगा, येह कह कर चला गया। ह़ुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने उस के आने से पहले ही अपने अस्ह़ाब को ख़बर दे दी थी कि क़बीलए रबीआ़ का एक शख़्स आने वाला है जो शैत़ानी ज़बान बोलेगा। उस के चले जाने के बा'द ह़ुज़ूर ने फ़रमाया कि काफ़िर का चेहरा ले कर आया और ग़ादिर व बद अ़हद की त़रह़ पीठ फेर कर गया, येह इस्लाम लाने वाला नहीं। चुनान्चे उस ने ग़दर (धोका) किया और मदीने शरीफ़ से निकलते हुए वहां के मवेशी और अम्वाल ले गया। अगले साल यमामा के ह़ाजियों के साथ तिजारत का कसीर सामान और ह़ज की क़िलादा पोश (हार व गुलूबन्द पहनाई हुई) क़ुरबानियां ले कर ब इरादए ह़ज निकला, सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم अपने अस्ह़ाब के साथ तशरीफ़ ले जा रहे थे, राह में सह़ाबा ने शुरैह़ को देखा और चाहा कि मवेशी उस से वापस ले लें, रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने मन्अ़ फ़रमाया, इस पर येह आयत नाज़िल हुई और हुक्म दिया गया कि जिस की ऐसी शान हो उस से तअ़र्रुज़ न चाहिये। **10 :** येह बयाने इबाह़त है कि एह़राम के बा'द शिकार मुबाह़ हो जाता है। **11 :** या'नी अहले मक्का ने रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم को और आप के अस्ह़ाब को रोज़े

www.dawateislami.net

وَتَعَاوَنُوْا عَلَى الْبِرِّ وَالتَّقْوٰى ۪ وَلَا تَعَاوَنُوْا عَلَى الْاِثْمِ وَالْعُدْوَانِ ۪

और नेकी और परहेज़्गारी पर एक दूसरे की मदद करो और गुनाह और ज़ियादती पर बाहम मदद न दो[12]

وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ شَدِیْدُ الْعِقَابِ ۝۲ حُرِّمَتْ عَلَیْكُمُ الْمَیْتَةُ

और **अल्लाह** से डरते रहो बेशक **अल्लाह** का अ़ज़ाब सख़्त है तुम पर ह़राम है[13] मुर्दार

وَالدَّمُ وَلَحْمُ الْخِنْزِیْرِ وَمَاۤ اُهِلَّ لِغَیْرِ اللّٰهِ بِهٖ وَالْمُنْخَنِقَةُ وَ

और ख़ून और सुअर का गोश्त और वोह जिस के ज़ब्ह़ में ग़ैरे ख़ुदा का नाम पुकारा गया और वोह जो गला घोंटने से मरे और

الْمَوْقُوْذَةُ وَالْمُتَرَدِّیَةُ وَالنَّطِیْحَةُ وَمَاۤ اَكَلَ السَّبُعُ اِلَّا مَا

बे धार की चीज़ से मारा हुवा और जो गिर कर मरा और जिसे किसी जानवर ने सींग मारा और जिसे कोई दरिन्दा खा गया मगर जिन्हें

ذَكَّیْتُمْ ۫ وَمَا ذُبِحَ عَلَى النُّصُبِ وَاَنْ تَسْتَقْسِمُوْا بِالْاَزْلَامِ ؕ ذٰلِكُمْ

तुम ज़ब्ह़ कर लो और जो किसी थान (बात़िल मा'बूदों के मख़्सूस निशानात) पर ज़ब्ह़ किया गया और पांसे डाल कर बांटा करना येह गुनाह

فِسْقٌ ؕ اَلْیَوْمَ یَىٕسَ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا مِنْ دِیْنِكُمْ فَلَا تَخْشَوْهُمْ

का काम है आज तुम्हारे दीन की त़रफ़ से काफ़िरों की आस टूट गई[14] तो उन से न डरो

ह़ुदैबिया उ़म्रे से रोका, उन के इस मुआ़निदाना (दुश्मनाना) फ़े'ल का तुम इन्तिक़ाम न लो। **12 :** बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया जिस का हुक्म दिया गया उस का बजा लाना "بِـرّ" (नेकी) और जिस से मन्अ़ फ़रमाया गया उस को तर्क करना "तक़्वा" और जिस का हुक्म दिया गया उस को न करना "اِثْم" (गुनाह) और जिस से मन्अ़ किया गया उस को करना "عدوان" (ज़ियादती) कहलाता है। **13 :** आयत "اِلَّا مَا يُتْلٰى عَلَيْكُمْ" में जो इस्तिस्ना ज़िक्र फ़रमाया गया था यहां उस का बयान है और ग्यारह चीज़ों की ह़ुरमत का ज़िक्र किया गया है **एक** मुर्दार या'नी जिस जानवर के लिये शरीअ़त में ज़ब्ह़ का हुक्म हो और वोह बे ज़ब्ह़ मर जाए। **दूसरे** बहने वाला ख़ून। **तीसरे** सुअर का गोश्त और इस के तमाम अज्ज़ा। **चौथे** वोह जानवर जिस के ज़ब्ह़ के वक़्त ग़ैरे ख़ुदा का नाम लिया गया हो जैसा कि ज़मानए जाहिलिय्यत के लोग बुतों के नाम पर ज़ब्ह़ करते थे, और जिस जानवर को ज़ब्ह़ तो सिर्फ़ **अल्लाह** के नाम पर किया गया हो मगर दूसरे अवक़ात में वोह ग़ैरे ख़ुदा की त़रफ़ मन्सूब रहा हो वोह ह़राम नहीं जैसे कि अ़ब्दुल्लाह की गाय, अ़क़ीक़े का बकरा, वलीमे का जानवर, या वोह जानवर जिन से औलिया की अरवाह़ को सवाब पहुंचाना मन्ज़ूर हो उन को ग़ैरे वक़्ते ज़ब्ह़ में औलिया के नामों के साथ नामज़द किया जाए मगर ज़ब्ह़ उन का फ़क़त़ **अल्लाह** के नाम पर हो, उस वक़्त किसी दूसरे का नाम न लिया जाए वोह ह़लाल व त़य्यिब हैं। इस आयत में सिर्फ़ उसी को ह़राम फ़रमाया गया है जिस को ज़ब्ह़ करते वक़्त ग़ैरे ख़ुदा का नाम लिया गया हो, वहाबी जो ज़ब्ह़ की क़ैद नहीं लगाते वोह आयत के मा'ना में ग़लत़ी करते हैं और उन का क़ौल तमाम तफ़ासीरे मो'तबरा के ख़िलाफ़ है और ख़ुद आयत उन के मा'ना को बनने नहीं देती क्यूं कि "مَآ اُهِلَّ بِهٖ" को अगर वक़्ते ज़ब्ह़ के साथ मुक़य्यद न करें तो "اِلَّا مَا ذَكَّيْتُمْ" का इस्तिस्ना इस को लाह़िक़ होगा और वोह जानवर जो ग़ैरे वक़्ते ज़ब्ह़ में ग़ैरे ख़ुदा के नाम से मौसूम रहा हो वोह "اِلَّا مَــا ذَكَّيْتُمْ" से ह़लाल होगा। ग़रज़ वहाबी को आयत से सनद लाने की कोई सबील नहीं। **पांचवां** गला घोंट कर मारा हुवा जानवर। **छटे** वोह जानवर जो लाठी, पथ्थर, ढेले, गोली, छर्रे या'नी बिग़ैर धारदार चीज़ से मारा गया हो। **सातवें** जो गिर कर मरा हो ख़्वाह पहाड़ से या कूंएं वग़ैरा में। **आठवें** वोह जानवर जिसे दूसरे जानवर ने सींग मारा हो और वोह उस के सदमे से मर गया हो। **नवें** वोह जिसे किसी दरिन्दे ने थोड़ा सा खाया हो और वोह उस के ज़ख़्म की तक्लीफ़ से मर गया हो। लेकिन अगर येह जानवर मर न गए हों और बा'द ऐसे वाक़िआ़त के ज़िन्दा बच रहे हों फिर तुम उन्हें बा क़ाइदा ज़ब्ह़ कर लो तो वोह ह़लाल हैं। **दसवें** वोह जो किसी थान पर इ़बादतन ज़ब्ह़ किया गया हो जैसे कि अहले जाहिलिय्यत ने का'बे शरीफ़ के गिर्द तीन सो साठ पथ्थर नस्ब किये थे जिन की वोह इ़बादत करते और उन के लिये ज़ब्ह़ करते थे और इस ज़ब्ह़ से उन की ता'ज़ीम व तक़र्रुब की निय्यत करते थे। **ग्यारहवें** ह़िस्सा और हुक्म मा'लूम करने के लिये पांसा (क़ुरआ़) डालना, ज़मानए जाहिलिय्यत के लोगों को जब सफ़र या जंग या तिजारत या निकाह़ वग़ैरा काम दरपेश होते तो वोह तीन तीरों से पांसे डालते और जो निकलता उस के मुत़ाबिक़ अ़मल करते और इस को हुक्मे इलाही जानते, इन सब की मुमानअ़त फ़रमाई गई। **14 :** येह आयत ह़ज्जतुल वदाअ़ में अ़रफ़ा के रोज़ जो जुमुआ़ को था बा'दे अ़स्र नाज़िल हुई। मा'ना येह हैं कि कुफ़्फ़ार तुम्हारे दीन पर ग़ालिब आने से मायूस हो गए।

www.dawateislami.net

وَاخْشَوْنِ ؕ اَلْيَوْمَ اَكْمَلْتُ لَكُمْ دِيْنَكُمْ وَاَتْمَمْتُ عَلَيْكُمْ نِعْمَتِىْ

और मुझ से डरो आज मैं ने तुम्हारे लिये तुम्हारा दीन कामिल कर दिया[15] और तुम पर अपनी ने'मत पूरी कर दी[16]

وَرَضِيْتُ لَكُمُ الْاِسْلَامَ دِيْنًا ؕ فَمَنِ اضْطُرَّ فِىْ مَخْمَصَةٍ غَيْرَ

और तुम्हारे लिये इस्लाम को दीन पसन्द किया[17] तो जो भूक प्यास की शिद्दत में नाचार (मजबूर) हो यूं कि

مُتَجَانِفٍ لِّاِثْمٍ ۙ فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۳﴾ يَسْـَٔلُوْنَكَ مَاذَآ اُحِلَّ

गुनाह की त़रफ़ न झुके[18] तो बेशक **अल्लाह** बख़्शने वाला मेहरबान है ऐ मह़बूब तुम से पूछते हैं कि उन के लिये क्या

لَهُمْ ؕ قُلْ اُحِلَّ لَكُمُ الطَّيِّبٰتُ ۙ وَمَا عَلَّمْتُمْ مِّنَ الْجَوَارِحِ مُكَلِّبِيْنَ

ह़लाल हुवा तुम फ़रमा दो कि ह़लाल की गईं तुम्हारे लिये पाक चीज़ें[19] और जो शिकारी जानवर तुम ने सधा (सिखा) लिये[20] उन्हें शिकार पर दौड़ाते

تُعَلِّمُوْنَهُنَّ مِمَّا عَلَّمَكُمُ اللّٰهُ ٘ فَكُلُوْا مِمَّآ اَمْسَكْنَ عَلَيْكُمْ وَ

जो इल्म तुम्हें ख़ुदा ने दिया उस में से उन्हें सिखाते तो खाओ उस में से जो वोह मार कर तुम्हारे लिये रहने दें[21] और

15 : और उमूरे तक्लीफ़िय्या (बन्दों पर लाज़िम चीज़ों) में ह़राम व ह़लाल के जो अह़काम हैं वोह और क़ियास के क़ानून सब मुकम्मल कर दिये, इसी लिये इस आयत के नुज़ूल के बा'द बयाने ह़लाल व ह़राम की कोई आयत नाज़िल न हुई अगर्चे "وَاتَّقُوْا يَوْمًا تُرْجَعُوْنَ فِيْهِ اِلَى اللّٰهِ" नाज़िल हुई मगर वोह आयते मौइज़त व नसीहत है। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन का क़ौल है कि दीन कामिल करने के मा'ना इस्लाम को ग़ालिब करना है। जिस का येह असर है कि ह़ज्जतुल वदाअ़ में जब येह आयत नाज़िल हुई कोई मुश्रिक मुसल्मानों के साथ ह़ज में शरीक न हो सका। एक क़ौल येह है कि मा'ना येह हैं कि मैं ने तुम्हें दुश्मन से अम्न दी, एक क़ौल येह है कि दीन का इक्माल येह है कि वोह पिछली शरीअ़तों की त़रह मन्सूख़ न होगा और क़ियामत तक बाक़ी रहेगा। **शाने नुज़ूल :** बुख़ारी व मुस्लिम की ह़दीस में है कि ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ के पास एक यहूदी आया और उस ने कहा कि ऐ अमीरुल मुअमिनीन आप की किताब में एक आयत है अगर वोह हम यहूदियों पर नाज़िल हुई होती तो हम रोज़े नुज़ूल को ई़द मनाते, फ़रमाया : कौन सी आयत ? उस ने येही आयत "اَلْيَوْمَ اَكْمَلْتُ لَكُمْ" पढ़ी, आप ने फ़रमाया : मैं उस दिन को जानता हूं जिस में येह नाज़िल हुई थी और इस के मक़ामे नुज़ूल को भी पहचानता हूं, वोह मक़ाम अ़रफ़ात का था और दिन जुमुआ़ का। आप की मुराद इस से येह थी कि हमारे लिये वोह दिन ई़द है। तिरमिज़ी शरीफ़ में ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمَا से मरवी है आप से भी एक यहूदी ने ऐसा ही कहा, आप ने फ़रमाया कि जिस रोज़ येह नाज़िल हुई उस दिन दो ई़दें थीं जुमुआ़ व अ़रफ़ा। **मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि किसी दीनी काम्याबी के दिन को ख़ुशी का दिन मनाना जाइज़ और सह़ाबा से साबित है वरना ह़ज़रते उ़मर व इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُم साफ़ फ़रमा देते कि जिस दिन कोई ख़ुशी का वाक़िआ़ हो उस की यादगार क़ाइम करना और उस रोज़ को ई़द मनाना हम बिदअ़त जानते हैं। इस से साबित हुवा कि ई़दे मीलाद मनाना जाइज़ है क्यूं कि वोह "اَعْظَمِ نِعَمِ اِلٰهِيَه" (**अल्लाह** तआ़ला की सब से बड़ी ने'मत) की यादगार व शुक्र गुज़ारी है। **16 :** मक्कए मुकर्रमा फ़त्ह़ फ़रमा कर। **17 :** कि इस के सिवा कोई और दीन क़बूल नहीं। **18 :** मा'ना येह हैं कि ऊपर ह़राम चीज़ों का बयान कर दिया गया है लेकिन जब खाने पीने को कोई ह़लाल चीज़ मुयस्सर ही न आए और भूक प्यास की शिद्दत से जान पर बन जाए, उस वक़्त जान बचाने के लिये क़दरे ज़रूरत खाने पीने की इजाज़त है इस त़रह़ कि गुनाह की त़रफ़ माइल न हो या'नी ज़रूरत से ज़ियादा न खाए। और ज़रूरत इसी क़दर खाने से रफ़्अ़ हो जाती है जिस से ख़त़रए जान जाता रहे। **19 :** जिन की ह़ुरमत क़ुरआनो ह़दीस, इज्माअ़ और क़ियास से साबित नहीं है, एक क़ौल येह भी है कि त़य्यिबात वोह चीज़ें हैं जिन को अ़रब और सलीमुत्तब्अ़ (नेक त़बीअ़त) लोग पसन्द करते हैं और ख़बीस वोह चीज़ें हैं जिन से सलीम त़बीअ़तें नफ़रत करती हैं। **मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि किसी चीज़ की ह़ुरमत (ह़राम होने) पर दलील न होना भी उस की ह़िल्लत (ह़लाल होने) के लिये काफ़ी है। **शाने नुज़ूल :** येह आयत अ़दी इब्ने ह़ातिम और ज़ैद बिन मुहल्हिल के ह़क़ में नाज़िल हुई जिन का नाम रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने ज़ैदुल ख़ैर रखा था, इन दोनों साह़िबों ने अ़र्ज़ किया : **या रसूलल्लाह !** हम लोग कुत्ते और बाज़ के ज़रीए शिकार करते हैं तो क्या हमारे लिये ह़लाल है ? तो इस पर आयते करीमा नाज़िल हुई। **20 :** ख़्वाह वोह दरिन्दों में से हों मिस्ल कुत्ते और चीते के या शिकारी परिन्दों में से मिस्ल शिक्रे, बाज़, शाहीन वग़ैरा के। जब उन्हें इस त़रह़ सधा लिया जाए कि जो शिकार करें उस में से न खाएं और जब शिकारी उन को छोड़े तब शिकार पर जाएं जब बुलाए वापस आ जाएं ऐसे शिकारी जानवरों को "मुअ़ल्लम" (सिखाया हुवा) कहते हैं। **21 :** और ख़ुद उस में से

www.dawateislami.net

اذْكُرُوا اسْمَ اللّٰهِ عَلَيْهِ ۪ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ۝۴

उस पर **अल्लाह** का नाम लो[22] और **अल्लाह** से डरते रहो बेशक **अल्लाह** को ह़िसाब करते देर नहीं लगती

اَلْيَوْمَ اُحِلَّ لَكُمُ الطَّيِّبٰتُ ؕ وَطَعَامُ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ حِلٌّ لَّكُمْ ۪

आज तुम्हारे लिये पाक चीज़ें ह़लाल हुईं और किताबियों का खाना[23] तुम्हारे लिये ह़लाल है

وَطَعَامُكُمْ حِلٌّ لَّهُمْ ۫ وَالْمُحْصَنٰتُ مِنَ الْمُؤْمِنٰتِ وَالْمُحْصَنٰتُ مِنَ

और तुम्हारा खाना उन के लिये ह़लाल है और पारसा (पाक दामन) औ़रतें मुसल्मान[24] और पारसा औ़रतें उन में से

الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكُمْ اِذَاۤ اٰتَيْتُمُوْهُنَّ اُجُوْرَهُنَّ مُحْصِنِيْنَ

जिन को तुम से पहले किताब मिली जब तुम उन्हें उन के महर दो क़ैद में लाते हुए[25]

غَيْرَ مُسٰفِحِيْنَ وَلَا مُتَّخِذِيْۤ اَخْدَانٍ ؕ وَمَنْ يَّكْفُرْ بِالْاِيْمَانِ فَقَدْ

न मस्ती निकालते और न आशना बनाते[26] और जो मुसल्मान से काफ़िर हो

ع ۵ حَبِطَ عَمَلُهٗ ۫ وَهُوَ فِي الْاٰخِرَةِ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ۝۵ ع يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا

उस का किया धरा सब अकारत (ज़ाएअ़) गया और वोह आख़िरत में ज़ियांकार (नुक़्सान उठाने वाला) है[27] ऐ ईमान वालो

اِذَا قُمْتُمْ اِلَى الصَّلٰوةِ فَاغْسِلُوْا وُجُوْهَكُمْ وَاَيْدِيَكُمْ اِلَى الْمَرَافِقِ

जब नमाज़ को खड़े होना चाहो[28] तो अपने मुंह धोओ और कोहनियों तक हाथ[29]

न खाएं। **22 :** आयत से जो मुस्तफ़ाद (फ़ाएदा ह़ासिल) होता है उस का ख़ुलासा येह है कि जिस शख़्स ने कुत्ता या शिक्रा वग़ैरा कोई शिकारी जानवर शिकार पर छोड़ा तो उस का शिकार चन्द शर्तों से ह़लाल है : (1) शिकारी जानवर मुसल्मान का हो और सिखाया हुवा। (2) उस ने शिकारी को ज़ख़्म लगा कर मारा हो। (3) शिकारी जानवर "بِسْمِ اللّٰهِ اَللّٰهُ اَكْبَر" कह कर छोड़ा गया हो (4) अगर शिकारी के पास शिकार ज़िन्दा पहुंचा हो तो उस को "بِسْمِ اللّٰهِ اَللّٰهُ اَكْبَر" कह कर ज़ब्ह़ करे। अगर इन शर्तों में से कोई शर्त़ न पाई गई तो ह़लाल न होगा। मसलन अगर शिकारी जानवर मुअ़ल्लम (सिखाया हुवा) न हो या उस ने ज़ख़्म न किया हो या शिकार पर छोड़ते वक़्त "بِسْمِ اللّٰهِ اَللّٰهُ اَكْبَر" न पढ़ा हो या शिकार ज़िन्दा पहुंचा हो और उस को ज़ब्ह़ न किया हो या मुअ़ल्लम के साथ ग़ैरे मुअ़ल्लम शिकार में शरीक हो गया हो या ऐसा शिकारी जानवर शरीक हो गया हो जिस को छोड़ते वक़्त "بِسْمِ اللّٰهِ اَللّٰهُ اَكْبَر" न पढ़ा गया हो या वोह शिकारी जानवर मजूसी (आतश परस्त) काफ़िर का हो, इन सब सूरतों में वोह शिकार ह़राम है। **मस्अला :** तीर से शिकार करने का भी येही हुक्म है अगर "بِسْمِ اللّٰهِ اَللّٰهُ اَكْبَر" कह कर तीर मारा और उस से शिकार मजरूह़ (ज़ख़्मी) हो कर मर गया तो ह़लाल है और अगर न मरा तो दोबारा उस को "بِسْمِ اللّٰهِ اَللّٰهُ اَكْبَر" पढ़ कर ज़ब्ह़ करे, अगर उस पर بِسْمِ اللّٰه न पढ़ी या तीर का ज़ख़्म उस को न लगा या ज़िन्दा पाने के बा'द उस को ज़ब्ह़ न किया इन सब सूरतों में ह़राम है। **23 :** या'नी इन के ज़बीह़े। **मस्अला :** मुस्लिम व किताबी का ज़बीह़ा ह़लाल है ख़्वाह वोह मर्द हो या औ़रत या बच्चा। **24 :** निकाह़ करने में औ़रत की पारसाई (पाक दामनी) का लिह़ाज़ मुस्तह़ब है लेकिन सिह़्ह़ते निकाह़ के लिये शर्त़ नहीं। **25 :** निकाह़ कर के **26 :** ना जाइज़ त़रीक़े से मस्ती निकालने से बे धड़क ज़िना करना और आशना बनाने से पोशीदा ज़िना मुराद है। **27 :** क्यूं कि इरतिदाद (दीन से फिर जाने) से तमाम अ़मल अकारत (बरबाद) हो जाते हैं। **28 :** और तुम बे वुज़ू हो तो तुम पर वुज़ू फ़र्ज़ है और फ़राइज़ वुज़ू के येह चार हैं जो आगे बयान किये जाते हैं। **फ़ाएदा :** सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم और आप के अस्ह़ाब हर नमाज़ के लिये ताज़ा वुज़ू के आ़दी थे अगर्चे एक वुज़ू से भी बहुत सी नमाज़ें फ़राइज़ व नवाफ़िल दुरुस्त हैं मगर हर नमाज़ के लिये जुदागाना वुज़ू करना ज़ियादा बरकत व सवाब का मूजिब है, बा'ज़ मुफ़स्सिरीन का क़ौल है कि इब्तिदाए इस्लाम में हर नमाज़ के लिये जुदागाना वुज़ू फ़र्ज़ था बा'द में मन्सूख़ किया गया और जब तक ह़दस (वुज़ू का टूटना) वाक़ेअ़ न हो एक ही वुज़ू से फ़राइज़ व नवाफ़िल सब का अदा करना जाइज़ हुवा। **29 :** कोहनियां भी धोने के हुक्म में दाख़िल हैं जैसा कि ह़दीस से साबित है, जम्हूर इसी पर हैं।

www.dawateislami.net

وَامْسَحُوْا بِرُءُوْسِكُمْ وَاَرْجُلَكُمْ اِلَى الْكَعْبَيْنِ ؕ وَاِنْ كُنْتُمْ جُنُبًا

और सरों का मस्ह करो[30] और गट्टों तक पाउं धोओ[31] और अगर तुम्हें नहाने की ह़ाजत हो

فَاطَّهَّرُوْا ؕ وَاِنْ كُنْتُمْ مَّرْضٰۤى اَوْ عَلٰى سَفَرٍ اَوْ جَآءَ اَحَدٌ مِّنْكُمْ مِّنَ

तो ख़ूब सुथरे हो लो[32] और अगर तुम बीमार हो या सफ़र में हो या तुम में कोई क़ज़ाए ह़ाजत

الْغَآىِٕطِ اَوْ لٰمَسْتُمُ النِّسَآءَ فَلَمْ تَجِدُوْا مَآءً فَتَيَمَّمُوْا صَعِيْدًا طَيِّبًا

से आया या तुम ने औ़रतों से सोहबत की और इन सूरतों में पानी न पाया तो पाक मिट्टी से तयम्मुम करो

فَامْسَحُوْا بِوُجُوْهِكُمْ وَاَيْدِيْكُمْ مِّنْهُ ؕ مَا يُرِيْدُ اللّٰهُ لِيَجْعَلَ عَلَيْكُمْ

तो अपने मुंह और हाथों का इस से मस्ह करो **अल्लाह** नहीं चाहता कि तुम पर कुछ

مِّنْ حَرَجٍ وَّلٰكِنْ يُّرِيْدُ لِيُطَهِّرَكُمْ وَلِيُتِمَّ نِعْمَتَهٗ عَلَيْكُمْ لَعَلَّكُمْ

तंगी रखे हां येह चाहता है कि तुम्हें ख़ूब सुथरा कर दे और अपनी ने'मत तुम पर पूरी कर दे कि कहीं तुम

تَشْكُرُوْنَ ۝٦ وَاذْكُرُوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَمِيْثَاقَهُ الَّذِيْ وَاثَقَكُمْ

एह़सान मानो और याद करो **अल्लाह** का एह़सान अपने ऊपर[33] और वोह अ़ह्द जो उस ने तुम से

بِهٖۤ ۙ اِذْ قُلْتُمْ سَمِعْنَا وَاَطَعْنَا ۫ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ

लिया[34] जब कि तुम ने कहा हम ने सुना और माना[35] और **अल्लाह** से डरो बेशक **अल्लाह** दिलों की

الصُّدُوْرِ ۝٧ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُوْنُوْا قَوّٰمِيْنَ لِلّٰهِ شُهَدَآءَ

बात जानता है ऐ ईमान वालो **अल्लाह** के हुक्म पर ख़ूब क़ाइम हो जाओ इन्साफ़ के साथ

بِالْقِسْطِ ۫ وَلَا يَجْرِمَنَّكُمْ شَنَاٰنُ قَوْمٍ عَلٰۤى اَلَّا تَعْدِلُوْا ؕ اِعْدِلُوْا ۟ هُوَ

गवाही देते[36] और तुम को किसी क़ौम की अ़दावत (दुश्मनी) इस पर न उभारे कि इन्साफ़ न करो इन्साफ़ करो वोह

30 : चौथाई सर का मस्ह़ फ़र्ज़ है येह मिक़्दार ह़दीसे मुग़ीरा से साबित है और येह ह़दीस आयत का बयान है। **31 :** येह वुज़ू का चौथा फ़र्ज़ है। ह़दीसे सह़ीह़ में है सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने कुछ लोगों को पाउं पर मस्ह़ करते देखा तो मन्अ़ फ़रमाया और अ़ता से मरवी है वोह ब क़सम फ़रमाते हैं कि मेरे इ़ल्म में अस्ह़ाबे रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم में से किसी ने भी वुज़ू में पाउं पर मस्ह़ न किया। **32 मस्अला :** जनाबत से त़हारते कामिला लाज़िम होती है। जनाबत कभी बेदारी में दफ़्क़ व शहवत के साथ इन्ज़ाल से होती है और कभी नींद में एह़तिलाम से जिस के बा'द असर पाया जाए ह़त्ता कि अगर ख़्वाब याद आया मगर तरी न पाई तो ग़ुस्ल वाजिब न होगा, और कभी सबीलैन में से किसी में इदख़ाले ह़शफ़ा से। फ़ाइ़ल व मफ़ऊ़ल दोनों के ह़क़ में ख़्वाह इन्ज़ाल हो या न हो। येह तमाम सूरतें जनाबत में दाख़िल हैं इन से ग़ुस्ल वाजिब हो जाता है। **मस्अला :** ह़ैज़ो निफ़ास से भी ग़ुस्ल लाज़िम होता है। ह़ैज़ का मस्अला सूरए बक़रह में गुज़र गया और निफ़ास का मूजिबे ग़ुस्ल होना इज्माअ़ से साबित है। तयम्मुम का बयान सूरए निसाअ में गुज़र चुका। **33 :** कि तुम्हें मुसल्मान किया। **34 :** नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से बैअ़त करते वक़्त शबे उ़क़्बा और बैअ़ते रिज़्वान में **35 :** नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم का हर हुक्म हर ह़ाल में। **36 :** इस त़रह़ कि क़राबत व

www.dawateislami.net

اَقْرَبُ لِلتَّقْوٰى ۫ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ خَبِیْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ۝٨ وَعَدَ

परहेज़ गारी से ज़ियादा क़रीब है और **अल्लाह** से डरो बेशक **अल्लाह** को तुम्हारे कामों की ख़बर है ईमान

اللّٰهُ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ۙ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّاَجْرٌ عَظِیْمٌ ۝٩

वाले नेकोकारों से **अल्लाह** का वा'दा है कि उन के लिये बख़्शिश और बड़ा सवाब है

وَالَّذِیْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِاٰیٰتِنَاۤ اُولٰٓىٕكَ اَصْحٰبُ الْجَحِیْمِ ۝١٠ یٰۤاَیُّهَا

और वोह जिन्हों ने कुफ़्र किया और हमारी आयतें झुटलाईं वोही दोज़ख़ वाले हैं[37] ऐ

الَّذِیْنَ اٰمَنُوا اذْكُرُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ عَلَیْكُمْ اِذْ هَمَّ قَوْمٌ اَنْ یَّبْسُطُوْۤا

ईमान वालो **अल्लाह** का एह़सान अपने ऊपर याद करो जब एक क़ौम ने चाहा कि तुम पर

اِلَیْكُمْ اَیْدِیَهُمْ فَكَفَّ اَیْدِیَهُمْ عَنْكُمْ ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ وَعَلَى اللّٰهِ

दस्त दराज़ी करें तो उस ने उन के हाथ तुम पर से रोक दिये[38] और **अल्लाह** से डरो और मुसलमानों को

ع ٢ فَلْیَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ۝١١ؑ وَلَقَدْ اَخَذَ اللّٰهُ مِیْثَاقَ بَنِیْۤ اِسْرَآءِیْلَ ۚ

अल्लाह ही पर भरोसा चाहिये और बेशक **अल्लाह** ने बनी इसराईल से अ़हद लिया[39]

وَبَعَثْنَا مِنْهُمُ اثْنَیْ عَشَرَ نَقِیْبًا ؕ وَقَالَ اللّٰهُ اِنِّیْ مَعَكُمْ ؕ لَىٕنْ اَقَمْتُمُ

और हम ने उन में बारह सरदार क़ाइम किये[40] और **अल्लाह** ने फ़रमाया बेशक मैं[41] तुम्हारे साथ हूं ज़रूर अगर तुम

الصَّلٰوةَ وَاٰتَیْتُمُ الزَّكٰوةَ وَاٰمَنْتُمْ بِرُسُلِیْ وَعَزَّرْتُمُوْهُمْ وَاَقْرَضْتُمُ

नमाज़ क़ाइम रखो और ज़कात दो और मेरे रसूलों पर ईमान लाओ और उन की ता'ज़ीम करो और **अल्लाह** को

اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا لَّاُكَفِّرَنَّ عَنْكُمْ سَیِّاٰتِكُمْ وَلَاُدْخِلَنَّكُمْ جَنّٰتٍ

क़र्ज़े ह़सन दो[42] तो बेशक मैं तुम्हारे गुनाह उतार दूंगा और ज़रूर तुम्हें बाग़ों में ले जाऊंगा

अ़दावत का कोई असर तुम्हें अ़द्ल से न हटा सके। **37 :** येह आयत नस्से क़ातेअ़ है इस पर कि ख़ुलूदे नार (हमेशा जहन्नम में रहना) सिवाए कुफ़्फ़ार के और किसी के लिये नहीं। (خازن) **38 शाने नुज़ूल :** एक मरतबा नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने एक मन्ज़िल में क़ियाम फ़रमाया, अस्ह़ाब जुदा जुदा दरख़्तों के साए में आराम करने लगे, सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने अपनी तलवार एक दरख़्त में लटका दी, एक आ'राबी मौक़अ़ पा कर आया और छुप कर उस ने तलवार ली और तलवार खींच कर हुज़ूर से कहने लगा : ऐ मुह़म्मद ! तुम्हें मुझ से कौन बचाएगा ? हुज़ूर ने फ़रमाया : "**अल्लाह**"। येह फ़रमाना था ह़ज़रते जिब्रील ने उस के हाथ से तलवार गिरा दी और नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने तलवार ले कर फ़रमाया कि तुझे मुझ से कौन बचाएगा ? कहने लगा कि कोई नहीं। मैं गवाही देता हूं कि **अल्लाह** के सिवा कोई मा'बूद नहीं और गवाही देता हूं कि मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم उस के रसूल हैं। (تفسير ابوالسعود) **39 :** कि **अल्लाह** की इबादत करेंगे, उस के साथ किसी को शरीक न करेंगे, तौरैत के अह़काम का इत्तिबाअ़ करेंगे। **40 :** हर सिब्त़ (गुरोह) पर एक सरदार जो अपनी क़ौम का ज़िम्मेदार हो कि वोह अ़हदे वफ़ा करेंगे और हुक्म पर चलेंगे। **41 :** मदद व नुसरत से **42 :** या'नी उस की राह में ख़र्च करो।

www.dawateislami.net

تَجْرِیْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۚ فَمَنْ كَفَرَ بَعْدَ ذٰلِكَ مِنْكُمْ فَقَدْ ضَلَّ

जिन के नीचे नहरें रवां फिर इस के बा'द जो तुम में से कुफ़्र करे वोह ज़रूर सीधी

سَوَآءَ السَّبِیْلِ ﴿١٢﴾ فَبِمَا نَقْضِهِمْ مِّیْثَاقَهُمْ لَعَنّٰهُمْ وَ جَعَلْنَا قُلُوْبَهُمْ

राह से बहका[43] तो उन की कैसी बद अ़हदियों[44] पर हम ने उन्हें ला'नत की और उन के दिल

قٰسِیَةً ۚ یُحَرِّفُوْنَ الْكَلِمَ عَنْ مَّوَاضِعِهٖ ۙ وَ نَسُوْا حَظًّا مِّمَّا ذُكِّرُوْا

सख़्त कर दिये **अल्लाह** की बातों को[45] उन के ठिकानों से बदलते हैं और भुला बैठे बड़ा हिस्सा उन नसीहतों का जो उन्हें दी

بِهٖ ۚ وَ لَا تَزَالُ تَطَّلِعُ عَلٰى خَآىٕنَةٍ مِّنْهُمْ اِلَّا قَلِیْلًا مِّنْهُمْ فَاعْفُ

गईं[46] और तुम हमेशा उन की एक न एक दग़ा पर मुत्तलअ़ होते रहोगे[47] सिवा थोड़ों के[48] तो उन्हें मुआ़फ़

عَنْهُمْ وَ اصْفَحْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ یُحِبُّ الْمُحْسِنِیْنَ ﴿١٣﴾ وَ مِنَ الَّذِیْنَ قَالُوْۤا اِنَّا

कर दो और उन से दर गुज़रो[49] बेशक एह़सान वाले **अल्लाह** को मह़बूब हैं और वोह जिन्हों ने दा'वा किया कि हम

نَصٰرٰۤى اَخَذْنَا مِیْثَاقَهُمْ فَنَسُوْا حَظًّا مِّمَّا ذُكِّرُوْا بِهٖ ۪ فَاَغْرَیْنَا

नसारा हैं हम ने उन से अ़हद लिया[50] तो वोह भुला बैठे बड़ा हिस्सा उन नसीहतों का जो उन्हें दी गईं[51] तो हम ने

بَیْنَهُمُ الْعَدَاوَةَ وَ الْبَغْضَآءَ اِلٰى یَوْمِ الْقِیٰمَةِ ؕ وَ سَوْفَ یُنَبِّئُهُمُ اللّٰهُ

उन के आपस में क़ियामत के दिन तक बैर (दुश्मनी) और बुग़्ज़ डाल दिया[52] और अ़न्क़रीब **अल्लाह** उन्हें बता देगा

43 : वाक़िआ़ येह था कि **अल्लाह** तआ़ला ने ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से वा'दा फ़रमाया था कि उन्हें और उन की क़ौम को "अर्ज़े मुक़द्दसा" (बैतुल मक़्दिस) का वारिस बनाएगा जिस में कन्आ़नी जब्बार रहते थे तो फ़िरऔ़न के हलाक के बा'द ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को हुक्मे इलाही हुवा कि बनी इसराईल को "अर्ज़े मुक़द्दसा" की त़रफ़ ले जाएं मैं ने उस को तुम्हारे लिये दारो क़रार बनाया है तो वहां जाओ और जो दुश्मन वहां हैं उन पर जिहाद करो, मैं तुम्हारी मदद फ़रमाऊंगा और ऐ मूसा ! तुम अपनी क़ौम के हर हर सिब्त़ (गुरोह) में से एक एक सरदार बनाओ, इस त़रह़ बारह सरदार मुक़र्रर करो हर एक उन में से अपनी क़ौम के हुक्म मानने और अ़हदे वफ़ा करने का ज़िम्मेदार हो, ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام सरदार मुन्तख़ब कर के बनी इस्राईल को ले कर रवाना हुए, जब अरीह़ा (बस्ती) के क़रीब पहुंचे तो उन नक़ीबों को तजस्सुसे अह़वाल (ह़ालात का जाएज़ा लेने) के लिये भेजा, वहां उन्हों ने देखा कि लोग बहुत अ़ज़ीमुल जुस्सा (बड़े बड़े जिस्मों वाले) और निहायत क़वी व तुवाना साह़िबे हैबतो शौकत हैं, येह उन से हैबत ज़दा हो कर वापस हुए और आ कर उन्हों ने अपनी क़ौम से सब ह़ाल बयान किया, बा वुजूदे कि उन को इस से मन्अ़ किया गया था लेकिन सब ने अ़हद शिकनी की सिवाए कालिब बिन यूक़न्ना और यूशअ़ बिन नून के कि येह अ़हद पर क़ाइम रहे। **44 :** कि उन्हों ने अ़हदे इलाही को तोड़ा और ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के बा'द आने वाले अम्बिया की तक्ज़ीब की और अम्बिया को क़त्ल किया, किताब के अह़काम की मुख़ालफ़त की। **45 :** जिन में सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की ना'त व सिफ़त है और जो तौरैत में बयान की गई हैं। **46 :** तौरैत में कि सय्यिदे आ़लम मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم का इत्तिबाअ़ करें और उन पर ईमान लाएं। **47 :** क्यूं कि दग़ा व ख़ियानत व नक़्ज़े अ़हद और रसूलों के साथ बद अ़हदी उन की और उन के आबा की क़दीम आ़दत है। **48 :** जो ईमान लाए। **49 :** और जो कुछ उन से पहले सरज़द हुवा उस पर गिरिफ़्त न करो। **शाने नुज़ूल :** बा'ज़ मुफ़स्सिरीन का क़ौल है कि येह आयत उस क़ौम के ह़क़ में नाज़िल हुई जिन्हों ने पहले नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से अ़हद किया फिर तोड़ा फिर **अल्लाह** तआ़ला ने अपने नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم को इस पर मुत्तलअ़ फ़रमाया और येह आयत नाज़िल की, इस सूरत में मा'ना येह हैं कि उन की इस अ़हद शिकनी से दर गुज़र कीजिये जब तक कि वोह जंग से बाज़ रहें और जिज़्या अदा करने से मन्अ़ न करें। **50 :** **अल्लाह** तआ़ला और उस के रसूलों पर ईमान लाने का। **51 :** इन्जील में और उन्हों ने अ़हद शिकनी की। **52 :** क़तादा ने कहा कि जब नसारा ने किताबे इलाही (इन्जील) पर अ़मल करना

www.dawateislami.net

بِمَا كَانُوْا يَصْنَعُوْنَ ﴿۱۴﴾ يٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ قَدْ جَآءَكُمْ رَسُوْلُنَا يُبَيِّنُ

जो कुछ करते थे[53] ऐ किताब वालो[54] बेशक तुम्हारे पास हमारे येह रसूल[55] तशरीफ़ लाए कि तुम पर ज़ाहिर

لَكُمْ كَثِيْرًا مِّمَّا كُنْتُمْ تُخْفُوْنَ مِنَ الْكِتٰبِ وَ يَعْفُوْا عَنْ كَثِيْرٍ ۬ؕ قَدْ

फ़रमाते हैं बहुत सी वोह चीज़ें जो तुम ने किताब में छुपा डाली थीं[56] और बहुत सी मुआफ़ फ़रमाते हैं[57] बेशक

جَآءَكُمْ مِّنَ اللّٰهِ نُوْرٌ وَّ كِتٰبٌ مُّبِيْنٌ ﴿۱۵﴾ يَّهْدِيْ بِهِ اللّٰهُ مَنِ اتَّبَعَ

तुम्हारे पास अल्लाह की त़रफ़ से एक नूर आया[58] और रोशन किताब[59] अल्लाह इस से हिदायत देता है उसे जो अल्लाह की

رِضْوَانَهٗ سُبُلَ السَّلٰمِ وَ يُخْرِجُهُمْ مِّنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ بِاِذْنِهٖ

मरज़ी पर चला सलामती के रास्ते और उन्हें अंधेरियों से रोशनी की त़रफ़ ले जाता है अपने हुक्म से

وَ يَهْدِيْهِمْ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿۱۶﴾ لَقَدْ كَفَرَ الَّذِيْنَ قَالُوْۤا اِنَّ اللّٰهَ

और उन्हें सीधी राह दिखाता है बेशक काफ़िर हुए वोह जिन्हों ने कहा कि अल्लाह

هُوَ الْمَسِيْحُ ابْنُ مَرْيَمَ ؕ قُلْ فَمَنْ يَّمْلِكُ مِنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا اِنْ اَرَادَ اَنْ

मसीह़ बिन मरयम ही है[60] तुम फ़रमा दो फिर अल्लाह का कोई क्या कर सकता है अगर वोह चाहे कि

يُّهْلِكَ الْمَسِيْحَ ابْنَ مَرْيَمَ وَ اُمَّهٗ وَ مَنْ فِي الْاَرْضِ جَمِيْعًا ؕ وَ لِلّٰهِ

हलाक कर दे मसीह़ बिन मरयम और उस की मां और तमाम ज़मीन वालों को[61] और अल्लाह

مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ وَ مَا بَيْنَهُمَا ؕ يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ ؕ وَ اللّٰهُ

ही के लिये है सल्त़नत आस्मानों और ज़मीन और इन के दरमियान की जो चाहे पैदा करता है और अल्लाह

عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿۱۷﴾ وَ قَالَتِ الْيَهُوْدُ وَ النَّصٰرٰى نَحْنُ اَبْنٰٓؤُا اللّٰهِ

सब कुछ कर सकता है और यहूदी और नसरानी बोले कि हम अल्लाह के बेटे

तर्क किया और रसूलों की ना फ़रमानी की, फ़राइज़ अदा न किये, हुदूद की परवाह न की तो अल्लाह तआ़ला ने उन के दरमियान अ़दावत डाल दी। 53 : या'नी रोज़े क़ियामत वोह अपने किरदार का बदला पाएंगे। 54 : यहूदियो व नसरानियो ! 55 : सय्यिदे आ़लम मुहम्मद मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم 56 : जैसे कि आयते रज्म और सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के औसाफ़ और हुज़ूर का इस को बयान फ़रमाना मो'जिज़ा है। 57 : और उन का ज़िक्र भी नहीं करते न उन पर मुआख़ज़ा फ़रमाते हैं क्यूं कि आप उसी चीज़ का ज़िक्र फ़रमाते हैं जिस में मस्लहत हो। 58 : सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم को नूर फ़रमाया गया क्यूं कि आप से तारीकिये कुफ़्र दूर हुई और राहे ह़क़ वाज़ेह हुई। 59 : या'नी क़ुरआन शरीफ़। 60 : ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि नजरान के नसारा से येह मक़ूला सरज़द हुवा और नसरानियों के फ़िर्क़े या'क़ूबिया व मलकानिया का येह मज़हब है वोह ह़ज़रते मसीह़ को "अल्लाह" बताते हैं क्यूं कि वोह ह़ुलूल के क़ाइल हैं और उन का ए'तिक़ादे बातिल येह है कि अल्लाह तआ़ला ने बदने ईसा में ह़ुलूल किया (समा गया)। مَعَاذَ اللّٰه। "وَتَعَالَى اللّٰهُ عَمَّا يَقُوْلُوْنَ عُلُوًّا كَبِيْرًا" (अल्लाह उन की बातों से बहुत ही बरतरो बुलन्द है)। अल्लाह तआ़ला ने इस आयत में हुक्मे कुफ़्र दिया और इस के बा'द उन के मज़हब का फ़साद बयान फ़रमाया। 61 : इस का जवाब येही है कि कोई कुछ नहीं कर सकता तो फिर ह़ज़रते मसीह़ को अल्लाह बताना कितना सरीह़ बातिल है।

www.dawateislami.net

وَ اَحِبَّآؤُهٗ ؕ قُلْ فَلِمَ يُعَذِّبُكُمْ بِذُنُوْبِكُمْ ؕ بَلْ اَنْتُمْ بَشَرٌ مِّمَّنْ

और उस के प्यारे हैं[62] तुम फ़रमा दो फिर तुम्हें क्यूं तुम्हारे गुनाहों पर अ़ज़ाब फ़रमाता है[63] बल्कि तुम आदमी हो उस की

خَلَقَ ؕ يَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ وَ يُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَ لِلّٰهِ مُلْكُ

मख़्लूक़ात से जिसे चाहे बख़्शता है और जिसे चाहे सज़ा देता है और **अल्लाह** ही के लिये है सल्तनत

السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ وَ مَا بَيْنَهُمَا ٘ وَ اِلَيْهِ الْمَصِيْرُ ﴿۱۸﴾ يٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ

आस्मानों और ज़मीन और इन के दरमियान की और उसी की त़रफ़ फिरना है ऐ किताब वालो

قَدْ جَآءَكُمْ رَسُوْلُنَا يُبَيِّنُ لَكُمْ عَلٰى فَتْرَةٍ مِّنَ الرُّسُلِ اَنْ تَقُوْلُوْا مَا

बेशक तुम्हारे पास हमारे येह रसूल[64] तशरीफ़ लाए कि तुम पर हमारे अह़काम ज़ाहिर फ़रमाते हैं बा'द इस के कि रसूलों का आना मुद्दतों बन्द रहा था[65] कि तुम कहो

جَآءَنَا مِنْۢ بَشِيْرٍ وَّ لَا نَذِيْرٍ ٘ فَقَدْ جَآءَكُمْ بَشِيْرٌ وَّ نَذِيْرٌ ؕ وَ اللّٰهُ عَلٰى

हमारे पास कोई ख़ुशी और डर सुनाने वाला न आया तो येह ख़ुशी और डर सुनाने वाले तुम्हारे पास तशरीफ़ लाए हैं और **अल्लाह** को

كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿۱۹﴾ ع وَ اِذْ قَالَ مُوْسٰى لِقَوْمِهٖ يٰقَوْمِ اذْكُرُوْا نِعْمَةَ

सब कुदरत है और जब मूसा ने कहा अपनी क़ौम से ऐ मेरी क़ौम **अल्लाह** का एह़सान अपने

اللّٰهِ عَلَيْكُمْ اِذْ جَعَلَ فِيْكُمْ اَنْۢبِيَآءَ وَ جَعَلَكُمْ مُّلُوْكًا ۖۗ وَّ اٰتٰىكُمْ مَّا لَمْ

ऊपर याद करो कि तुम में से पैग़म्बर किये[66] और तुम्हें बादशाह किया[67] और तुम्हें वोह दिया जो

يُؤْتِ اَحَدًا مِّنَ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۲۰﴾ يٰقَوْمِ ادْخُلُوا الْاَرْضَ الْمُقَدَّسَةَ

आज सारे जहान में किसी को न दिया[68] ऐ क़ौम उस पाक ज़मीन में दाख़िल हो

62 शाने नुज़ूल : सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के पास अहले किताब आए और उन्हों ने दीन के मुआ़मले में आप से गुफ़्तगू शुरूअ़ की आप ने उन्हें इस्लाम की दा'वत दी और **अल्लाह** की ना फ़रमानी करने से उस के अ़ज़ाब का ख़ौफ़ दिलाया तो वोह कहने लगे कि ऐ मुह़म्मद ! आप हमें क्या डराते हैं हम तो **अल्लाह** के बेटे और उस के प्यारे हैं, इस पर येह आयत नाज़िल हुई और उन के इस दा'वे का बुत़्लान ज़ाहिर फ़रमाया गया। **63 :** या'नी इस बात का तो तुम्हें भी इक़रार है कि गिनती के दिन तुम जहन्नम में रहोगे तो सोचो कोई बाप अपने बेटे को या कोई शख़्स अपने प्यारे को आग में जलाता है ! जब ऐसा नहीं तो तुम्हारे दा'वे का किज़्ब व बुत़्लान तुम्हारे इक़रार से साबित है। **64 :** मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم **65 :** ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के बा'द सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के ज़माने तक पांच सो उन्हत्तर बरस की मुद्दत नबी से ख़ाली रही इस के बा'द हुज़ूर के तशरीफ़ लाने की मिन्नत (एह़सान) का इज़्हार फ़रमाया जाता है कि निहायत ह़ाजत के वक़्त तुम पर **अल्लाह** तआ़ला की अ़ज़ीम ने'मत भेजी गई और इस में इल्ज़ामे हुज्जत (दलील क़ाइम करना) व क़त़ए उ़ज़्र (उ़ज़्र ख़त्म करना) भी है कि अब येह कहने का मौक़अ़ न रहा कि हमारे पास तम्बीह करने वाले तशरीफ़ न लाए। **66 मस्अला :** इस आयत से मा'लूम हुवा कि पैग़म्बरों की तशरीफ़ आवरी ने'मत है और ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने अपनी क़ौम को इस के ज़िक्र का हुक्म दिया कि वोह बरकातो समरात का सबब है, इस से मह़ाफ़िले मीलादे मुबारक के मूजिबे बरकातो समरात और मह़मूदो मुस्तह़सन होने की सनद मिलती है। **67 :** या'नी आज़ाद व साहि़बे ह़शम व ख़िदम (नोकर चाकर वाला) और फ़िरऔ़नियों के हाथों में मुक़य्यद होने के बा'द उन की ग़ुलामी से नजात ह़ासिल कर के ऐशो आराम की ज़िन्दगी पाना बड़ी ने'मत है ह़ज़रते अबू सईद ख़ुदरी رَضِىَ اللّٰهُ عَنْه से मरवी है कि सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि बनी इसराईल में जो कोई ख़ादिम और औ़रत और सुवारी रखता वोह मलिक (बादशाह) कहलाया जाता। **68 :** जैसे कि दरिया में राह बनाना,

www.dawateislami.net

الَّتِیْ كَتَبَ اللّٰهُ لَكُمْ وَ لَا تَرْتَدُّوْا عَلٰۤى اَدْبَارِكُمْ فَتَنْقَلِبُوْا خٰسِرِیْنَ ﴿۲۱﴾

जो अल्लाह ने तुम्हारे लिये लिखी है और पीछे न पलटो[69] कि नुक़्सान पर पलटोगे

قَالُوْا یٰمُوْسٰۤى اِنَّ فِیْهَا قَوْمًا جَبَّارِیْنَ ۖۗ وَ اِنَّا لَنْ نَّدْخُلَهَا حَتّٰى

बोले ऐ मूसा उस में तो बड़े ज़बर दस्त लोग हैं और हम उस में हरगिज़ दाख़िल न होंगे जब तक

یَخْرُجُوْا مِنْهَا ۚ فَاِنْ یَّخْرُجُوْا مِنْهَا فَاِنَّا دٰخِلُوْنَ ﴿۲۲﴾ قَالَ رَجُلٰنِ

वोह वहां से निकल न जाएं हां वोह वहां से निकल जाएं तो हम वहां जाएंगे दो मर्द

مِنَ الَّذِیْنَ یَخَافُوْنَ اَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَیْهِمَا ادْخُلُوْا عَلَیْهِمُ الْبَابَ ۚ فَاِذَا

कि अल्लाह से डरने वालों में से थे[70] अल्लाह ने उन्हें नवाज़ा[71] बोले कि ज़बर दस्ती दरवाज़े में[72] उन पर दाख़िल हो अगर

دَخَلْتُمُوْهُ فَاِنَّكُمْ غٰلِبُوْنَ ۚ۬ وَ عَلَى اللّٰهِ فَتَوَكَّلُوْۤا اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِیْنَ ﴿۲۳﴾

तुम दरवाज़े में दाख़िल हो गए तो तुम्हारा ही ग़लबा है[73] और अल्लाह ही पर भरोसा करो अगर तुम्हें ईमान है

قَالُوْا یٰمُوْسٰۤى اِنَّا لَنْ نَّدْخُلَهَاۤ اَبَدًا مَّا دَامُوْا فِیْهَا فَاذْهَبْ اَنْتَ وَ

बोले[74] ऐ मूसा हम तो वहां[75] कभी न जाएंगे जब तक वोह वहां हैं तो आप जाइये और

رَبُّكَ فَقَاتِلَاۤ اِنَّا هٰهُنَا قٰعِدُوْنَ ﴿۲۴﴾ قَالَ رَبِّ اِنِّیْ لَاۤ اَمْلِكُ اِلَّا

आप का रब तुम दोनों लड़ो हम यहां बैठे हैं मूसा ने अ़र्ज़ की, कि ऐ रब मेरे मुझे इख़्तियार नहीं मगर

نَفْسِیْ وَ اَخِیْ فَافْرُقْ بَیْنَنَا وَ بَیْنَ الْقَوْمِ الْفٰسِقِیْنَ ﴿۲۵﴾ قَالَ فَاِنَّهَا

अपना और अपने भाई का तो तू हम को इन बे हुक्मों से जुदा रख[76] फ़रमाया तो वोह

दुश्मन को ग़र्क़ करना, मन्न और सल्वा उतारना, पथ्थर से चश्मे जारी करना, अब्र को साएबान बनाना वग़ैरा। 69 : हज़रते मूसा عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने अपनी क़ौम को अल्लाह की ने'मतें याद दिलाने के बा'द उन को अपने दुश्मनों पर जिहाद के लिये निकलने का हुक्म दिया और फ़रमाया कि ऐ क़ौम अर्ज़े मुक़द्दसा में दाख़िल हो जाओ। उस ज़मीन को मुक़द्दस इस लिये कहा गया कि वोह अम्बिया की मस्कन थी। **मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि अम्बिया की सुकूनत से ज़मीनों को भी शरफ़ हासिल होता है और दूसरों के लिये वोह बाइसे बरकत होता है। कल्बी से मन्क़ूल है कि हज़रते इब्राहीम عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام कोहे लुबनान पर चढ़े तो आप से कहा गया देखिये जहां तक आप की नज़र पहुंचे वोह जगह मुक़द्दस है और आप की ज़ुर्रिय्यत की मीरास है, येह सर ज़मीन तूर और उस के गिर्दो पेश की थी और एक क़ौल येह है कि तमाम मुल्के शाम 70 : कालिब बिन यूक़न्ना और यूशअ़ बिन नून जो उन नुक़बा (सरदारों) में से थे जिन्हें हज़रते मूसा عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने जबाबिरा का हाल दरयाफ़्त करने के लिये भेजा था। 71 : हिदायत और वफ़ाए अ़हद के साथ उन्हों ने जबाबिरा का हाल सिर्फ़ हज़रते मूसा عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से अ़र्ज़ किया और इस का इफ़्शा (किसी और के सामने इज़्हार) न किया ब ख़िलाफ़ दूसरे नुक़बा के कि उन्हों ने इफ़्शा किया था। 72 : शहर के। 73 : क्यूं कि अल्लाह तआ़ला ने मदद का वा'दा किया है और उस का वा'दा ज़रूर पूरा होना है। तुम जब्बारीन के बड़े बड़े जिस्मों से अन्देशा न करो, हम ने उन्हें देखा है उन के जिस्म बड़े हैं और दिल कमज़ोर हैं। इन दोनों ने जब येह कहा तो बनी इसराईल बहुत बरहम हुए और उन्हों ने चाहा कि इन पर संगबारी करें। 74 : बनी इसराईल 75 : जब्बारीन के शहर में 76 : और हमें इन की सोहबत और

www.dawateislami.net

مُحَرَّمَةٌ عَلَيْهِمْ اَرْبَعِيْنَ سَنَةً ۚ يَتِيْهُوْنَ فِي الْاَرْضِ ؕ فَلَا تَاْسَ

ज़मीन इन पर हराम है[77] चालीस बरस तक भटकते फिरें ज़मीन में[78] तो तुम इन

عَلَى الْقَوْمِ الْفٰسِقِيْنَ ﴿۲۶﴾ ع وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَاَ ابْنَيْ اٰدَمَ بِالْحَقِّ ۘ اِذْ وقف لازم

बे हुक्मों का अफ़्सोस न खाओ और इन्हें पढ़ कर सुनाओ आदम के दो बेटों की सच्ची ख़बर[79] जब

قَرَّبَا قُرْبَانًا فَتُقُبِّلَ مِنْ اَحَدِهِمَا وَلَمْ يُتَقَبَّلْ مِنَ الْاٰخَرِ ؕ قَالَ

दोनों ने एक एक नियाज़ (क़ुरबानी) पेश की तो एक की क़बूल हुई और दूसरे की न क़बूल हुई बोला

لَاَقْتُلَنَّكَ ؕ قَالَ اِنَّمَا يَتَقَبَّلُ اللّٰهُ مِنَ الْمُتَّقِيْنَ ﴿۲۷﴾ لَئِنْ بَسَطْتَّ النصف

क़सम है मैं तुझे क़त्ल कर दूंगा[80] कहा **अल्लाह** उसी से क़बूल करता है जिसे डर है[81] बेशक अगर तू अपना हाथ

क़ुर्ब से बचा। या येह मा'ना कि हमारे इन के दरमियान फ़ैसला फ़रमा। **77 :** उस में न दाख़िल हो सकेंगे **78 :** वोह ज़मीन जिस में येह लोग भटक्ते फिरे नव फ़रसंग थी और क़ौम छ[6] लाख जंगी जो अपने सामान लिये तमाम दिन चलते थे, जब शाम होती तो अपने को वहीं पाते जहां से चले थे येह उन पर उक़ूबत (सज़ा) थी सिवाए हज़रते मूसा व हारून व यूशअ़ व कालिब के कि इन पर **अल्लाह** तआ़ला ने आसानी फ़रमाई और इन की इआ़नत की जैसा कि हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के लिये आग को सर्द और सलामती बनाया और इतनी बड़ी जमाअ़ते अ़ज़ीमा का इतने छोटे हिस्सए ज़मीन में चालीस बरस आवारा व हैरान फिरना और किसी का वहां से निकल न सकना ख़वारिक़े आदात (ख़िलाफ़े आ़दात) में से है। जब बनी इसराईल ने इस जंगल में हज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से खाने पीने वग़ैरा ज़रूरिय्यात और तकालीफ़ की शिकायत की तो **अल्लाह** तआ़ला ने हज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की दुआ़ से उन को आस्मानी ग़िज़ा "मन्न व सल्वा" अ़ता फ़रमाया और लिबास ख़ुद उन के बदन पर पैदा किया जो जिस्म के साथ बढ़ता था और एक सफ़ेद पथ्थर कोहे तूर का इनायत किया कि जब रख़्ते सफ़र (सफ़र का सामान) उतारते और किसी वक़्त ठहरते तो हज़रत उस पथ्थर पर अ़सा मारते उस से बनी इसराईल के बारह अस्बात़ (गुरौहों) के लिये बारह चश्मे जारी हो जाते और साया करने के लिये एक अब्र भेजा और "तीह" (मैदान) में जितने लोग दाख़िल हुए थे उन में से जो बीस साल से ज़ियादा उम्र के थे सब वहीं मर गए सिवाए यूशअ़ बिन नून और कालिब बिन यूक़न्ना के, और जिन लोगों ने अर्ज़े मुक़द्दसा में दाख़िल होने से इन्कार किया उन में से कोई भी दाख़िल न हो सका। और कहा गया है कि तीह में ही हज़रते हारून और हज़रते मूसा عَلَيْهِمَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की वफ़ात हुई। हज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की वफ़ात से चालीस बरस बा'द हज़रते यूशअ़ को नुबुव्वत अ़ता की गई और जब्बारीन पर जिहाद का हुक्म दिया गया। आप बाक़ी मांदा बनी इसराईल को साथ ले कर गए और जब्बारीन पर जिहाद किया। **79 :** जिन का नाम हाबील और क़ाबील था, इस ख़बर को सुनाने से मक़्सद येह है कि हसद की बुराई मा'लूम हो और सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से हसद करने वालों को इस से सबक़ हासिल करने का मौक़अ़ मिले। उ़लमाए सियर व अख़्बार का बयान है कि हज़रते हव्वा के हम्ल में एक लड़का, एक लड़की पैदा होते थे और एक हम्ल के लड़के का दूसरे हम्ल की लड़की के साथ निकाह़ किया जाता था और जब कि आदमी सिर्फ़ हज़रते आदम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की औलाद में मुन्ह़सिर थे तो मुनाकहत (निकाह़) की और कोई सबील ही न थी इसी दस्तूर के मुताबिक़ हज़रते आदम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने क़ाबील का निकाह़ "लियूज़ा" से जो हाबील के साथ पैदा हुई थी और हाबील का "इक़्लीमा" से जो क़ाबील के साथ पैदा हुई थी करना चाहा, क़ाबील इस पर राज़ी न हुवा और चूंकि इक़्लीमा ज़ियादा ख़ूब सूरत थी इस लिये उस का त़लब गार हुवा। हज़रते आदम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया कि वोह तेरे साथ पैदा हुई लिहाज़ा तेरी बहन है उस के साथ तेरा निकाह़ ह़लाल नहीं। कहने लगा : येह तो आप की राय है, **अल्लाह** तआ़ला ने येह हुक्म नहीं दिया। आप ने फ़रमाया : तो तुम दोनों क़ुरबानियां लाओ जिस की क़ुरबानी मक़्बूल हो जाए वोही इक़्लीमा का ह़क़दार है। उस ज़माने में जो क़ुरबानी मक़्बूल होती थी आस्मान से एक आग उतर कर उस को खा लिया करती थी। क़ाबील ने एक अम्बार गन्दुम और हाबील ने एक बकरी क़ुरबानी के लिये पेश की, आस्मानी आग ने हाबील की क़ुरबानी को ले लिया और क़ाबील के गेहूं छोड़ गई। इस पर क़ाबील के दिल में बहुत बुग़्ज़ो हसद पैदा हुवा। **80 :** जब हज़रते आदम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام हज के लिये मक्कए मुकर्रमा तशरीफ़ ले गए तो क़ाबील ने हाबील से कहा कि मैं तुझ को क़त्ल करूंगा। हाबील ने कहा : क्यूं ? कहने लगा : इस लिये कि तेरी क़ुरबानी मक़्बूल हुई मेरी न हुई और तू इक़्लीमा का मुस्तहिक़ ठहरा, इस में मेरी ज़िल्लत है। **81 :** हाबील के इस मक़ूले का येह मत़लब है कि क़ुरबानी का क़बूल करना **अल्लाह** का काम है वोह मुत्तक़ियों की क़ुरबानी क़बूल फ़रमाता है, तू मुत्तक़ी होता तो तेरी क़ुरबानी क़बूल होती, येह ख़ुद तेरे अफ़्आ़ल का नतीजा है, इस में मेरा क्या दख़्ल है।

www.dawateislami.net

اِلَیَّ یَدَكَ لِتَقْتُلَنِیْ مَاۤ اَنَا بِبَاسِطٍ یَّدِیَ اِلَیْكَ لِاَقْتُلَكَ ۚ اِنِّیْۤ اَخَافُ

मुझ पर बढ़ाएगा कि मुझे क़त्ल करे तो मैं अपना हाथ तुझ पर न बढ़ाऊंगा कि तुझे क़त्ल करूं[82] मैं **अल्लाह** से डरता हूं

اللّٰهَ رَبَّ الْعٰلَمِیْنَ ﴿۲۸﴾ اِنِّیْۤ اُرِیْدُ اَنْ تَبُوْٓاَ بِاِثْمِیْ وَ اِثْمِكَ فَتَكُوْنَ

जो मालिक सारे जहान का मैं तो येह चाहता हूं कि मेरा[83] और तेरा गुनाह[84] दोनों तेरे ही पल्ले पड़े

مِنْ اَصْحٰبِ النَّارِ ۚ وَ ذٰلِكَ جَزٰٓؤُا الظّٰلِمِیْنَ ﴿۲۹﴾ۚ فَطَوَّعَتْ لَهٗ نَفْسُهٗ

तो तू दोज़ख़ी हो जाए और बे इन्साफ़ों की येही सज़ा है तो उस के नफ़्स ने उसे भाई के

قَتْلَ اَخِیْهِ فَقَتَلَهٗ فَاَصْبَحَ مِنَ الْخٰسِرِیْنَ ﴿۳۰﴾ فَبَعَثَ اللّٰهُ غُرَابًا

क़त्ल का चाव दिलाया (क़त्ल पर उभारा) तो उसे क़त्ल कर दिया तो रह गया नुक़्सान में[85] तो **अल्लाह** ने एक कव्वा भेजा

یَّبْحَثُ فِی الْاَرْضِ لِیُرِیَهٗ كَیْفَ یُوَارِیْ سَوْءَةَ اَخِیْهِ ؕ قَالَ یٰوَیْلَتٰۤى

ज़मीन कुरेदता कि उसे दिखाए क्यूंकर (किस त़रह) अपने भाई की लाश छुपाए[86] बोला हाए ख़राबी

اَعَجَزْتُ اَنْ اَكُوْنَ مِثْلَ هٰذَا الْغُرَابِ فَاُوَارِیَ سَوْءَةَ اَخِیْ ۚ

मैं इस कव्वे जैसा भी न हो सका कि मैं अपने भाई की लाश छुपाता

فَاَصْبَحَ مِنَ النّٰدِمِیْنَ ﴿۳۱﴾ۚۛ مِنْ اَجْلِ ذٰلِكَ ۚۛ كَتَبْنَا عَلٰى بَنِیْۤ اِسْرَآءِیْلَ

معانقه وقف النبی صلی اللہ علیہ وسلم

तो पचताता रह गया[87] इस सबब से हम ने बनी इसराईल पर लिख दिया

اَنَّهٗ مَنْ قَتَلَ نَفْسًۢا بِغَیْرِ نَفْسٍ اَوْ فَسَادٍ فِی الْاَرْضِ فَكَاَنَّمَا قَتَلَ

कि जिस ने कोई जान क़त्ल की बिग़ैर जान के बदले या ज़मीन में फ़साद के[88] तो गोया उस ने सब

النَّاسَ جَمِیْعًا ؕ وَ مَنْ اَحْیَاهَا فَكَاَنَّمَاۤ اَحْیَا النَّاسَ جَمِیْعًا ؕ وَ لَقَدْ

लोगों को क़त्ल किया[89] और जिस ने एक जान को जिला लिया[90] उस ने गोया सब लोगों को जिला लिया और बेशक

82 : और मेरी त़रफ़ से इब्तिदा हो बा वुजूदे कि मैं तुझ से क़वी व तुवाना हूं, येह सिर्फ़ इस लिये कि **83 :** या'नी मुझ को क़त्ल करने का। **84 :** जो इस से पहले तूने किया कि वालिद की ना फ़रमानी की, ह़सद किया और ख़ुदाई फ़ैसले को न माना। **85 :** और मुतह़य्यर (हैरानो परेशान) हुवा कि इस लाश को क्या करे ? क्यूं कि उस वक़्त तक कोई इन्सान मरा ही न था, मुद्दत तक लाश को पुश्त पर लादे फिरा **86 :** मरवी है कि दो कव्वे आपस में लड़े, उन में से एक ने दूसरे को मार डाला, फिर ज़िन्दा कव्वे ने अपनी मिन्क़ार (चोंच) और पन्जों से ज़मीन कुरेद कर गढ़ा किया उस में मरे हुए कव्वे को डाल कर मिट्टी से दबा दिया, येह देख कर क़ाबील को मा'लूम हुवा कि मुर्दे की लाश को दफ़्न करना चाहिये, चुनान्चे उस ने ज़मीन खोद कर दफ़्न कर दिया। (جلالین، مدارک وغیرہ) **87 :** अपनी नादानी व परेशानी पर, और येह नदामत गुनाह पर न थी कि तौबा में शुमार हो सकती या नदामत का तौबा होना सय्यिदे अम्बिया صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ही की उम्मत के साथ ख़ास हो (مدارک) **88 :** या'नी ख़ूने नाह़क़ किया कि न तो मक़्तूल को किसी ख़ून के बदले क़िसास के त़ौर पर मारा न शिर्क व कुफ़्र या क़त्ए त़रीक़ (रहज़नी) वग़ैरा किसी मूजिबे क़त्ल फ़साद की वज्ह से मारा। **89 :** क्यूं कि उस ने ह़क़्क़ुल्लाह की रिआयत और हुदूदे शरीअ़त का पास न किया। **90 :** इस त़रह़ कि क़त्ल

www.dawateislami.net

جَآءَتْهُمْ رُسُلُنَا بِالْبَيِّنٰتِ ثُمَّ اِنَّ كَثِيْرًا مِّنْهُمْ بَعْدَ ذٰلِكَ فِي

उन के[91] पास हमारे रसूल रोशन दलीलों के साथ आए[92] फिर बेशक उन में बहुत इस के बा'द

الْاَرْضِ لَمُسْرِفُوْنَ ﴿۳۲﴾ اِنَّمَا جَزٰٓؤُا الَّذِيْنَ يُحَارِبُوْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ

ज़मीन में ज़ियादती करने वाले हैं[93] वोह कि **अल्लाह** और उस के रसूल से लड़ते[94]

وَيَسْعَوْنَ فِي الْاَرْضِ فَسَادًا اَنْ يُّقَتَّلُوْٓا اَوْ يُصَلَّبُوْٓا اَوْ تُقَطَّعَ

और मुल्क में फ़साद करते फिरते हैं उन का बदला येही है कि गिन गिन कर क़त्ल किये जाएं या सूली दिये जाएं या उन के

اَيْدِيْهِمْ وَاَرْجُلُهُمْ مِّنْ خِلَافٍ اَوْ يُنْفَوْا مِنَ الْاَرْضِ ؕ ذٰلِكَ لَهُمْ

एक तरफ़ के हाथ और दूसरी तरफ़ के पाउं काटे जाएं या ज़मीन से दूर कर दिये जाएं येह दुन्या में

خِزْيٌ فِي الدُّنْيَا وَلَهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿۳۳﴾ اِلَّا الَّذِيْنَ تَابُوْا

उन की रुस्वाई है और आख़िरत में उन के लिये बड़ा अ़ज़ाब मगर वोह जिन्हों ने तौबा कर ली

مِنْ قَبْلِ اَنْ تَقْدِرُوْا عَلَيْهِمْ ۚ فَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۳۴﴾ ع

इस से पहले कि तुम उन पर क़ाबू पाओ[95] तो जान लो कि **अल्लाह** बख़्शने वाला मेहरबान है

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَابْتَغُوْٓا اِلَيْهِ الْوَسِيْلَةَ وَجَاهِدُوْا

ऐ ईमान वालो **अल्लाह** से डरो और उस की तरफ़ वसीला ढूंडो[96] और उस की राह में

فِيْ سَبِيْلِهٖ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿۳۵﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوْ اَنَّ لَهُمْ مَّا فِي

जिहाद करो इस उम्मीद पर कि फ़लाह़ पाओ बेशक वोह जो काफ़िर हुए जो कुछ

الْاَرْضِ جَمِيْعًا وَّمِثْلَهٗ مَعَهٗ لِيَفْتَدُوْا بِهٖ مِنْ عَذَابِ يَوْمِ الْقِيٰمَةِ

ज़मीन में है सब और इस की बराबर और अगर उन की मिल्क हो कि इसे दे कर क़ियामत के अ़ज़ाब से अपनी जान

होने या डूबने या जलने वग़ैरा अस्बाबे हलाकत से बचाया। **91 :** या'नी बनी इसराईल के **92 :** मो'जिज़ाते बाहिरात भी लाए और अह़कामो शराएअ़ भी। **93 :** कि कुफ़्र व क़त्ल वग़ैरा का इरतिकाब कर के हुदूद से तजावुज़ करते हैं। **94 :** **अल्लाह** तआ़ला से लड़ना येही है कि उस के औलिया से अ़दावत करे जैसा कि ह़दीस शरीफ़ में वारिद हुवा। इस आयत में कुत्ताए़ तरीक़ या'नी राहज़नों की सज़ा का बयान है। **शाने नुज़ूल :** 6 सि.हि. में उ़रैना के चन्द लोग मदीनए तृय्यिबा में आ कर इस्लाम लाए और बीमार हो गए, उन के रंग ज़र्द हो गए, पेट बढ़ गए, हुज़ूर ने हुक्म दिया कि सदक़े के ऊंटों का दूध और पेशाब मिला कर पिया करें, ऐसा करने से वोह तन्दुरुस्त हो गए मगर तन्दुरुस्त हो कर वोह मुरतद हो गए और पन्द्रह ऊंट ले कर वोह अपने वत़न को चलते हो गए। सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने उन की त़लब में ह़ज़रते यसार को भेजा। उन लोगों ने इन के हाथ पाउं काटे और ईज़ाएं देते देते शहीद कर डाला, फिर जब येह लोग हुज़ूर की ख़िदमत में गिरिफ़्तार कर के ह़ाज़िर किये गए तो उन के ह़क़ में येह आयत नाज़िल हुई। (تفسیر احمدی) **95 :** या'नी गिरिफ़्तारी से क़ब्ल तौबा कर लेने से वोह अ़ज़ाबे आख़िरत और क़त़्ए़ त़रीक़ (रहज़नी) की ह़द से तो बच जाएंगे मगर माल की वापसी और क़िसास ह़क़्क़ुल इबाद है येह बाक़ी रहेगा। (احمدی) **96 :** जिस

www.dawateislami.net

مَا تُقُبِّلَ مِنْهُمْ ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿۳۶﴾ يُرِيْدُوْنَ اَنْ يَّخْرُجُوْا مِنَ

छुड़ाएं तो उन से न लिया जाएगा और उन के लिये दुख का अ़ज़ाब है[97] दोज़ख़ से निकलना चाहेंगे

النَّارِ وَمَا هُمْ بِخٰرِجِيْنَ مِنْهَا ۫ وَلَهُمْ عَذَابٌ مُّقِيْمٌ ﴿۳۷﴾ وَالسَّارِقُ

और वोह उस से न निकलेंगे और उन को दवामी (हमेशा हमेशा की) सज़ा है और जो मर्द

وَالسَّارِقَةُ فَاقْطَعُوْۤا اَيْدِيَهُمَا جَزَآءًۢ بِمَا كَسَبَا نَكَالًا مِّنَ اللّٰهِ ؕ وَ

या औ़रत चोर हो[98] तो उन का हाथ काटो[99] उन के किये का बदला **अल्लाह** की त़रफ़ से सज़ा और

اللّٰهُ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿۳۸﴾ فَمَنْ تَابَ مِنْۢ بَعْدِ ظُلْمِهٖ وَاَصْلَحَ فَاِنَّ اللّٰهَ

अल्लाह ग़ालिब ह़िक्मत वाला है तो जो अपने ज़ुल्म के बा'द तौबा करे और संवर जाए तो **अल्लाह** अपनी मेहर

يَتُوْبُ عَلَيْهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۳۹﴾ اَلَمْ تَعْلَمْ اَنَّ اللّٰهَ لَهٗ

से उस पर रुजूअ़ फ़रमाएगा[100] बेशक **अल्लाह** बख़्शने वाला मेहरबान है क्या तुझे मा'लूम नहीं कि **अल्लाह** के लिये है

مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ يُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ وَيَغْفِرُ لِمَنْ

आस्मानों और ज़मीन की बादशाही सज़ा देता है जिसे चाहे और बख़्शता है जिसे

يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ قَدِيْرٌ ﴿۴۰﴾ يٰۤاَيُّهَا الرَّسُوْلُ لَا يَحْزُنْكَ

चाहे और **अल्लाह** सब कुछ कर सकता है[101] ऐ रसूल तुम्हें ग़मगीन न करें

الَّذِيْنَ يُسَارِعُوْنَ فِي الْكُفْرِ مِنَ الَّذِيْنَ قَالُوْۤا اٰمَنَّا بِاَفْوَاهِهِمْ وَلَمْ

वोह जो कुफ़्र पर दौड़ते हैं[102] कुछ वोह जो अपने मुंह से कहते हैं हम ईमान लाए और

تُؤْمِنْ قُلُوْبُهُمْ ۛۚ وَمِنَ الَّذِيْنَ هَادُوْا ۛۚ سَمّٰعُوْنَ لِلْكَذِبِ سَمّٰعُوْنَ

उन के दिल मुसल्मान नहीं[103] और कुछ यहूदी झूट ख़ूब सुनते हैं[104] और लोगों

ع ٢ الوقف على الاول اجوز ١٢

की बदौलत तुम्हें उस का क़ुर्ब ह़ासिल हो। **97 :** या'नी कुफ़्फ़ार के लिये अ़ज़ाब लाज़िम है और इस से रिहाई पाने की कोई सबील नहीं। **98 :** और उस की चोरी दो मरतबा के इक़्रार या दो मर्दों की शहादत से ह़ाकिम के सामने साबित हो और जो माल चुराया है वोह दस दिरहम से कम का न हो (كمافی حدیث ابن مسعود) **99 :** या'नी दाह्ना, इस लिये कि ह़ज़रत इब्ने मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ की क़िराअत में ''اَیْمَانَهُمَا'' आया है। **मस्अला :** पहली मरतबा की चोरी में दाह्ना हाथ काटा जाएगा फिर दोबारा अगर करे तो बायां पाउं इस के बा'द भी अगर चोरी करे तो क़ैद किया जाए यहां तक कि तौबा करे। **मस्अला :** चोर का हाथ काटना तो वाजिब है और ''माले मसरूक़'' (चोरी शुदा माल) मौजूद हो तो उस का वापस करना भी वाजिब और अगर वोह ज़ाएअ़ हो गया हो तो ज़मान (तावान) वाजिब नहीं। (تفسیر احمدی) **100 :** और अ़ज़ाबे आख़िरत से उस को नजात देगा। **101 मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि अ़ज़ाब करना और रह़मत फ़रमाना **अल्लाह** तआ़ला की मशिय्यत पर है वोह मालिक है जो चाहे करे किसी को मजाले ए'तिराज़ नहीं। इस से क़दरिय्या व मो'तज़िला का इब्त़ाल हो गया जो मुत़ीअ़ पर रह़मत और आ़सी पर अ़ज़ाब करना **अल्लाह** तआ़ला पर वाजिब कहते हैं। **102 : अल्लाह** तआ़ला सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم को ''یٰۤاَیُّهَا الرَّسُوْلُ'' के

www.dawateislami.net

لِقَوْمٍ اٰخَرِيْنَ ۙ لَمْ يَاْتُوْكَ ؕ يُحَرِّفُوْنَ الْكَلِمَ مِنْۢ بَعْدِ مَوَاضِعِهٖ ۚ

की ख़ूब सुनते हैं[105] जो तुम्हारे पास हाज़िर न हुए अल्लाह की बातों को उन के ठिकानों के बा'द बदल देते हैं

يَقُوْلُوْنَ اِنْ اُوْتِيْتُمْ هٰذَا فَخُذُوْهُ وَ اِنْ لَّمْ تُؤْتَوْهُ فَاحْذَرُوْا ؕ

कहते हैं येह हुक्म तुम्हें मिले तो मानो और येह न मिले तो बचो[106]

وَ مَنْ يُّرِدِ اللّٰهُ فِتْنَتَهٗ فَلَنْ تَمْلِكَ لَهٗ مِنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا ؕ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ

और जिसे अल्लाह गुमराह करना चाहे तो हरगिज़ तू अल्लाह से उस का कुछ बना न सकेगा वोह हैं कि

ख़िताबे इज़्ज़त के साथ मुख़ातब फ़रमा कर तस्कीने ख़ातिर फ़रमाता है कि ऐ हबीब ! मैं आप का नासिर व मुईन हूं, मुनाफ़िक़ीन के कुफ़्र में जल्दी करने या'नी उन के इज़्हारे कुफ़्र और कुफ़्फ़ार के साथ दोस्ती व मुवालात कर लेने से आप रन्जीदा न हों। **103 :** येह उन के निफ़ाक़ का बयान है। **104 :** अपने सरदारों से और उन के इफ़्तिराओं को क़बूल करते हैं। **105 :** ماشآءالله हज़रते मुतर्जिम قُدِّسَ سِرُّهٗ ने बहुत सहीह तरजमा फ़रमाया इस मक़ाम पर बा'ज़ मुतर्जिमीन व मुफ़स्सिरीन से लग़्ज़िश वाक़ेअ़ हुई कि उन्हों ने "لِقَوْمٍ" के "لام" को इल्लत क़रार दे कर आयत के मा'ना येह बयान किये कि मुनाफ़िक़ीन व यहूद अपने सरदारों की झूटी बातें सुनते हैं, आप की बातें दूसरी क़ौम की ख़ातिर से कान धर कर सुनते हैं जिस के वोह जासूस हैं। मगर येह मा'ना सहीह नहीं और नज़्मे क़ुरआनी इस से बिल्कुल मुवाफ़क़त नहीं फ़रमाती बल्कि यहां "لام" "مِــنْ" के मा'ना में है और मुराद येह है कि येह लोग अपने सरदारों की झूटी बातें ख़ूब सुनते हैं और लोगों या'नी यहूदे ख़ैबर की बातों को ख़ूब मानते हैं जिन के अहवाल का आयत शरीफ़ में बयान आ रहा है (تفسیر ابو السعود و جمل) **106 शाने नुज़ूल :** यहूदे ख़ैबर के शुरफ़ा में से एक बियाहे (शादी शुदा) मर्द और बियाही औरत ने ज़िना किया, इस की सज़ा तौरैत में संगसार करना थी, येह उन्हें गवारा न था इस लिये उन्हों ने चाहा कि इस मुक़द्दमे का फ़ैसला हुज़ूर सय्यिदे आलम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से कराएं, चुनान्चे उन दोनों (मुजरिमों) को एक जमाअ़त के साथ मदीनए तृय्यिबा भेजा और कह दिया कि अगर हुज़ूर "हद" का हुक्म दें तो मान लेना और संगसार करने का हुक्म दें तो मत मानना। वोह लोग यहूदे बनी क़ुरैज़ा व बनी नज़ीर के पास आए और ख़याल किया कि येह हुज़ूर के हम वतन हैं और इन के साथ आप की सुल्ह भी है इन की सिफ़ारिश से काम बन जाएगा, चुनान्चे सरदाराने यहूद में से का'ब बिन अशरफ़ व का'ब बिन असद व सईद बिन अम्र व मालिक बिन सैफ़ व किनाना बिन अबिल हुक़ैक़ वग़ैरा उन्हें ले कर हुज़ूर की ख़िदमत में हाज़िर हुए और मस्अला दरयाफ़्त किया। हुज़ूर ने फ़रमाया : मेरा फ़ैसला मानोगे ? उन्हों ने इक़रार किया, आयते रज्म नाज़िल हुई और संगसार करने का हुक्म दिया गया, यहूद ने इस हुक्म को मानने से इन्कार किया। हुज़ूर ने फ़रमाया कि तुम में एक नौ जवान गोरा यकचश्म (एक आंख वाला) फ़िदक का बाशिन्दा "इब्ने सूरिया" नामी है तुम उस को जानते हो ? कहने लगे : हां। फ़रमाया : वोह कैसा आदमी है ? कहने लगे कि आज रूए ज़मीन पर यहूद में उस के पाए का आ़लिम नहीं, तौरैत का यक्ता माहिर है। फ़रमाया : उस को बुलाओ, चुनान्चे बुलाया गया जब वोह हाज़िर हुवा तो हुज़ूर ने फ़रमाया : तू इब्ने सूरिया है ? उस ने अ़र्ज़ किया : जी हां। फ़रमाया : यहूद में सब से बड़ा आ़लिम तू ही है ? अ़र्ज़ किया : लोग तो ऐसा ही कहते हैं। हुज़ूर ने यहूद से फ़रमाया : इस मुआ़मले में इस की बात मानोगे ? सब ने इक़रार किया। तब हुज़ूर ने इब्ने सूरिया से फ़रमाया : मैं तुझे उस अल्लाह की क़सम देता हूं जिस के सिवा कोई मा'बूद नहीं, जिस ने हज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पर तौरैत नाज़िल फ़रमाई और तुम लोगों को मिस्र से निकाला, तुम्हारे लिये दरिया में राहें बनाईं, तुम्हें नजात दी, फ़िरऔ़नियों को ग़र्क़ किया, तुम्हारे लिये अब्र को साएबान बनाया, मन्न व सल्वा नाज़िल फ़रमाया, अपनी किताब नाज़िल फ़रमाई जिस में हलाल व हराम का बयान है, क्या तुम्हारी किताब में बियाहे मर्द व औ़रत के लिये संगसार करने का हुक्म है ? इब्ने सूरिया ने अ़र्ज़ किया : बेशक है उसी की क़सम जिस का आप ने मुझ से ज़िक्र किया, अ़ज़ाब नाज़िल होने का अन्देशा न होता तो मैं इक़रार न करता और झूट बोल देता मगर येह फ़रमाइये कि आप की किताब में इस का क्या हुक्म है ? फ़रमाया : जब चार आदिल व मो'तबर शाहिदों की गवाही से ज़िना ब सराहत साबित हो जाए तो संगसार करना वाजिब हो जाता है। इब्ने सूरिया ने अ़र्ज़ किया : बख़ुदा बिऐनिही ऐसा ही तौरैत में है, फिर हुज़ूर ने इब्ने सूरिया से दरयाफ़्त फ़रमाया कि हुक्मे इलाही में तब्दीली किस तरह वाक़ेअ़ हुई ? उस ने अ़र्ज़ किया कि हमारा दस्तूर येह था कि हम किसी शरीफ़ को पकड़ते तो छोड़ देते और ग़रीब आदमी पर हद क़ाइम करते, इस तर्ज़े अ़मल से शुरफ़ा में ज़िना की बहुत कसरत हो गई यहां तक कि एक मरतबा बादशाह के चचाज़ाद भाई ने ज़िना किया तो हम ने उस को संगसार न किया फिर एक दूसरे शख़्स ने अपनी क़ौम की औ़रत से ज़िना किया तो बादशाह ने उस को संगसार करना चाहा, उस की क़ौम उठ खड़ी हुई और उन्हों ने कहा कि जब तक बादशाह के भाई को संगसार न किया जाए उस वक़्त तक इस को हरगिज़ संगसार न किया जाएगा, तब हम ने जम्अ़ हो कर ग़रीब शरीफ़ सब के लिये बजाए संगसार करने के येह सज़ा निकाली कि चालीस कोड़े मारे जाएं और मुंह काला कर के गधे पर उलटा बिठा कर गश्त कराई जाए। येह सुन कर यहूद बहुत बिगड़े और इब्ने सूरिया से कहने लगे : तूने हज़रत को बड़ी जल्दी ख़बर दे दी और हम

www.dawateislami.net

لَمْ يُرِدِ اللّٰهُ اَنْ يُّطَهِّرَ قُلُوْبَهُمْ ؕ لَهُمْ فِی الدُّنْیَا خِزْیٌ ۚۖ وَّ لَهُمْ فِی

अल्लाह ने उन का दिल पाक करना न चाहा उन्हें दुन्या में रुस्वाई है और उन्हें

الْاٰخِرَةِ عَذَابٌ عَظِیْمٌ ﴿۴۱﴾ سَمّٰعُوْنَ لِلْكَذِبِ اَكّٰلُوْنَ لِلسُّحْتِ ؕ فَاِنْ

आख़िरत में बड़ा अज़ाब बड़े झूट सुनने वाले बड़े हराम ख़ोर[107] तो अगर

جَآءُوْكَ فَاحْكُمْ بَیْنَهُمْ اَوْ اَعْرِضْ عَنْهُمْ ۚ وَ اِنْ تُعْرِضْ عَنْهُمْ فَلَنْ

तुम्हारे हुज़ूर हाज़िर हों[108] तो उन में फ़ैसला फ़रमाओ या उन से मुंह फेर लो[109] और अगर तुम उन से मुंह फेर लोगे तो

یَّضُرُّوْكَ شَیْــٴًـا ؕ وَ اِنْ حَكَمْتَ فَاحْكُمْ بَیْنَهُمْ بِالْقِسْطِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ

वोह तुम्हारा कुछ न बिगाड़ेंगे[110] और अगर उन में फ़ैसला फ़रमाओ तो इन्साफ़ से फ़ैसला करो बेशक इन्साफ़

یُحِبُّ الْمُقْسِطِیْنَ ﴿۴۲﴾ وَ كَیْفَ یُحَكِّمُوْنَكَ وَ عِنْدَهُمُ التَّوْرٰىةُ فِیْهَا

वाले **अल्लाह** को पसन्द हैं और वोह तुम से क्यूंकर चाहेंगे हालां कि उन के पास तौरैत है जिस में

حُكْمُ اللّٰهِ ثُمَّ یَتَوَلَّوْنَ مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ ؕ وَ مَاۤ اُولٰٓىٕكَ بِالْمُؤْمِنِیْنَ ﴿۴۳﴾ ع

अल्लाह का हुक्म मौजूद है[111] ब ईं हमा (इस के बा वुजूद) उसी से मुंह फेरते हैं[112] और वोह ईमान लाने वाले नहीं

اِنَّاۤ اَنْزَلْنَا التَّوْرٰىةَ فِیْهَا هُدًى وَّ نُوْرٌ ۚ یَحْكُمُ بِهَا النَّبِیُّوْنَ الَّذِیْنَ

बेशक हम ने तौरैत उतारी उस में हिदायत और नूर है उस के मुताबिक़ यहूद को हुक्म देते थे

اَسْلَمُوْا لِلَّذِیْنَ هَادُوْا وَ الرَّبّٰنِیُّوْنَ وَ الْاَحْبَارُ بِمَا اسْتُحْفِظُوْا مِنْ

हमारे फ़रमां बरदार नबी और आ़लिम और फ़क़ीह कि इन से किताबुल्लाह की हिफ़ाज़त

كِتٰبِ اللّٰهِ وَ كَانُوْا عَلَیْهِ شُهَدَآءَ ۚ فَلَا تَخْشَوُا النَّاسَ وَ اخْشَوْنِ وَ لَا

चाही गई थी[113] और वोह इस पर गवाह थे तो[114] लोगों से ख़ौफ़ न करो और मुझ से डरो और

ने जितनी तेरी ता'रीफ़ की थी तू उस का मुस्तहिक़ नहीं। इब्ने सूरिया ने कहा कि हुज़ूर ने मुझे तौरैत की क़सम दिलाई अगर मुझे अ़ज़ाब के नाज़िल होने का अन्देशा न होता तो मैं आप को ख़बर न देता। इस के बा'द हुज़ूर के हुक्म से उन दोनों ज़िनाकारों को संगसार किया गया और येह आयते करीमा नाज़िल हुई। (خازن) **107 :** येह यहूद के हुक्काम की शान में है जो रिश्वतें ले कर हराम को हलाल करते और अहकामे शरअ़ को बदल देते थे। **मस्अला :** रिश्वत का लेना देना दोनों हराम हैं। हदीस शरीफ़ में रिश्वत लेने देने वाले दोनों पर ला'नत आई है। **108 :** या'नी अहले किताब **109 :** सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم को मुख़य्यर फ़रमाया गया कि अहले किताब आप के पास कोई मुक़द्दमा लाएं तो आप को इख़्तियार है फ़ैसला फ़रमाएं या न फ़रमाएं। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन का क़ौल है कि येह तख़्यीर आयह "وَاَنِ احْكُمْ بَيْنَهُمْ" से मन्सूख़ हो गई। इमाम अहमद ने फ़रमाया कि इन आयतों में कुछ मुनाफ़ात (एक आयत दूसरी के ख़िलाफ़) नहीं क्यूं कि येह आयत मुफ़ीदे तख़्यीर है और आयत "وَاَنِ احْكُمْ... الخ" में कैफ़िय्यते हुक्म का बयान है। (خازن ومدارک وغیرہ) **110 :** क्यूं कि **अल्लाह** तआ़ला आप का निगहबान है। **111 :** कि बियाहे मर्द और शोहर दार औ़रत के ज़िना की सज़ा रज्म या'नी संगसार करना है। **112 :** बा वुजूदे कि तौरैत पर ईमान लाने के मुद्दई भी

www.dawateislami.net

تَشْتَرُوْا بِاٰیٰتِیْ ثَمَنًا قَلِیْلًا ؕ وَ مَنْ لَّمْ یَحْكُمْ بِمَاۤ اَنْزَلَ اللّٰهُ فَاُولٰٓىٕكَ

मेरी आयतों के बदले ज़लील क़ीमत न लो[115] और जो अल्लाह के उतारे पर हुक्म न करे[116] वोही लोग

هُمُ الْكٰفِرُوْنَ ﴿۴۴﴾ وَ كَتَبْنَا عَلَیْهِمْ فِیْهَاۤ اَنَّ النَّفْسَ بِالنَّفْسِ ۙ وَ الْعَیْنَ

काफ़िर हैं और हम ने तौरैत में उन पर वाजिब किया[117] कि जान के बदले जान[118] और आंख

بِالْعَیْنِ وَ الْاَنْفَ بِالْاَنْفِ وَ الْاُذُنَ بِالْاُذُنِ وَ السِّنَّ بِالسِّنِّ ۙ

के बदले आंख और नाक के बदले नाक और कान के बदले कान और दांत के बदले दांत

وَ الْجُرُوْحَ قِصَاصٌ ؕ فَمَنْ تَصَدَّقَ بِهٖ فَهُوَ كَفَّارَةٌ لَّهٗ ؕ وَ مَنْ لَّمْ

और ज़ख़्मों में बदला है[119] फिर जो दिल की ख़ुशी से बदला करावे तो वोह उस का गुनाह उतार देगा[120] और जो

یَحْكُمْ بِمَاۤ اَنْزَلَ اللّٰهُ فَاُولٰٓىٕكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿۴۵﴾ وَ قَفَّیْنَا عَلٰۤى اٰثَارِهِمْ

अल्लाह के उतारे पर हुक्म न करे तो वोही लोग ज़ालिम हैं और हम उन नबियों के पीछे उन के निशाने क़दम

بِعِیْسَى ابْنِ مَرْیَمَ مُصَدِّقًا لِّمَا بَیْنَ یَدَیْهِ مِنَ التَّوْرٰىةِ ۪ وَ اٰتَیْنٰهُ

पर ईसा बिन मरयम को लाए तस्दीक़ करता हुवा तौरैत की जो इस से पहले थी[121] और हम ने उसे

الْاِنْجِیْلَ فِیْهِ هُدًى وَّ نُوْرٌ ۙ وَّ مُصَدِّقًا لِّمَا بَیْنَ یَدَیْهِ مِنَ التَّوْرٰىةِ

इन्जील अ़ता की जिस में हिदायत और नूर है और तस्दीक़ फ़रमाती है तौरैत की, कि इस से पहली थी

हैं और उन्हें येह भी मा'लूम है कि तौरैत में रज्म का हुक्म है, उस को न मानना और आप की नुबुव्वत के मुन्किर होते हुए आप से फ़ैसला चाहना निहायत तअ़ज्जुब की बात है। **113 :** कि उस को अपने सीनों में महफ़ूज़ रखें और उस के दर्स में मश्गूल रहें ताकि वोह किताब फ़रामोश न हो और उस के अह़काम ज़ाएअ़ न हों। (خازن) **मस्अला :** तौरैत के मुताबिक़ अम्बिया का हुक्म देना जो इस आयत में मज़्कूर है इस से साबित होता है कि हम से पहली शरीअ़तों के जो अह़काम अल्लाह और रसूल ने बयान फ़रमाए हों और उन के हमें तर्क का हुक्म न दिया हो, मन्सूख़ न किये गए हों वोह हम पर लाज़िम होते हैं। (جمل وابوالسعود) **114 :** ऐ यहूदियो ! तुम सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की ना'त व सिफ़त और रज्म का हुक्म जो तौरैत में मज़्कूर है उस के इज़्हार में **115 :** या'नी अह़कामे इलाहिय्यह की तब्दील बहर सूरत मम्नूअ़ है ख़्वाह लोगों के ख़ौफ़ और उन की नाराज़ी के अन्देशे से हो या माल व जाह व रिश्वत की त़मअ़ से। **116 :** उस का मुन्किर हो कर (كَمَا قَالَهُ ابْنُ عَبَّاس رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا) **117 :** इस आयत में अगर्चे येह बयान है कि तौरैत में यहूद पर क़िसास के येह अह़काम थे लेकिन चूंकि हमें इन के तर्क का हुक्म नहीं दिया गया इस लिये हम पर येह अह़काम लाज़िम रहेंगे, क्यूं कि शराइए साबिक़ा के जो अह़काम ख़ुदा और रसूल के बयान से हम तक पहुंचे और मन्सूख़ न हुए हों वोह हम पर लाज़िम हुवा करते हैं जैसा कि ऊपर की आयत से साबित हुवा। **118 :** या'नी अगर किसी ने किसी को क़त्ल किया तो उस की जान मक़्तूल के बदले में माख़ूज़ होगी ख़्वाह वोह मक़्तूल मर्द हो या औ़रत, आज़ाद हो या ग़ुलाम, मुस्लिम हो या ज़िम्मी। **शाने नुज़ूल :** हज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا से मरवी है कि मर्द को औ़रत के बदले क़त्ल न करते थे इस पर येह आयत नाज़िल हुई। (مدارک) **119 :** या'नी मुमासलत व मुसावात की रिआ़यत ज़रूरी है। **120 :** या'नी जो क़ातिल या जिनायत करने वाला अपने जुर्म पर नादिम हो कर वबाले मा'सियत से बचने के लिये बख़ुशी अपने ऊपर हुक्मे शरई जारी कराए तो क़िसास उस के जुर्म का कफ़्फ़ारा हो जाएगा और आख़िरत में उस पर अ़ज़ाब न होगा। (جلالین وجمل) बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने इस के मा'ना येह बयान किये हैं कि जो साहिबे ह़क़ क़िसास को मुआ़फ़ कर दे तो येह मुआ़फ़ी उस के लिये कफ़्फ़ारा है। (مدارک) तफ़्सीरे अह़मदी में है येह तमाम क़िसास जब ही वाजिब होंगे जब कि साहिबे ह़क़ मुआ़फ़ न करे और अगर वोह मुआ़फ़ कर दे तो क़िसास साक़ित़। **121 :** अह़कामे तौरैत के बयान के बा'द अह़कामे इन्जील का ज़िक्र शुरूअ़ हुवा और

www.dawateislami.net

وَهُدًى وَّمَوْعِظَةً لِّلْمُتَّقِيْنَ ۝٤٦ وَلْيَحْكُمْ اَهْلُ الْاِنْجِيْلِ بِمَآ اَنْزَلَ

और हिदायत[122] और नसीहत परहेज़ गारों को और चाहिये कि इन्जील वाले हुक्म करें उस पर जो अल्लाह ने

اللّٰهُ فِيْهِ ؕ وَمَنْ لَّمْ يَحْكُمْ بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ۝٤٧

उस में उतारा[123] और जो अल्लाह के उतारे पर हुक्म न करें तो वोही लोग फ़ासिक़ हैं

وَاَنْزَلْنَآ اِلَيْكَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ الْكِتٰبِ

और ऐ महबूब हम ने तुम्हारी तरफ़ सच्ची किताब उतारी अगली किताबों की तस्दीक़ फ़रमाती[124]

وَمُهَيْمِنًا عَلَيْهِ فَاحْكُمْ بَيْنَهُمْ بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ وَلَا تَتَّبِعْ اَهْوَآءَهُمْ

और उन पर मुहाफ़िज़ व गवाह तो उन में फ़ैसला करो अल्लाह के उतारे से[125] और ऐ सुनने वाले उन की ख़्वाहिशों की पैरवी न करना

عَمَّا جَآءَكَ مِنَ الْحَقِّ ؕ لِكُلٍّ جَعَلْنَا مِنْكُمْ شِرْعَةً وَّمِنْهَاجًا ؕ وَلَوْ

अपने पास आया हुवा हक़ छोड़ कर हम ने तुम सब के लिये एक एक शरीअ़त और रास्ता रखा[126] और

شَآءَ اللّٰهُ لَجَعَلَكُمْ اُمَّةً وَّاحِدَةً وَّلٰكِنْ لِّيَبْلُوَكُمْ فِيْ مَآ اٰتٰىكُمْ فَاسْتَبِقُوا

अल्लाह चाहता तो तुम सब को एक ही उम्मत कर देता मगर मन्ज़ूर येह है कि जो कुछ तुम्हें दिया उस में तुम्हें आज़्माए[127] तो भलाइयों

الْخَيْرٰتِ ؕ اِلَى اللّٰهِ مَرْجِعُكُمْ جَمِيْعًا فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ فِيْهِ

की तरफ़ सब्क़त चाहो तुम सब का फिरना अल्लाह ही की तरफ़ है तो वोह तुम्हें बता देगा जिस बात में तुम

تَخْتَلِفُوْنَ ۝٤٨ وَاَنِ احْكُمْ بَيْنَهُمْ بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ وَلَا تَتَّبِعْ اَهْوَآءَهُمْ

झगड़ते थे और येह कि ऐ मुसल्मान अल्लाह के उतारे पर हुक्म कर और उन की ख़्वाहिशों पर न चल

बताया गया कि हज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام तौरैत के मुसद्दिक़ थे कि वोह मुनज़्ज़ल मिनल्लाह (अल्लाह की उतारी हुई किताब) है और नस्ख़ से पहले उस पर अ़मल वाजिब था। हज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की शरीअ़त में इस के बा'ज़ अहकाम मन्सूख़ हुए। **122 :** इस आयत में इन्जील के लिये लफ़्ज़े "هُدًى" दो जगह इर्शाद हुवा, पहली जगह ज़लालत व जहालत से बचाने के लिये रहनुमाई मुराद है, दूसरी जगह هُدًى से सय्यिदे अम्बिया हबीबे किब्रिया صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की तशरीफ़ आवरी की बिशारत मुराद है जो हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की नुबुव्वत की तरफ़ लोगों की राहयाबी का सबब है। **123 :** या'नी सय्यिदे अम्बिया صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم पर ईमान लाने और आप की नुबुव्वत की तस्दीक़ करने का हुक्म। **124 :** जो इस से क़ब्ल हज़राते अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام पर नाज़िल हुईं। **125 :** या'नी जब अहले किताब अपने मुक़द्दमात में आप की तरफ़ रुजूअ़ करें तो आप क़ुरआने पाक से फ़ैसला फ़रमाएं। **126 :** या'नी फ़ुरूअ़ व आ'माल हर एक के ख़ास हैं और अस्ल दीन सब का एक। हज़रत अ़लिय्ये मुर्तज़ा رَضِيَ اللّٰهُ عَنْه ने फ़रमाया कि ईमान हज़रते आदम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के ज़माने से येही है कि "لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ" की शहादत और जो अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से आया उस का इक़रार करना और शरीअ़त व तरीक़ हर उम्मत का ख़ास है। **127 :** और इम्तिहान में डाले ताकि ज़ाहिर हो जाए कि हर ज़माने के मुनासिब जो अहकाम दिये क्या तुम उन पर इस यक़ीन व ए'तिक़ाद के साथ अ़मल करते हो कि इन का इख़्तिलाफ़ मशिय्यते इलाहिय्यह के इक़्तिज़ा से हिक्मते बालिग़ा और दुन्यवी व उख़्रवी मसालेहे नाफ़ेआ़ पर मब्नी है, या हक़ को छोड़ कर हवाए नफ़्स का इत्तिबाअ़ करते हो। (تفسیر ابو السعود)

وَاحْذَرْهُمْ اَنْ يَّفْتِنُوْكَ عَنْۢ بَعْضِ مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ اِلَيْكَ ؕ فَاِنْ

और उन से बचता रह कि कहीं तुझे लग़्ज़िश न दे दें किसी हुक्म में जो तेरी त़रफ़ उतरा फिर अगर वोह

تَوَلَّوْا فَاعْلَمْ اَنَّمَا يُرِيْدُ اللّٰهُ اَنْ يُّصِيْبَهُمْ بِبَعْضِ ذُنُوْبِهِمْ ؕ وَاِنَّ

मुंह फेरें[128] तो जान लो कि **अल्लाह** उन के बा'ज़ गुनाहों की[129] सज़ा उन को पहुंचाया चाहता है[130] और बेशक

كَثِيْرًا مِّنَ النَّاسِ لَفٰسِقُوْنَ ﴿۴۹﴾ اَفَحُكْمَ الْجَاهِلِيَّةِ يَبْغُوْنَ ؕ وَمَنْ

बहुत आदमी बे हुक्म हैं तो क्या जाहिलिय्यत का हुक्म चाहते हैं[131] और

اَحْسَنُ مِنَ اللّٰهِ حُكْمًا لِّقَوْمٍ يُّوْقِنُوْنَ ﴿۵۰﴾ ع يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

अल्लाह से बेहतर किस का हुक्म यक़ीन वालों के लिये ऐ ईमान वालो

لَا تَتَّخِذُوا الْيَهُوْدَ وَالنَّصٰرٰۤى اَوْلِيَآءَ ۘ بَعْضُهُمْ اَوْلِيَآءُ بَعْضٍ ؕ

وقف لازم وقف منزل عند البعض وقف غفران

यहूदो नसारा को दोस्त न बनाओ[132] वोह आपस में एक दूसरे के दोस्त हैं[133]

وَمَنْ يَّتَوَلَّهُمْ مِّنْكُمْ فَاِنَّهٗ مِنْهُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ

और तुम में जो कोई उन से दोस्ती रखेगा तो वोह उन्हीं में से है[134] बेशक **अल्लाह** बे इन्साफ़ों को राह

---

128 : **अल्लाह** के नाज़िल फ़रमाए हुए हुक्म से 129 : जिन में येह ए'राज़ भी है। 130 : दुन्या में क़त्ल व गिरिफ़्तारी व जला वत़नी के साथ और तमाम गुनाहों की सज़ा आख़िरत में देगा। 131 : जो सरासर गुमराही और ज़ुल्म और मुख़ालिफ़े अह़कामे इलाही होता था। **शाने नुज़ूल :** बनी नज़ीर और बनी क़ुरैज़ा यहूद के दो क़बीले थे, इन में बाहम एक दूसरे का क़त्ल होता रहता था, जब सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم मदीनए त़य्यिबा में रौनक़ अफ़रोज़ हुए तो येह लोग अपना मुक़द्दमा हुज़ूर की ख़िदमत में लाए और बनी क़ुरैज़ा ने कहा कि बनी नज़ीर हमारे भाई हैं, हम (और) वोह एक जद की औलाद हैं, एक दीन रखते हैं एक किताब (तौरैत) मानते हैं लेकिन अगर बनी नज़ीर हम में से किसी को क़त्ल करें तो उस के ख़ून बहा में हम (को) सत्तर वस्क़ खजूरें देते हैं और अगर हम में से कोई उन के किसी आदमी को क़त्ल करे तो हम से उस के ख़ून बहा में एक सो चालीस वस्क़ लेते हैं, आप इस का फ़ैसला फ़रमा दें। हुज़ूर ने फ़रमाया मैं हुक्म देता हूं कि क़ुरैज़ी और नज़ीरी का ख़ून बराबर है, किसी को दूसरे पर फ़ज़ीलत नहीं। इस पर बनी नज़ीर बहुत बरहम हुए और कहने लगे हम आप के फ़ैसले से राज़ी नहीं, आप हमारे दुश्मन हैं, हमें ज़लील करना चाहते हैं, इस पर येह आयत नाज़िल हुई और फ़रमाया गया कि क्या जाहिलिय्यत की गुमराही व ज़ुल्म का हुक्म चाहते हैं। 132 **मस्अला :** इस आयत में यहूदो नसारा के साथ दोस्ती व मुवालात या'नी इन की मदद करना इन से मदद चाहना इन के साथ मह़ब्बत के रवाबित़ रखना मम्नूअ़ फ़रमाया गया, येह हुक्म आ़म है अगर्चे आयत का नुज़ूल किसी ख़ास वाक़िए में हुवा हो। **शाने नुज़ूल :** येह आयत ह़ज़रते उ़बादा बिन सामित सह़ाबी और अ़ब्दुल्लाह बिन उबय बिन सलूल के ह़क़ में नाज़िल हुई जो मुनाफ़िक़ीन का सरदार था, ह़ज़रते उ़बादा رَضِىَ اللّٰهُ عَنْه ने फ़रमाया कि यहूद में मेरे बहुत कसीरुत्ता'दाद (बहुत ज़ियादा) दोस्त हैं जो बड़ी शौकत व क़ुव्वत वाले हैं, अब मैं उन की दोस्ती से बेज़ार हूं और **अल्लाह** व रसूल के सिवा मेरे दिल में और किसी की मह़ब्बत की गुन्जाइश नहीं। इस पर अ़ब्दुल्लाह बिन उबय ने कहा कि मैं तो यहूद की दोस्ती से बेज़ारी नहीं कर सकता मुझे पेश आने वाले ह़वादिस का अन्देशा है और मुझे उन के साथ रस्मो राह रखनी ज़रूर है। हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने उस से फ़रमाया कि यहूद की दोस्ती का दम भरना तेरा ही काम है, उ़बादा का येह काम नहीं, इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई। (خازن) 133 : इस से मा'लूम हुवा कि काफ़िर कोई भी हों उन में बाहम कितने ही इख़्तिलाफ़ हों मुसल्मानों के मुक़ाबले में वोह सब एक हैं "اَلْكُفْرُ مِلَّةٌ وَّاحِدَةٌ" (مدارک) 134 : इस में बहुत शिद्दत व ताकीद है कि मुसल्मानों पर यहूदो नसारा और हर मुख़ालिफ़े दीने इस्लाम से अ़लाह़िदगी और जुदा रहना वाजिब है। (مدارک وخازن)

www.dawateislami.net

الظّٰلِمِيْنَ ﴿٥١﴾ فَتَرَى الَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ يُّسَارِعُوْنَ فِيْهِمْ

नहीं देता[135] अब तुम उन्हें देखोगे जिन के दिलों में आज़ार (बीमारी) है[136] कि यहूदो नसारा की त़रफ़ दौड़ते हैं

يَقُوْلُوْنَ نَخْشٰۤى اَنْ تُصِيْبَنَا دَآئِرَةٌ ؕ فَعَسَى اللّٰهُ اَنْ يَّاْتِيَ بِالْفَتْحِ

कहते हैं हम डरते हैं कि हम पर कोई गर्दिश आ जाए[137] तो नज़्दीक है कि अल्लाह फ़त्ह़ लाए[138]

اَوْ اَمْرٍ مِّنْ عِنْدِهٖ فَيُصْبِحُوْا عَلٰى مَاۤ اَسَرُّوْا فِيْۤ اَنْفُسِهِمْ نٰدِمِيْنَ ﴿٥٢﴾

या अपनी त़रफ़ से कोई हुक्म[139] फिर उस पर जो अपने दिलों में छुपाया था[140] पचताते रह जाएं

وَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اَهٰۤؤُلَآءِ الَّذِيْنَ اَقْسَمُوْا بِاللّٰهِ جَهْدَ اَيْمَانِهِمْ ۙ

और[141] ईमान वाले कहते हैं क्या येही हैं जिन्हों ने अल्लाह की क़सम खाई थी अपने ह़ल्फ़ (अ़ह्द) में पूरी कोशिश से

اِنَّهُمْ لَمَعَكُمْ ؕ حَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ فَاَصْبَحُوْا خٰسِرِيْنَ ﴿٥٣﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ

कि वोह तुम्हारे साथ हैं उन का किया धरा सब अकारत (ज़ाएअ़) गया तो रह गए नुक़्सान में[142] ऐ ईमान

اٰمَنُوْا مَنْ يَّرْتَدَّ مِنْكُمْ عَنْ دِيْنِهٖ فَسَوْفَ يَاْتِي اللّٰهُ بِقَوْمٍ يُّحِبُّهُمْ

वालो तुम में जो कोई अपने दीन से फिरेगा[143] तो अ़न्क़रीब अल्लाह ऐसे लोग लाएगा कि वोह अल्लाह के प्यारे

وَيُحِبُّوْنَهٗۤ ۙ اَذِلَّةٍ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ اَعِزَّةٍ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ٘ يُجَاهِدُوْنَ

और अल्लाह उन का प्यारा मुसल्मानों पर नर्म और काफ़िरों पर सख़्त अल्लाह की राह

فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَلَا يَخَافُوْنَ لَوْمَةَ لَآئِمٍ ؕ ذٰلِكَ فَضْلُ اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ

में लड़ेंगे और किसी मलामत करने वाले की मलामत का अन्देशा न करेंगे[144] येह अल्लाह का फ़ज़्ल है

135 : जो काफ़िरों से दोस्ती कर के अपनी जानों पर ज़ुल्म करते हैं। ह़ज़रते अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ का कातिब नसरानी था, ह़ज़रत अमीरुल मुअमिनीन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ ने उन से फ़रमाया कि नसरानी से क्या वासित़ा? तुम ने येह आयत नहीं सुनी "يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوا الْيَهُوْدَ... الآيه" उन्हों ने अ़र्ज़ किया : उस का दीन उस के साथ मुझे तो उस की किताबत से ग़रज़ है। अमीरुल मुअमिनीन ने फ़रमाया कि अल्लाह ने उन्हें ज़लील किया तुम उन्हें इ़ज़्ज़त न दो, अल्लाह ने उन्हें दूर किया तुम उन्हें क़रीब न करो, ह़ज़रते अबू मूसा ने अ़र्ज़ किया कि बिग़ैर उस के हुकूमते बसरा का काम चलाना दुश्वार है, या'नी इस ज़रूरत से ब मजबूरी उस को रखा है कि इस क़ाबिलिय्यत का दूसरा आदमी मुसल्मानों में नहीं मिलता, इस पर ह़ज़रते अमीरुल मुअमिनीन ने फ़रमाया : नसरानी मर गया ! वस्सलाम या'नी फ़र्ज़ करो कि वोह मर गया उस वक़्त जो इन्तिज़ाम करोगे वोही अब करो और उस से हरगिज़ काम न लो येह आख़िरी बात है। (خازن) 136 : या'नी निफ़ाक़। 137 : जैसा कि अ़ब्दुल्लाह बिन उबय मुनाफ़िक़ ने कहा। 138 : और अपने रसूल मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم को मुज़फ़्फ़रो मन्सूर करे और इन के दीन को तमाम अद्यान पर ग़ालिब करे और मुसल्मानों को इन के दुश्मन यहूदो नसारा वग़ैरा कुफ़्फ़ार पर ग़लबा दे, चुनान्चे येह ख़बर सादिक़ हुई और बि करमिही तआ़ला मक्कए मुकर्रमा और यहूद के बिलाद फ़त्ह़ हुए। (خازن وغیرہ) 139 : जैसे कि सर ज़मीने हिजाज़ को यहूद से पाक करना और वहां उन का नामो निशान बाक़ी न रखना या मुनाफ़िक़ीन के राज़ इफ़्शा कर के उन्हें रुस्वा करना। (خازن و جلالین) 140 : या'नी निफ़ाक़, या मुनाफ़िक़ीन का येह ख़याल कि सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم कुफ़्फ़ार के मुक़ाबले में काम्याब न होंगे। 141 : मुनाफ़िक़ीन का पर्दा खुलने पर 142 : कि दुन्या में ज़लीलो रुस्वा हुए और आख़िरत में अ़ज़ाबे दाइमी के सज़ावार। 143 : कुफ़्फ़ार के साथ दोस्ती व मुवालात

www.dawateislami.net

مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ﴿۵۴﴾ اِنَّمَا وَلِيُّكُمُ اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ وَ

जिसे चाहे दे और **अल्लाह** वुस्अ़त वाला इ़ल्म वाला है   तुम्हारे दोस्त नहीं मगर **अल्लाह** और उस का रसूल और

الَّذِيْنَ اٰمَنُوا الَّذِيْنَ يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَيُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَهُمْ

ईमान वाले[145] कि नमाज़ क़ाइम करते हैं और ज़कात देते हैं और **अल्लाह** के हुज़ूर

رٰكِعُوْنَ ﴿۵۵﴾ وَمَنْ يَّتَوَلَّ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا فَاِنَّ حِزْبَ

झुके हुए हैं[146]   और जो **अल्लाह** और उस के रसूल और मुसल्मानों को अपना दोस्त बनाए तो बेशक **अल्लाह**

اللّٰهِ هُمُ الْغٰلِبُوْنَ ﴿۵۶﴾ ع يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوا الَّذِيْنَ

ही का गुरौह ग़ालिब है   ऐ ईमान वालो जिन्हों ने तुम्हारे दीन को

اتَّخَذُوْا دِيْنَكُمْ هُزُوًا وَّلَعِبًا مِّنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَ

हंसी खेल बना लिया है[147] वोह जो तुम से पहले किताब दिये गए और काफ़िर[148] उन में किसी को

الْكُفَّارَ اَوْلِيَآءَ ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿۵۷﴾ وَاِذَا نَادَيْتُمْ

अपना दोस्त न बनाओ   और **अल्लाह** से डरते रहो अगर ईमान रखते हो[149]   और जब तुम नमाज़ के

बे दीनी व इरतिदाद की मुस्तदई (त़लब) है। इस की मुमानअ़त के बा'द मुरतद्दीन का ज़िक्र फ़रमाया और मुरतद होने से क़ब्ल लोगों के मुरतद होने की ख़बर दी। चुनान्चे येह ख़बर सादिक़ हुई और बहुत लोग मुरतद हुए। **144 :** येह सिफ़त जिन की है वोह कौन हैं ? इस में कई क़ौल हैं : हज़रत अ़लिय्ये मुर्तज़ा व हसन व क़तादा ने कहा कि येह लोग हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ और उन के अस्ह़ाब हैं जिन्हों ने नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के बा'द मुरतद होने और ज़कात से मुन्किर होने वालों पर जिहाद किया। इयाज़ बिन ग़नम अश्अ़री से मरवी है कि जब येह आयत नाज़िल हुई सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने हज़रते अबू मूसा अश्अ़री की निस्बत फ़रमाया कि येह इन की क़ौम है। एक क़ौल येह है कि येह लोग अहले यमन हैं जिन की ता'रीफ़ बुख़ारी व मुस्लिम की ह़दीसों में आई है। सुद्दी का क़ौल है कि येह लोग अन्सार हैं जिन्हों ने रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की ख़िदमत की और इन अक़्वाल में कुछ मुनाफ़ात (इख़्तिलाफ़) नहीं क्यूं कि इन सब ह़ज़रात का इन सिफ़ात के साथ मुत्तसिफ़ होना सह़ीह़ है। **145 :** जिन के साथ मुवालात ह़राम है उन का ज़िक्र फ़रमाने के बा'द उन का बयान फ़रमाया जिन के साथ मुवालात वाजिब है। **शाने नुज़ूल :** ह़ज़रते जाबिर رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ ने फ़रमाया कि येह आयत ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम के ह़क़ में नाज़िल हुई, उन्हों ने सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ किया : **या रसूलल्लाह!** हमारी क़ौम क़ुरैज़ा और नज़ीर ने हमें छोड़ दिया और क़समें खा लीं कि वोह हमारे साथ मुजालसत (हम नशीनी) न करेंगे। इस पर येह आयत नाज़िल हुई तो अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम ने कहा : हम राज़ी हैं **अल्लाह** के रब होने पर, उस के रसूल के नबी होने पर, मोमिनीन के दोस्त होने पर, और हुक्म आयत का तमाम मोमिनीन के लिये आ़म है, सब एक दूसरे के दोस्त और मुह़िब हैं। **146 :** जुम्ला "وَهُمْ رَاكِعُوْنَ" दो वज्ह रखता है, एक येह कि पहले जुम्लों पर मा'तूफ़ हो। दूसरी येह कि ह़ाल वाक़ेअ़ हो, पहली वज्ह अज़्हर व अक़्वा है और ह़ज़रते मुतर्जिम قُدِّسَ سِرُّهٗ का तरजमा भी इसी के मुसाइद है। (جمل عن السمين) दूसरी वज्ह पर दो एह़तिमाल हैं एक येह कि "يُقِيْمُوْنَ", "وَيُؤْتُوْنَ" दोनों फ़े'लों के फ़ाइल से ह़ाल वाक़ेअ़ हो, इस सूरत में मा'ना येह होंगे कि वोह ब ख़ुशूअ़ व तवाज़ोअ़ नमाज़ क़ाइम करते और ज़कात देते हैं। (تفسير ابوالسعود) दूसरा एह़तिमाल येह है कि सिर्फ़ "يُؤْتُوْنَ" के फ़ाइल से ह़ाल वाक़ेअ़ हो, इस सूरत में मा'ना येह होंगे कि नमाज़ क़ाइम करते हैं और मुतवाज़ेअ़ हो कर ज़कात देते हैं। (جمل) बा'ज़ का क़ौल है कि येह आयत ह़ज़रत अ़लिय्ये मुर्तज़ा رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ की शान में है कि आप ने नमाज़ में साइल को अंगुश्तरी सदक़तन दी थी, वोह अंगुश्तरी (अंगूठी) अंगुश्ते मुबारक में ढीली थी बे अ़मले कसीर के निकल गई। लेकिन इमाम फ़ख़्रुद्दीन राज़ी ने तफ़्सीरे कबीर में इस का बहुत शद्दो मद से रद किया और इस के बुत़्लान पर बहुत वुजूह क़ाइम किये हैं। **147 शाने नुज़ूल :** रुफ़ाआ़ बिन ज़ैद और सुवैद बिन ह़ारिस दोनों इज़्हारे इस्लाम के बा'द मुनाफ़िक़ हो गए, बा'ज़ मुसल्मान इन से मह़ब्बत रखते थे **अल्लाह** तआ़ला ने येह आयत नाज़िल फ़रमाई और बताया कि ज़बान से इस्लाम का इज़्हार करना और दिल में कुफ़्र छुपाए रखना दीन को हंसी और खेल बनाना है। **148 :** या'नी बुत परस्त मुश्रिक जो अहले

www.dawateislami.net

إِلَى الصَّلٰوةِ اتَّخَذُوْهَا هُزُوًا وَّ لَعِبًا ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَعْقِلُوْنَ ﴿٥٨﴾

लिये अज़ान दो तो उसे हंसी खेल बनाते हैं[150] येह इस लिये कि वोह निरे बे अ़क़्ल लोग हैं[151]

قُلْ يٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ هَلْ تَنْقِمُوْنَ مِنَّاۤ اِلَّاۤ اَنْ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَمَاۤ اُنْزِلَ

तुम फ़रमाओ ऐ किताबियो तुम्हें हमारा क्या बुरा लगा येही ना कि हम ईमान लाए अल्लाह पर और उस पर जो हमारी

اِلَيْنَا وَمَاۤ اُنْزِلَ مِنْ قَبْلُ ۙ وَاَنَّ اَكْثَرَكُمْ فٰسِقُوْنَ ﴿٥٩﴾ قُلْ هَلْ

तरफ़ उतरा और उस पर जो पहले उतरा[152] और येह कि तुम में अक्सर बे हुक्म (ना फ़रमान) हैं तुम फ़रमाओ क्या

اُنَبِّئُكُمْ بِشَرٍّ مِّنْ ذٰلِكَ مَثُوْبَةً عِنْدَ اللّٰهِ ؕ مَنْ لَّعَنَهُ اللّٰهُ وَغَضِبَ

मैं बता दूं जो अल्लाह के यहां इस से बदतर दरजे में हैं[153] वोह जिन पर अल्लाह ने ला'नत की और उन पर ग़ज़ब

عَلَيْهِ وَجَعَلَ مِنْهُمُ الْقِرَدَةَ وَالْخَنَازِيْرَ وَعَبَدَ الطَّاغُوْتَ ؕ اُولٰٓئِكَ

फ़रमाया और उन में से कर दिये बन्दर और सुअर[154] और शैतान के पुजारी उन का ठिकाना

شَرٌّ مَّكَانًا وَّاَضَلُّ عَنْ سَوَآءِ السَّبِيْلِ ﴿٦٠﴾ وَاِذَا جَآءُوْكُمْ قَالُوْۤا اٰمَنَّا

ज़ियादा बुरा है[155] और येह सीधी राह से ज़ियादा बहके और जब तुम्हारे पास आएं[156] तो कहते हैं हम मुसल्मान हैं

وَقَدْ دَّخَلُوْا بِالْكُفْرِ وَهُمْ قَدْ خَرَجُوْا بِهٖ ؕ وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا كَانُوْا

और वोह आते वक़्त भी काफ़िर थे और जाते वक़्त भी काफ़िर और अल्लाह ख़ूब जानता है जो

किताब से भी बदतर हैं। (خازن) **149 :** क्यूं कि ख़ुदा के दुश्मनों से दोस्ती करना ईमानदार का काम नहीं। **150 शाने नुज़ूल :** कल्बी का क़ौल है कि जब रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم का मुअज़्ज़िन नमाज़ के लिये अज़ान कहता और मुसल्मान उठते तो यहूद हंसते और तमस्ख़ुर (मज़ाक़ उड़ाया) करते, इस पर येह आयत नाज़िल हुई। सुद्दी का क़ौल है कि मदीनए त़य्यिबा में जब मुअज़्ज़िन अज़ान में ''اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا الله'' और ''اَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ الله'' कहता तो एक नसरानी येह कहा करता कि जल जाए झूटा। एक शब उस का ख़ादिम आग लाया वोह और उस के घर के लोग सो रहे थे, आग से एक शरारा उड़ा और वोह नसरानी और उस के घर के लोग और तमाम घर जल गया। **151 :** जो ऐसी सफ़ीहाना (बे वुक़ूफ़ाना) और जाहिलाना ह़रकात करते हैं। इस आयत से मा'लूम हुवा कि अज़ान नस्से क़ुरआनी से भी साबित है। **152 शाने नुज़ूल :** यहूद की एक जमाअ़त ने सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से दरयाफ़्त किया कि आप अम्बिया में से किस किस को मानते हैं? इस सुवाल से उन का मत़लब येह था कि अगर आप ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को न मानें तो वोह आप पर ईमान ले आएं लेकिन ह़ुज़ूर ने इस के जवाब में फ़रमाया कि मैं अल्लाह पर ईमान रखता हूं और जो उस ने हम पर नाज़िल फ़रमाया और जो ह़ज़रते इब्राहीम व इस्माईल व इस्ह़ाक़ व या'क़ूब व अस्बात़ पर नाज़िल फ़रमाया और जो ह़ज़रते ईसा व मूसा को दिया गया या'नी तौरैत व इन्जील और जो और नबियों को उन के रब की त़रफ़ से दिया गया सब को मानता हूं, हम अम्बिया में फ़र्क़ नहीं करते कि किसी को मानें और किसी को न मानें। जब उन्हें मा'लूम हुवा कि आप ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की नुबुव्वत को भी मानते हैं तो वोह आप की नुबुव्वत के मुन्किर हो गए और कहने लगे : जो ईसा को माने हम उस पर ईमान न लाएंगे। इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई। **153 :** कि इस बरह़क़ दीन वालों को तो तुम मह़ज़ अपने इ़नाद व अ़दावत ही से बुरा कहते हो और तुम पर अल्लाह तआ़ला ने ला'नत की और ग़ज़ब फ़रमाया और आयत में जो मज़्कूर है वोह तुम्हारा ह़ाल हुवा तो बदतर दरजे में तो तुम ख़ुद हो, कुछ दिल में सोचो! **154 :** सूरतें मस्ख़ कर के। **155 :** और वोह जहन्नम है। **156 शाने नुज़ूल :** येह आयत यहूद की एक जमाअ़त के ह़क़ में नाज़िल हुई जिन्हों ने सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर अपने ईमान व इख़्लास का इज़्हार किया और कुफ़्रो ज़लाल छुपाए रखा अल्लाह तआ़ला ने येह आयत नाज़िल फ़रमा कर अपने ह़बीब صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم

www.dawateislami.net

يَكْتُمُوْنَ ﴿٦١﴾ وَ تَرٰى كَثِيْرًا مِّنْهُمْ يُسَارِعُوْنَ فِي الْاِثْمِ وَ الْعُدْوَانِ

छुपा रहे हैं और उन[157] में तुम बहुतों को देखोगे कि गुनाह और ज़ियादती

وَ اَكْلِهِمُ السُّحْتَ ؕ لَبِئْسَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٦٢﴾ لَوْ لَا يَنْهٰىهُمُ

और ह़राम ख़ोरी पर दौड़ते हैं[158] बेशक बहुत ही बुरे काम करते हैं उन्हें क्यूं नहीं मन्अ़ करते

الرَّبّٰنِيُّوْنَ وَ الْاَحْبَارُ عَنْ قَوْلِهِمُ الْاِثْمَ وَ اَكْلِهِمُ السُّحْتَ ؕ لَبِئْسَ

उन के पादरी और दरवेश गुनाह की बात कहने और ह़राम खाने से बेशक

مَا كَانُوْا يَصْنَعُوْنَ ﴿٦٣﴾ وَ قَالَتِ الْيَهُوْدُ يَدُ اللّٰهِ مَغْلُوْلَةٌ ؕ غُلَّتْ

बहुत ही बुरे काम कर रहे हैं[159] और यहूदी बोले अल्लाह का हाथ बंधा हुवा है[160] उन्हीं के

اَيْدِيْهِمْ وَ لُعِنُوْا بِمَا قَالُوْا ۘ بَلْ يَدٰهُ مَبْسُوْطَتٰنِ ۙ يُنْفِقُ كَيْفَ وقف لازم

हाथ बांधे जाएं[161] और उन पर इस कहने से ला'नत है बल्कि उस के हाथ कुशादा हैं[162] अ़ता फ़रमाता है जैसे

يَشَآءُ ؕ وَ لَيَزِيْدَنَّ كَثِيْرًا مِّنْهُمْ مَّاۤ اُنْزِلَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ طُغْيَانًا

चाहे[163] और ऐ मह़बूब येह[164] जो तुम्हारी त़रफ़ तुम्हारे रब के पास से उतरा इस से उन में बहुतों को शरारत

وَّ كُفْرًا ؕ وَ اَلْقَيْنَا بَيْنَهُمُ الْعَدَاوَةَ وَ الْبَغْضَآءَ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ ؕ كُلَّمَاۤ

और कुफ़्र में तरक़्क़ी होगी[165] और उन में हम ने क़ियामत तक आपस में दुश्मनी और बैर (बुग़्ज़) डाल दिया[166] जब कभी

اَوْقَدُوْا نَارًا لِّلْحَرْبِ اَطْفَاَهَا اللّٰهُ ۙ وَ يَسْعَوْنَ فِي الْاَرْضِ فَسَادًا ؕ

लड़ाई की आग भड़काते हैं अल्लाह उसे बुझा देता है[167] और ज़मीन में फ़साद के लिये दौड़ते फिरते हैं

को उन के ह़ाल की ख़बर दी। **157 :** या'नी यहूद **158 :** गुनाह हर मा'सियत व ना फ़रमानी को शामिल है। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन का क़ौल है कि गुनाह से तौरैत के मज़ामीन का छुपाना और उस में सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के जो मह़ासिन व औसाफ़ हैं उन का मख़्फ़ी रखना और उ़दवान या'नी ज़ियादती से तौरैत के अन्दर अपनी त़रफ़ से कुछ बढ़ा देना और ह़राम ख़ोरी से रिश्वतें वग़ैरा मुराद हैं। (خازن) **159 :** कि लोगों को गुनाहों और बुरे कामों से नहीं रोकते। **मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि उ़लमा पर नसीह़त और बदी से रोकना वाजिब है और जो शख़्स बुरी बात से मन्अ़ करने को तर्क करे और नह्ये मुन्कर से बाज़ रहे वोह ब मन्ज़िला मुर्तकिबे गुनाह के है। **160 :** या'नी مَعَاذَ اللّٰه वोह बख़ील है। **शाने नुज़ूल :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि यहूद बहुत ख़ुशह़ाल और निहायत दौलत मन्द थे, जब उन्हों ने सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की तक्ज़ीब व मुख़ालफ़त की तो उन की रोज़ी कम हो गई, उस वक़्त फ़िन्ह़ास यहूदी ने कहा कि अल्लाह का हाथ बंधा है या'नी مَعَاذَ اللّٰه वोह रिज़्क़ देने और ख़र्च करने में बुख़्ल करता है, उस के इस क़ौल पर किसी यहूदी ने मन्अ़ न किया बल्कि राज़ी रहे, इसी लिये येह सब का मक़ूला क़रार दिया गया और येह आयत उन के ह़क़ में नाज़िल हुई। **161 :** तंगी और दादो दिहिश (सख़ावत) से। इस इर्शाद का येह असर हुवा कि यहूद दुन्या में सब से ज़ियादा बख़ील हो गए या येह मा'ना हैं कि उन के हाथ जहन्नम में बांधे जाएं और इस त़रह़ उन्हें आतिशे दोज़ख़ में डाला जाए उन की इस बेहूदा गोई और गुस्ताख़ी की सज़ा में। **162 :** वोह जवाद करीम है। **163 :** अपनी ह़िक्मत के मुवाफ़िक़, इस में किसी को मजाले ए'तिराज़ नहीं। **164 :** क़ुरआन शरीफ़ **165 :** या'नी जितना क़ुरआने पाक उतरता जाएगा इतना ह़सद व इ़नाद बढ़ता जाएगा और वोह इस के साथ कुफ़्र व सरकशी में बढ़ते रहेंगे। **166 :** वोह हमेशा बाहम मुख़्तलिफ़ रहेंगे और उन के दिल कभी न मिलेंगे। **167 :** और उन की मदद नहीं फ़रमाता, वोह ज़लील होते हैं।

www.dawateislami.net

وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ الْمُفْسِدِيْنَ ﴿٦٤﴾ وَلَوْ اَنَّ اَهْلَ الْكِتٰبِ اٰمَنُوْا وَاتَّقَوْا

और अल्लाह फ़सादियों को नहीं चाहता और अगर किताब वाले ईमान लाते और परहेज़ गारी करते

لَكَفَّرْنَا عَنْهُمْ سَيِّاٰتِهِمْ وَلَاَدْخَلْنٰهُمْ جَنّٰتِ النَّعِيْمِ ﴿٦٥﴾ وَلَوْ اَنَّهُمْ اَقَامُوا

तो ज़रूर हम उन के गुनाह उतार देते और ज़रूर उन्हें चैन के बाग़ों में ले जाते और अगर क़ाइम रखते

التَّوْرٰىةَ وَالْاِنْجِيْلَ وَمَآ اُنْزِلَ اِلَيْهِمْ مِّنْ رَّبِّهِمْ لَاَكَلُوْا مِنْ فَوْقِهِمْ

तौरैत और इन्जील[168] और जो कुछ उन की त़रफ़ उन के रब की त़रफ़ से उतरा[169] तो उन्हें रिज़्क़ मिलता ऊपर से

وَمِنْ تَحْتِ اَرْجُلِهِمْ ؕ مِنْهُمْ اُمَّةٌ مُّقْتَصِدَةٌ ؕ وَكَثِيْرٌ مِّنْهُمْ سَآءَ

और उन के पाउं के नीचे से[170] उन में कोई गुरोह ए'तिदाल पर है[171] और उन में अक्सर बहुत ही बुरे

مَا يَعْمَلُوْنَ ﴿٦٦﴾ ع يٰۤاَيُّهَا الرَّسُوْلُ بَلِّغْ مَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ ؕ وَاِنْ

काम कर रहे हैं[172] ऐ रसूल पहुंचा दो जो कुछ उतरा तुम्हें तुम्हारे रब की त़रफ़ से[173] और ऐसा

لَّمْ تَفْعَلْ فَمَا بَلَّغْتَ رِسَالَتَهٗ ؕ وَاللّٰهُ يَعْصِمُكَ مِنَ النَّاسِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ

न हो तो तुम ने उस का कोई पयाम न पहुंचाया और अल्लाह तुम्हारी निगहबानी करेगा लोगों से[174] बेशक अल्लाह

لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٦٧﴾ قُلْ يٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ لَسْتُمْ عَلٰى شَىْءٍ

काफ़िरों को राह नहीं देता तुम फ़रमा दो ऐ किताबियो तुम कुछ भी नहीं हो[175]

حَتّٰى تُقِيْمُوا التَّوْرٰىةَ وَالْاِنْجِيْلَ وَمَآ اُنْزِلَ اِلَيْكُمْ مِّنْ رَّبِّكُمْ ؕ

जब तक न क़ाइम करो तौरैत और इन्जील और जो कुछ तुम्हारी त़रफ़ तुम्हारे रब के पास से उतरा[176]

وَلَيَزِيْدَنَّ كَثِيْرًا مِّنْهُمْ مَّآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ طُغْيَانًا وَّكُفْرًا ۚ

और बेशक ऐ महबूब वोह जो तुम्हारी त़रफ़ तुम्हारे रब के पास से उतरा उस से उन में बहुतों को शरारत और कुफ़्र की और तरक़्क़ी होगी[177]

168 : इस त़रह कि सय्यिदे अम्बिया صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم पर ईमान लाते और आप का इत्तिबाअ़ करते कि तौरैत व इन्जील में इस का हुक्म दिया गया है। **169 :** या'नी तमाम किताबें जो अल्लाह तआ़ला ने अपने रसूलों पर नाज़िल फ़रमाईं सब में सय्यिदे अम्बिया صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم का ज़िक्र और आप पर ईमान लाने का हुक्म है। **170 :** या'नी रिज़्क़ की कसरत होती और हर त़रफ़ से पहुंचता। **फ़ाएदा :** इस आयत से मा'लूम हुवा कि दीन की पाबन्दी और अल्लाह तआ़ला की इत़ाअ़त व फ़रमां बरदारी से रिज़्क़ में वुस्अ़त होती है। **171 :** ह़द से तजावुज़ नहीं करता, येह यहूदियों में से वोह लोग हैं जो सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم पर ईमान लाए। **172 :** जो कुफ़्र पर जमे हुए हैं। **173 :** और कुछ अन्देशा न करो। **174 :** या'नी कुफ़्फ़ार से जो आप के क़त्ल का इरादा रखते हैं। सफ़रों में शब को हुज़ूरे अक़्दस सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم का पहरा दिया जाता था, जब येह आयत नाज़िल हुई पहरा हटा दिया गया और हुज़ूर ने पहरेदारों से फ़रमाया कि तुम लोग चले जाओ ! अल्लाह तआ़ला ने मेरी हि़फ़ाज़त फ़रमाई। **175 :** किसी दीन व मिल्लत में नहीं। **176 :** या'नी क़ुरआने पाक। इन तमाम किताबों में सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की ना'त व सिफ़त और आप पर ईमान लाने का हुक्म है, जब तक हुज़ूर पर ईमान न लाएं तौरैत

www.dawateislami.net

فَلَا تَاْسَ عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٦٨﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَالَّذِيْنَ هَادُوْا

तो तुम काफ़िरों का कुछ ग़म न खाओ बेशक वोह जो अपने आप को मुसल्मान कहते हैं[178] और इसी त़रह़ यहूदी

وَالصّٰبِـُٔوْنَ وَالنَّصٰرٰى مَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَعَمِلَ صَالِحًا

और सितारा परस्त और नसरानी इन में जो कोई सच्चे दिल से **अल्लाह** व क़ियामत पर ईमान लाए और अच्छा काम करे

فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿٦٩﴾ لَقَدْ اَخَذْنَا مِيْثَاقَ بَنِيْۤ

तो उन पर न कुछ अन्देशा है और न कुछ ग़म बेशक हम ने बनी इसराईल

اِسْرَآءِيْلَ وَاَرْسَلْنَاۤ اِلَيْهِمْ رُسُلًا ؕ كُلَّمَا جَآءَهُمْ رَسُوْلٌۢ بِمَا لَا

से अ़ह्द लिया[179] और उन की त़रफ़ रसूल भेजे जब कभी उन के पास कोई रसूल वोह बात ले कर आया जो

تَهْوٰۤى اَنْفُسُهُمْ ۙ فَرِيْقًا كَذَّبُوْا وَفَرِيْقًا يَّقْتُلُوْنَ ﴿٧٠﴾ وَحَسِبُوْۤا اَلَّا

उन के नफ़्स की ख़्वाहिश न थी[180] एक गुरोह को झुटलाया और एक गुरोह को शहीद करते हैं[181] और इस गुमान में रहे कि

تَكُوْنَ فِتْنَةٌ فَعَمُوْا وَصَمُّوْا ثُمَّ تَابَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ ثُمَّ عَمُوْا وَصَمُّوْا

कोई सज़ा न होगी[182] तो अन्धे और बहरे हो गए[183] फिर **अल्लाह** ने उन की तौबा क़बूल की[184] फिर उन में बहुतेरे (बहुत से)

كَثِيْرٌ مِّنْهُمْ ؕ وَاللّٰهُ بَصِيْرٌۢ بِمَا يَعْمَلُوْنَ ﴿٧١﴾ لَقَدْ كَفَرَ الَّذِيْنَ قَالُوْۤا

अन्धे और बहरे हो गए और **अल्लाह** उन के काम देख रहा है बेशक काफ़िर हैं वोह जो कहते हैं

اِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْمَسِيْحُ ابْنُ مَرْيَمَ ؕ وَقَالَ الْمَسِيْحُ يٰبَنِيْۤ اِسْرَآءِيْلَ

कि **अल्लाह** वोही मसीह़ मरयम का बेटा है[185] और मसीह़ ने तो येह कहा था ऐ बनी इसराईल

اعْبُدُوا اللّٰهَ رَبِّيْ وَرَبَّكُمْ ؕ اِنَّهٗ مَنْ يُّشْرِكْ بِاللّٰهِ فَقَدْ حَرَّمَ اللّٰهُ

अल्लाह की बन्दगी करो जो मेरा रब[186] और तुम्हारा रब बेशक जो **अल्लाह** का शरीक ठहराए तो **अल्लाह** ने उस पर

व इन्जील की इक़ामत का दा'वा सह़ीह़ नहीं हो सकता । **177 :** क्यूं कि जितना क़ुरआने पाक नाज़िल होता जाएगा येह मुक़ाबरा व इ़नाद (ग़ुरूर व दुश्मनी की वज्ह) से इस के इन्कार में और शिद्दत करते जाएंगे । **178 :** और दिल में ईमान नहीं रखते, मुनाफ़िक़ हैं **179 :** तौरैत में कि **अल्लाह** तआ़ला और उस के रसूलों पर ईमान लाएं और हुक्मे इलाही के मुत़ाबिक़ अ़मल करें । **180 :** और उन्हों ने अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के अह़काम को अपनी ख़्वाहिशों के ख़िलाफ़ पाया तो उन में से **181 :** अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की तक्ज़ीब में तो यहूदो नसारा सब शरीक हैं मगर क़त्ल करना येह ख़ास यहूद का काम है । उन्हों ने बहुत से अम्बिया को शहीद किया जिन में से ह़ज़रते ज़करिय्या और ह़ज़रते यह़्या عَلَيْهِمَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام भी हैं । **182 :** और ऐसे शदीद जुर्मों पर भी अ़ज़ाब न किया जाएगा । **183 :** ह़क़ के देखने और सुनने से । येह उन के ग़ायते जह्ल और निहायते कुफ़्र और क़बूले ह़क़ से ब दरजए ग़ायत ए'राज़ करने का बयान है । **184 :** जब उन्हों ने ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के बा'द तौबा की, इस के बा'द दोबारा **185 :** नसारा के बहुत फ़िर्क़े हैं, उन में से या'क़ूबिया और मल्कानिया का येह क़ौल था वोह कहते थे कि मरयम ने "इलाह" जना और येह भी कहते थे कि इलाह ने ज़ाते ईसा में ह़ुलूल किया और वोह उन के साथ मुत्तह़िद हो गया तो ईसा इलाह हो गए । تَعَالَى اللّٰهُ عَنْ ذٰلِكَ عُلُوًّا كَبِيْرًا (**अल्लाह** इन बातों से बहुत ही बरतरो बुलन्द है) (خازن) **186 :** और मैं उस का बन्दा

www.dawateislami.net

عَلَيْهِ الْجَنَّةَ وَمَاْوٰىهُ النَّارُ ؕ وَمَا لِلظّٰلِمِيْنَ مِنْ اَنْصَارٍ ﴿۷۲﴾ لَقَدْ كَفَرَ

जन्नत ह़राम कर दी और उस का ठिकाना दोज़ख़ है और ज़ालिमों का कोई मददगार नहीं बेशक काफ़िर हैं

الَّذِيْنَ قَالُوْۤا اِنَّ اللّٰهَ ثَالِثُ ثَلٰثَةٍ ۘ وَمَا مِنْ اِلٰهٍ اِلَّاۤ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ؕ

وقف لازم

वोह जो कहते हैं अल्लाह तीन ख़ुदाओं में का तीसरा है[187] और ख़ुदा तो नहीं मगर एक ख़ुदा[188]

وَاِنْ لَّمْ يَنْتَهُوْا عَمَّا يَقُوْلُوْنَ لَيَمَسَّنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْهُمْ عَذَابٌ

और अगर अपनी बात से बाज़ न आए[189] तो जो उन में काफ़िर मरेंगे उन को ज़रूर दर्दनाक अ़ज़ाब

اَلِيْمٌ ﴿۷۳﴾ اَفَلَا يَتُوْبُوْنَ اِلَى اللّٰهِ وَيَسْتَغْفِرُوْنَهٗ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ

पहुंचेगा तो क्यूं नहीं रुजूअ़ करते अल्लाह की त़रफ़ और उस से बख़्शिश मांगते और अल्लाह बख़्शने वाला

رَّحِيْمٌ ﴿۷۴﴾ مَا الْمَسِيْحُ ابْنُ مَرْيَمَ اِلَّا رَسُوْلٌ ۚ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ

मेहरबान मसीह़ इब्ने मरयम नहीं मगर एक रसूल[190] इस से पहले बहुत

الرُّسُلُ ؕ وَاُمُّهٗ صِدِّيْقَةٌ ؕ كَانَا يَاْكُلٰنِ الطَّعَامَ ؕ اُنْظُرْ كَيْفَ

रसूल हो गुज़रे[191] और इस की मां सिद्दीक़ा है[192] दोनों खाना खाते थे[193] देखो तो

نُبَيِّنُ لَهُمُ الْاٰيٰتِ ثُمَّ انْظُرْ اَنّٰى يُؤْفَكُوْنَ ﴿۷۵﴾ قُلْ اَتَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ

हम कैसी साफ़ निशानियां उन के लिये बयान करते हैं फिर देखो वोह कैसे औंधे जाते हैं तुम फ़रमाओ क्या अल्लाह के सिवा ऐसे को

اللّٰهِ مَا لَا يَمْلِكُ لَكُمْ ضَرًّا وَّلَا نَفْعًا ؕ وَاللّٰهُ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿۷۶﴾

पूजते हो जो तुम्हारे नुक़्सान का मालिक न नफ़्अ़ का[194] और अल्लाह ही सुनता जानता है

हूं इलाह नहीं। **187 :** येह क़ौल नसारा के फ़िर्क़ए मरक़ूसिया व नस्तूरिया का है, अक्सर मुफ़स्सिरीन का क़ौल है कि इस से उन की मुराद येह थी कि अल्लाह और मरयम और ईसा तीनों इलाह हैं और इलाह होना इन सब में मुश्तरक है। मुतकल्लिमीन फ़रमाते हैं कि नसारा कहते हैं कि बाप, बेटा, रूहुल क़ुदुस येह तीनों एक इलाह हैं। **188 :** न उस का कोई सानी न सालिस, वोह वह़दानिय्यत के साथ मौसूफ़ है, उस का कोई शरीक नहीं, बाप बेटे बीवी सब से पाक। **189 :** और तस्लीस (तीन ख़ुदा होने) के मो'तक़िद रहे, तौह़ीद इख़्तियार न की **190 :** इन को इलाह मानना ग़लत़ बात़िल और कुफ़्र है। **191 :** वोह भी मो'जिज़ात रखते थे, येह मो'जिज़ात उन के सिद्क़े नुबुव्वत की दलील थे, इसी त़रह ह़ज़रते मसीह़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام भी रसूल हैं, इन के मो'जिज़ात भी दलीले नुबुव्वत हैं, इन्हें रसूल ही मानना चाहिये, जैसे और अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को मो'जिज़ात की बिना पर ख़ुदा नहीं मानते इन को भी ख़ुदा न मानो। **192 :** जो अपने रब के कलिमात और उस की किताबों की तस्दीक़ करने वाली हैं। **193 :** इस में नसारा का रद है कि इलाह ग़िज़ा का मोह़ताज नहीं हो सकता तो जो ग़िज़ा खाए, जिस्म रखे, उस जिस्म में तह़लील (लाग़री व कमज़ोरी) वाक़ेअ़ हो, ग़िज़ा उस का बदल बने, वोह कैसे इलाह हो सकता है ? **194 :** येह इब्त़ाले शिर्क की एक और दलील है। इस का ख़ुलासा येह है कि इलाह (मुस्तह़िक़्क़े इबादत) वोही हो सकता है जो नफ़्अ़ व ज़रर वग़ैरा हर चीज़ पर ज़ाती क़ुदरत व इख़्तियार रखता हो, जो ऐसा न हो वोह इलाह मुस्तह़िक़्क़े इबादत नहीं हो सकता और ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام नफ़्अ़ व ज़रर के बिज़्ज़ात मालिक न थे अल्लाह तआ़ला के मालिक करने से मालिक हुए तो उन की निस्बत उलूहिय्यत का ए'तिक़ाद बात़िल है। (تفسیر ابوالسعود)

www.dawateislami.net

قُلْ یٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ لَا تَغْلُوْا فِیْ دِیْنِكُمْ غَیْرَ الْحَقِّ وَ لَا تَتَّبِعُوْۤا

तुम फ़रमाओ ऐ किताब वालो अपने दीन में नाहक़ ज़ियादती न करो[195] और ऐसे लोगों की

اَهْوَآءَ قَوْمٍ قَدْ ضَلُّوْا مِنْ قَبْلُ وَ اَضَلُّوْا كَثِیْرًا وَّ ضَلُّوْا عَنْ سَوَآءِ

ख़्वाहिश पर न चलो[196] जो पहले गुमराह हो चुके और बहुतों को गुमराह किया और सीधी राह से

السَّبِیْلِ (۷۷) لُعِنَ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا مِنْۢ بَنِیْۤ اِسْرَآءِیْلَ عَلٰى لِسَانِ دَاوٗدَ

बहक गए लाʼनत किये गए वोह जिन्हों ने कुफ़्र किया बनी इसराईल में दावूद

وَ عِیْسَى ابْنِ مَرْیَمَ ؕ ذٰلِكَ بِمَا عَصَوْا وَّ كَانُوْا یَعْتَدُوْنَ (۷۸) كَانُوْا لَا

और ईसा बिन मरयम की ज़बान पर[197] येह[198] बदला उन की ना फ़रमानी और सरकशी का जो बुरी बात करते आपस में

یَتَنَاهَوْنَ عَنْ مُّنْكَرٍ فَعَلُوْهُ ؕ لَبِئْسَ مَا كَانُوْا یَفْعَلُوْنَ (۷۹) تَرٰى كَثِیْرًا

एक दूसरे को न रोकते ज़रूर बहुत ही बुरे काम करते थे[199] उन में तुम बहुत को

مِّنْهُمْ یَتَوَلَّوْنَ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا ؕ لَبِئْسَ مَا قَدَّمَتْ لَهُمْ اَنْفُسُهُمْ اَنْ

देखोगे कि काफ़िरों से दोस्ती करते हैं क्या ही बुरी चीज़ अपने लिये ख़ुद आगे भेजी येह कि

سَخِطَ اللّٰهُ عَلَیْهِمْ وَ فِی الْعَذَابِ هُمْ خٰلِدُوْنَ (۸۰) وَ لَوْ كَانُوْا یُؤْمِنُوْنَ

अल्लाह का उन पर ग़ज़ब हुवा और वोह अ़ज़ाब में हमेशा रहेंगे[200] और अगर वोह ईमान लाते[201]

195 : यहूद की ज़ियादती तो येह कि ह़ज़रते ईसा عَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की नुबुव्वत ही नहीं मानते, और नसारा की ज़ियादती येह कि उन्हें माʼबूद ठहराते हैं। **196 :** याʼनी अपने बद दीन बाप दादा वग़ैरा की। **197 :** बाशिन्दगाने ऐला ने जब ह़द से तजावुज़ किया और सनीचर के रोज़ शिकार तर्क करने का जो हुक्म था उस की मुख़ालफ़त की तो ह़ज़रते दावूद عَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने उन पर लाʼनत की और उन के ह़क़ में बद दुआ़ फ़रमाई तो वोह बन्दरों और ख़िन्ज़ीरों की शक्ल में मस्ख़ कर दिये गए और अस्ह़ाबे माइदा ने जब नाज़िल शुदा ख़्वान की नेʼमतें खाने के बाʼद कुफ़्र किया तो ह़ज़रते ईसा عَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने उन के ह़क़ में बद दुआ़ की तो वोह ख़िन्ज़ीर और बन्दर हो गए और उन की ताʼदाद पांच हज़ार थी। (جمل وغیرہ) बाʼज़ मुफ़स्सिरीन का क़ौल है कि यहूद अपने आबा पर फ़ख़्र किया करते थे और कहते थे : हम अम्बिया की औलाद हैं। इस आयत में उन्हें बताया गया कि उन अम्बिया عَلَیْهِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने उन पर लाʼनत की है। **एक क़ौल** येह है कि ह़ज़रते दावूद और ह़ज़रते ईसा عَلَیْهِمَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने उन पर लाʼनत की है। **एक क़ौल** येह है कि ह़ज़रते दावूद और ह़ज़रते ईसा عَلَیْهِمَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने सय्यिदे आ़लम मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْهِ وَسَلَّم की जल्वा अफ़रोज़ी की बिशारत दी और ह़ुज़ूर पर ईमान न लाने और कुफ़्र करने वालों पर लाʼनत की। **198 :** लाʼनत **199 मस्अला :** आयत से साबित हुवा कि नह्ये मुन्कर याʼनी बुराई से लोगों को रोकना वाजिब है और बदी को मन्अ़ करने से बाज़ रहना सख़्त गुनाह है। तिरमिज़ी की ह़दीस में है कि जब बनी इसराईल गुनाहों में मुब्तला हुए तो उन के उ़लमा ने अव्वल तो उन्हें मन्अ़ किया, जब वोह बाज़ न आए तो फिर भी उन से मिल गए और खाने पीने उठने बैठने में उन के साथ शामिल हो गए, उन के इस इस्यान व तअ़द्दी का येह नतीजा हुवा कि **अल्लाह** तआ़ला ने ह़ज़रते दावूद व ह़ज़रते ईसा عَلَیْهِمَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की ज़बान से उन पर लाʼनत उतारी। **200 मस्अला :** इस आयत से साबित हुवा कि कुफ़्फ़ार से दोस्ती व मुवालात ह़राम और **अल्लाह** तआ़ला के ग़ज़ब का सबब है। **201 :** सिद्क़ो इख़्लास के साथ बिग़ैर निफ़ाक़ के।

www.dawateislami.net

بِاللّٰهِ وَالنَّبِيِّ وَمَآ اُنْزِلَ اِلَيْهِ مَا اتَّخَذُوْهُمْ اَوْلِيَآءَ وَلٰكِنَّ كَثِيْرًا

अल्लाह और इन नबी पर और उस पर जो उन की त़रफ़ उतरा तो काफ़िरों से दोस्ती न करते[202] मगर उन में तो बहुतेरे (अक्सर)

مِّنْهُمْ فٰسِقُوْنَ ﴿۸۱﴾ لَتَجِدَنَّ اَشَدَّ النَّاسِ عَدَاوَةً لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوا الْيَهُوْدَ

फ़ासिक़ हैं ज़रूर तुम मुसल्मानों का सब से बढ़ कर दुश्मन यहूदियों

وَالَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا ۚ وَلَتَجِدَنَّ اَقْرَبَهُمْ مَّوَدَّةً لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوا الَّذِيْنَ

और मुशिरकों को पाओगे और ज़रूर तुम मुसल्मानों की दोस्ती में सब से ज़ियादा क़रीब उन को पाओगे

قَالُوْٓا اِنَّا نَصٰرٰى ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّ مِنْهُمْ قِسِّيْسِيْنَ وَرُهْبَانًا وَّاَنَّهُمْ

जो कहते थे हम नसारा हैं[203] येह इस लिये कि उन में आ़लिम और दरवेश हैं और येह

لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ ﴿۸۲﴾

ग़ुरूर नहीं करते[204]

202 : इस से साबित हुवा कि मुशिरकीन के साथ दोस्ती और मुवालात अ़लामते निफ़ाक़ है। **203 :** इस आयत में उन की मद्ह़ है जो ज़मानए अक़्दस तक ह़ज़रते ई़सा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के दीन पर रहे और सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की बि'सत मा'लूम होने पर हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم पर ईमान ले आए। **शाने नुज़ूल :** इब्तिदाए इस्लाम में जब कुफ़्फ़ारे क़ुरैश ने मुसल्मानों को बहुत ईज़ाएं दीं तो अस्ह़ाबे किराम में से ग्यारह मर्द और चार औ़रतों ने हुज़ूर के हुक्म से ह़बशा की त़रफ़ हिजरत की, उन मुहाजिरीन के अस्मा येह हैं : ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी और इन की ज़ौजए त़ाहिरा ह़ज़रते रुक़य्या बिन्ते रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم और ह़ज़रते ज़ुबैर, ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द, ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़, ह़ज़रते अबू हुज़ैफ़ा और इन की ज़ौजा ह़ज़रते सहला बिन्ते सुहैल और ह़ज़रते मुस्अ़ब बिन उ़मैर, ह़ज़रते अबू सलमा और इन की बीबी ह़ज़रते उम्मे सलमा बिन्ते उमय्या, ह़ज़रते उ़स्मान बिन मज़्ऊ़न, ह़ज़रते आ़मिर बिन रबीआ़ और इन की बीबी ह़ज़रते लैला बिन्ते अबी ख़ैसमा, ह़ज़रते ह़ातिब बिन उ़मर व ह़ज़रते सुहैल बिन बैज़ा رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُم। येह ह़ज़रात नुबुव्वत के पांचवें साल माहे रजब में बह़री सफ़र कर के ह़बशा पहुंचे, इस हिजरत को हिजरते ऊला कहते हैं, इन के बा'द ह़ज़रते जा'फ़र बिन अबी त़ालिब गए, फिर और मुसल्मान रवाना होते रहे यहां तक कि बच्चों और औ़रतों के इलावा मुहाजिरीन की ता'दाद बयासी मर्दों तक पहुंच गई, जब क़ुरैश को इस हिजरत का इ़ल्म हुवा तो उन्हों ने एक जमाअ़त तोह़फ़े तह़ाइफ़ दे कर नज्जाशी बादशाह के पास भेजी, उन लोगों ने दरबारे शाही में बारयाबी ह़ासिल कर के बादशाह से कहा कि हमारे मुल्क में एक शख़्स ने नुबुव्वत का दा'वा किया है और लोगों को नादान बना डाला है, उन की जमाअ़त जो आप के मुल्क में आई है वोह यहां फ़साद अंगेज़ी करेगी और आप की रिआ़या को बाग़ी बनाएगी, हम आप को ख़बर देने के लिये आए हैं और हमारी क़ौम दरख़्वास्त करती है कि आप उन्हें हमारे ह़वाले कीजिये। नज्जाशी बादशाह ने कहा : हम उन लोगों से गुफ़्तगू कर लें, येह कह कर मुसल्मानों को त़लब किया और उन से दरयाफ़्त किया कि तुम ह़ज़रते ई़सा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और उन की वालिदा के ह़क़ में क्या ए'तिक़ाद रखते हो ? ह़ज़रते जा'फ़र बिन अबी त़ालिब ने फ़रमाया कि ह़ज़रते ई़सा अल्लाह के बन्दे और उस के रसूल और कलिमतुल्लाह व रूहुल्लाह हैं और ह़ज़रते मरयम कुंवारी पाक हैं। येह सुन कर नज्जाशी ने ज़मीन से एक लकड़ी का टुकड़ा उठा कर कहा : ख़ुदा की क़सम तुम्हारे आक़ा ने ह़ज़रते ई़सा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के कलाम में इतना भी नहीं बढ़ाया जितनी येह लकड़ी या'नी हुज़ूर का इर्शाद कलामे ई़सा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के बिल्कुल मुत़ाबिक़ है। येह देख कर मुशिरकीने मक्का के चेहरे उतर गए। फिर नज्जाशी ने क़ुरआन शरीफ़ सुनने की ख़्वाहिश की, ह़ज़रते जा'फ़र ने सूरए मरयम तिलावत की, उस वक़्त दरबार में नसरानी आ़लिम और दरवेश मौजूद थे, क़ुरआने करीम सुन कर बे इख़्तियार रोने लगे और नज्जाशी ने मुसल्मानों से कहा : तुम्हारे लिये मेरे क़लम रव (मुल्क) में कोई ख़त़रा नहीं। मुशिरकीने मक्का नाकाम फिरे और मुसल्मान नज्जाशी के पास बहुत इ़ज़्ज़तो आसाइश के साथ रहे और फ़ज़्ले इलाही से नज्जाशी को दौलते ईमान का शरफ़ ह़ासिल हुवा। इस वाक़िए के मुतअ़ल्लिक़ येह आयत नाज़िल हुई। **204**
मस्अला : इस से साबित हुवा कि इ़ल्म और तर्के तकब्बुर बहुत काम आने वाली चीज़ें हैं और इन की बदौलत हिदायत नसीब होती है।

www.dawateislami.net

وَ اِذَا سَمِعُوْا مَاۤ اُنْزِلَ اِلَى الرَّسُوْلِ تَرٰۤى اَعْيُنَهُمْ تَفِيْضُ مِنَ الدَّمْعِ

और जब सुनते हैं वोह जो रसूल की त़रफ़ उतरा[205] तो उन की आंखें देखो कि आंसूओं से उबल रही हैं[206]

مِمَّا عَرَفُوْا مِنَ الْحَقِّۚ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَاۤ اٰمَنَّا فَاكْتُبْنَا مَعَ الشّٰهِدِيْنَ ﴿۸۳﴾

इस लिये कि वोह ह़क़ को पहचान गए कहते हैं ऐ रब हमारे हम ईमान लाए[207] तो हमें ह़क़ के गवाहों में लिख ले[208]

وَ مَا لَنَا لَا نُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَ مَا جَآءَنَا مِنَ الْحَقِّۙ وَ نَطْمَعُ اَنْ يُّدْخِلَنَا

और हमें क्या हुवा कि हम ईमान न लाएं **अल्लाह** पर और उस ह़क़ पर कि हमारे पास आया और हम त़मअ़ करते हैं कि हमें हमारा रब

رَبُّنَا مَعَ الْقَوْمِ الصّٰلِحِيْنَ ﴿۸۴﴾ فَاَثَابَهُمُ اللّٰهُ بِمَا قَالُوْا جَنّٰتٍ تَجْرِيْ

नेक लोगों के साथ दाख़िल करे[209] तो **अल्लाह** ने उन के इस कहने के बदले उन्हें बाग़ दिये

مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَاؕ وَ ذٰلِكَ جَزَآءُ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۸۵﴾ وَ

जिन के नीचे नहरें रवां हमेशा उन में रहेंगे येह बदला है नेकों का[210] और

الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَاۤ اُولٰٓىِٕكَ اَصْحٰبُ الْجَحِيْمِ۠ ﴿۸۶﴾ يٰۤاَيُّهَا

वोह जिन्हों ने कुफ़्र किया और हमारी आयतें झुटलाईं वोह हैं दोज़ख़ वाले ऐ

الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُحَرِّمُوْا طَيِّبٰتِ مَاۤ اَحَلَّ اللّٰهُ لَكُمْ وَ لَا تَعْتَدُوْاؕ

ईमान वालो[211] ह़राम न ठहराओ वोह सुथरी चीज़ें कि **अल्लाह** ने तुम्हारे लिये ह़लाल कीं[212] और ह़द से न बढ़ो

اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِيْنَ ﴿۸۷﴾ وَ كُلُوْا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ حَلٰلًا طَيِّبًا۪

बेशक ह़द से बढ़ने वाले **अल्लाह** को ना पसन्द हैं और खाओ जो कुछ तुम्हें **अल्लाह** ने रोज़ी दी ह़लाल पाकीज़ा

205 : या'नी कुरआन शरीफ़ **206 :** येह उन की रिक़्क़ते क़ल्ब का बयान है कि कुरआने करीम के दिल में असर करने वाले मज़ामीन सुन कर रो पड़ते हैं। चुनान्चे नजाशी बादशाह की दरख़्वास्त पर ह़ज़रते जा'फ़र ने उस के दरबार में सूरए मरयम और सूरए ताहा की आयात पढ़ कर सुनाईं तो नजाशी बादशाह और उस के दरबारी जिन में उस की क़ौम के उ़लमा मौजूद थे सब ज़ारो क़ित़ार रोने लगे। इसी त़रह़ नजाशी की क़ौम के सत्तर आदमी जो सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए थे हुज़ूर से सूरए यासीन सुन कर बहुत रोए। **207 :** सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم पर और हम ने उन के बरह़क़ होने की शहादत दी **208 :** और सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की उम्मत में दाख़िल कर जो रोज़े क़ियामत तमाम उम्मतों के गवाह होंगे। (येह उन्हें इन्जील से मा'लूम हो चुका था) **209 :** जब ह़बशा का वफ़्द इस्लाम से मुशर्रफ़ हो कर वापस हुवा तो यहूद ने उन्हें इस पर मलामत की, इस के जवाब में उन्हों ने येह कहा कि जब ह़क़ वाज़ेह़ हो गया तो हम क्यूं ईमान न लाते, या'नी ऐसी ह़ालत में ईमान न लाना क़ाबिले मलामत है न कि ईमान लाना क्यूं कि येह सबब है फ़लाहे दारैन का। **210 :** जो सिद्क़ो इख़्लास के साथ ईमान लाएं और ह़क़ का इक़रार करें। **211 शाने नुज़ूल :** सह़ाबए किराम की एक जमाअ़त रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم का वा'ज़ सुन कर एक रोज़ ह़ज़रते उ़स्मान बिन मज़्ऊ़न के यहां जम्अ़ हुई और उन्हों ने बाहम तर्के दुन्या का अ़हद किया और इस पर इत्तिफ़ाक़ किया कि वोह टाट पहनेंगे, हमेशा दिन में रोज़ा रखेंगे, शब इ़बादते इलाही में बेदार रह कर गुज़ारा करेंगे, बिस्तर पर न लैटेंगे, गोश्त और चिक्नाई न खाएंगे, औ़रतों से जुदा रहेंगे, ख़ुश्बू न लगाएंगे। इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई और उन्हें इस इरादे से रोक दिया गया। **212 :** या'नी जिस त़रह़ ह़राम को तर्क किया जाता है उस त़रह़ ह़लाल चीज़ों को तर्क न करो और न मुबालग़तन किसी ह़लाल चीज़ को येह

www.dawateislami.net

وَّاتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِیْۤ اَنْتُمْ بِهٖ مُؤْمِنُوْنَ ﴿۸۸﴾ لَا یُؤَاخِذُكُمُ اللّٰهُ بِاللَّغْوِ فِیْۤ

और डरो अल्लाह से जिस पर तुम्हें ईमान है अल्लाह तुम्हें नहीं पकड़ता तुम्हारी ग़लत़ फ़हमी

اَیْمَانِكُمْ وَ لٰكِنْ یُّؤَاخِذُكُمْ بِمَا عَقَّدْتُّمُ الْاَیْمَانَ ۚ فَكَفَّارَتُهٗۤ اِطْعَامُ

की क़समों पर[213] हां उन क़समों पर गिरिफ़्त फ़रमाता है जिन्हें तुम ने मज़्बूत़ किया[214] तो ऐसी क़सम का बदला दस

عَشَرَةِ مَسٰكِیْنَ مِنْ اَوْسَطِ مَا تُطْعِمُوْنَ اَهْلِیْكُمْ اَوْ كِسْوَتُهُمْ اَوْ

मिस्कीनों को खाना देना[215] अपने घर वालों को जो खिलाते हो उस के औसत़ में से[216] या उन्हें कपड़े देना[217] या

تَحْرِیْرُ رَقَبَةٍ ؕ فَمَنْ لَّمْ یَجِدْ فَصِیَامُ ثَلٰثَةِ اَیَّامٍ ؕ ذٰلِكَ كَفَّارَةُ

एक बरदा (ग़ुलाम) आज़ाद करना तो जो इन में से कुछ न पाए तो तीन दिन के रोज़े[218] येह बदला है

اَیْمَانِكُمْ اِذَا حَلَفْتُمْ ؕ وَ احْفَظُوْۤا اَیْمَانَكُمْ ؕ كَذٰلِكَ یُبَیِّنُ اللّٰهُ لَكُمْ

तुम्हारी क़समों का जब क़सम खाओ[219] और अपनी क़समों की ह़िफ़ाज़त करो[220] इसी त़रह़ अल्लाह तुम से अपनी

اٰیٰتِهٖ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿۸۹﴾ یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْۤا اِنَّمَا الْخَمْرُ وَ الْمَیْسِرُ وَ

आयतें बयान फ़रमाता है कि कहीं तुम एह़सान मानो ऐ ईमान वालो शराब और जूआ और

الْاَنْصَابُ وَ الْاَزْلَامُ رِجْسٌ مِّنْ عَمَلِ الشَّیْطٰنِ فَاجْتَنِبُوْهُ لَعَلَّكُمْ

बुत और पांसे नापाक ही हैं शैत़ानी काम तो इन से बचते रहना कि तुम

تُفْلِحُوْنَ ﴿۹۰﴾ اِنَّمَا یُرِیْدُ الشَّیْطٰنُ اَنْ یُّوْقِعَ بَیْنَكُمُ الْعَدَاوَةَ وَ الْبَغْضَآءَ

फ़लाह़ पाओ शैत़ान येही चाहता है कि तुम में बैर और दुश्मनी डलवा दे

कहो कि हम ने इस को अपने ऊपर ह़राम कर लिया। **213 :** ग़लत़ फ़हमी की क़सम या'नी यमीने लग़्व येह है कि आदमी किसी वाक़िए को अपने ख़याल में सह़ीह़ जान कर क़सम खा ले और ह़क़ीक़त में वोह ऐसा न हो, ऐसी क़सम पर कफ़्फ़ारा नहीं। **214 :** या'नी यमीने मुन्अ़क़िदा पर जो किसी आइन्दा अम्र पर क़स्द कर के खाई जाए ऐसी क़सम तोड़ना गुनाह भी है और इस पर कफ़्फ़ारा भी लाज़िम है। **215 :** दोनों वक़्त का ख़्वाह उन्हें खिलावे या पौने दो सेर गेहूं या साढ़े तीन सेर जव सदक़ए फ़ित्र की त़रह़ दे दे। (दो किलो में अस्सी 80 ग्राम कम। "फ़तावा अहले सुन्नत")। **मस्अला :** येह भी जाइज़ है कि एक मिस्कीन को दस रोज़ दे दे या खिला दिया करे। **216 :** या'नी न बहुत आ'ला दरजे का न बिल्कुल अदना, बल्कि मुतवस्सित़। **217 :** औसत़ दरजे के जिन से अक्सर बदन ढक सके। ह़ज़रते इब्ने उ़मर رضی اللہ عنہما से मरवी है कि एक तहबन्द और कुरता या एक तहबन्द और एक चादर हो। **मस्अला :** कफ़्फ़ारे में इन तीनों बातों का इख़्तियार है ख़्वाह खाना दे ख़्वाह कपड़े, ख़्वाह ग़ुलाम आज़ाद करे, हर एक से कफ़्फ़ारा अदा हो जाएगा। **218 मस्अला :** रोज़े से कफ़्फ़ारा जब ही अदा हो सकता है जब कि खाना, कपड़ा देने और ग़ुलाम आज़ाद करने की क़ुदरत न हो। **मस्अला :** येह भी ज़रूरी है कि येह रोज़े मुतवातिर रखे जाएं। **219 :** और क़सम खा कर तोड़ दो या'नी उस को पूरा न करो। **मस्अला :** क़सम तोड़ने से पहले कफ़्फ़ारा देना दुरुस्त नहीं। **220 :** या'नी उन्हें पूरा करो अगर उस में शरअ़न कोई ह़रज न हो और येह भी ह़िफ़ाज़त है कि क़सम खाने की आ़दत तर्क की जाए।

www.dawateislami.net

فِي الْخَمْرِ وَالْمَيْسِرِ وَيَصُدَّكُمْ عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ وَعَنِ الصَّلٰوةِ ۚ فَهَلْ اَنْتُمْ

शराब और जूए में और तुम्हें अल्लाह की याद और नमाज़ से रोके[221] तो क्या तुम

مُّنْتَهُوْنَ ﴿٩١﴾ وَاَطِيْعُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ وَاحْذَرُوْا ۚ فَاِنْ تَوَلَّيْتُمْ

बाज़ आए और हुक्म मानो अल्लाह का और हुक्म मानो रसूल का और होशियार रहो फिर अगर तुम फिर जाओ[222]

فَاعْلَمُوْۤا اَنَّمَا عَلٰى رَسُوْلِنَا الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ﴿٩٢﴾ لَيْسَ عَلَى الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

तो जान लो कि हमारे रसूल का ज़िम्मा सिर्फ़ वाज़ेह तौर पर हुक्म पहुंचा देना है[223] जो ईमान लाए और नेक

وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ جُنَاحٌ فِيْمَا طَعِمُوْۤا اِذَا مَا اتَّقَوْا وَّاٰمَنُوْا وَعَمِلُوا

काम किये उन पर कुछ गुनाह नहीं है[224] जो कुछ उन्हों ने चखा जब कि डरें और ईमान रखें और

الصّٰلِحٰتِ ثُمَّ اتَّقَوْا وَّاٰمَنُوْا ثُمَّ اتَّقَوْا وَّاَحْسَنُوْا ؕ وَاللّٰهُ يُحِبُّ

नेकियां करें फिर डरें और ईमान रखें फिर डरें और नेक रहें और अल्लाह नेकों को

الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٩٣﴾ ع يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَيَبْلُوَنَّكُمُ اللّٰهُ بِشَيْءٍ مِّنَ الصَّيْدِ ع ١٢/٢ ٧

दोस्त रखता है[225] ऐ ईमान वालो ज़रूर अल्लाह तुम्हें आज़्माएगा ऐसे बा'ज़ शिकार से

تَنَالُهٗۤ اَيْدِيْكُمْ وَرِمَاحُكُمْ لِيَعْلَمَ اللّٰهُ مَنْ يَّخَافُهٗ بِالْغَيْبِ ۚ فَمَنِ

जिस तक तुम्हारे हाथ और नेज़े पहुंचें[226] कि अल्लाह पहचान करा दे उन की जो उस से बिन देखे डरते हैं फिर इस

221 : इस आयत में शराब और जूए के नताइज और वबाल बयान फ़रमाए गए कि शराब ख़ोरी और जूए बाज़ी का एक वबाल तो येह है कि इस से आपस में बुग्ज़ और अ़दावतें पैदा होती हैं और जो इन बदियों में मुब्तला हो वोह ज़िक्रे इलाही और नमाज़ के अवक़ात की पाबन्दी से महरूम हो जाता है। 222 : इताअ़ते ख़ुदा और रसूल से 223 : येह वईदो तहदीद है कि जब रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने हुक्मे इलाही साफ़ साफ़ पहुंचा दिया तो उन का जो फ़र्ज़ था अदा हो चुका अब जो ए'राज़ करे वोह मुस्तहिक़्क़े अ़ज़ाब है। 224 **शाने नुज़ूल :** येह आयत उन अस्हाब के हक़ में नाज़िल हुई जो शराब हराम किये जाने से क़ब्ल वफ़ात पा चुके थे। हुरमते शराब का हुक्म नाज़िल होने के बा'द सहाबए किराम को उन की फ़िक्र हुई कि उन से इस का मुआख़ज़ा होगा या न होगा ? उन के हक़ में येह आयत नाज़िल हुई और बताया गया कि हुरमत का हुक्म नाज़िल होने से क़ब्ल जिन नेक ईमानदारों ने कुछ खाया पिया वोह गुनहगार नहीं। 225 : आयत में लफ़्ज़ "اِتَّقَوْا" जिस के मा'ना डरने और परहेज़ करने के हैं तीन मरतबा आया है। **पहले** से शिर्क से डरना और परहेज़ करना, **दूसरे** से शराब और जूए से बचना, **तीसरे** से तमाम मुहर्रमात से परहेज़ करना मुराद है। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन का क़ौल है कि **पहले** से तर्के शिर्क, **दूसरे** से तर्के मआ़सी व मुहर्रमात, **तीसरे** से तर्के शुबुहात मुराद है। बा'ज़ का क़ौल है कि **पहले** से तमाम हराम चीज़ों से बचना और **दूसरे** से इस पर क़ाइम रहना और **तीसरे** से ज़मानए नुज़ूले वह्य में या उस के बा'द जो चीज़ें मन्अ़ की जाएं उन को छोड़ देना मुराद है। (مدارک وخازن وجمل وغیرہ) 226 : 6 हिजरी जिस में हुदैबिया का वाक़िआ़ पेश आया उस साल मुसल्मान मोहरिम (हालते एहराम में) थे, इस हालत में वोह इस आज़्माइश में डाले गए कि वुहूश व तुयूर (जंगली जानवर और परिन्दे) ब कसरत आए और उन की सुवारियों पर छा गए, हाथ से पकड़ना, हथियार से शिकार कर लेना बिल्कुल इख़्तियार में था। अल्लाह तआ़ला ने येह आयत नाज़िल फ़रमाई और इस आज़्माइश में वोह ब फ़ज़्ले इलाही फ़रमां बरदार साबित हुए और हुक्मे इलाही की ता'मील में साबित क़दम रहे। (خازن وغیرہ)

www.dawateislami.net

اعْتَدٰى بَعْدَ ذٰلِكَ فَلَهٗ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٩٤﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَقْتُلُوا

के बा'द जो हद से बढ़े[227] उस के लिये दर्दनाक सज़ा है ऐ ईमान वालो शिकार

الصَّيْدَ وَاَنْتُمْ حُرُمٌ ؕ وَمَنْ قَتَلَهٗ مِنْكُمْ مُّتَعَمِّدًا فَجَزَآءٌ مِّثْلُ مَا

न मारो जब तुम एह़राम में हो[228] और तुम में जो उसे क़स्दन क़त्ल करे[229] तो उस का बदला येह है कि

قَتَلَ مِنَ النَّعَمِ يَحْكُمُ بِهٖ ذَوَا عَدْلٍ مِّنْكُمْ هَدْيًۢا بٰلِغَ الْكَعْبَةِ اَوْ

वैसा ही जानवर मवेशी से दे[230] तुम में कि दो सिक़ह आदमी इस का हुक्म करें[231] येह क़ुरबानी हो का'बे को पहुंचती[232] या

كَفَّارَةٌ طَعَامُ مَسٰكِيْنَ اَوْ عَدْلُ ذٰلِكَ صِيَامًا لِّيَذُوْقَ وَبَالَ اَمْرِهٖ ؕ

कफ़्फ़ारा दे चन्द मिस्कीनों का खाना[233] या इस के बराबर रोज़े कि अपने काम का वबाल चखे

عَفَا اللّٰهُ عَمَّا سَلَفَ ؕ وَمَنْ عَادَ فَيَنْتَقِمُ اللّٰهُ مِنْهُ ؕ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ

अल्लाह ने मुआफ़ किया जो हो गुज़रा[234] और जो अब करेगा **अल्लाह** उस से बदला लेगा और **अल्लाह** ग़ालिब है

ذُو انْتِقَامٍ ﴿٩٥﴾ اُحِلَّ لَكُمْ صَيْدُ الْبَحْرِ وَطَعَامُهٗ مَتَاعًا لَّكُمْ وَلِلسَّيَّارَةِ ۚ

बदला लेने वाला हलाल है तुम्हारे लिये दरिया का शिकार और उस का खाना तुम्हारे और मुसाफ़िरों के फ़ाएदे को

وَحُرِّمَ عَلَيْكُمْ صَيْدُ الْبَرِّ مَا دُمْتُمْ حُرُمًا ؕ وَاتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِيْۤ اِلَيْهِ

और तुम पर ह़राम है ख़ुश्की का शिकार[235] जब तक तुम एह़राम में हो और **अल्लाह** से डरो जिस की त़रफ़ तुम्हें

227 : और बा'द इब्तिला के ना फ़रमानी करे 228 **मस्अला :** मोह़रिम पर शिकार या'नी ख़ुश्की के किसी वह़शी जानवर को मारना ह़राम है। **मस्अला :** जानवर की त़रफ़ शिकार करने के लिये इशारा करना या किसी त़रह़ बताना भी शिकार में दाख़िल और मम्नूअ़ है। **मस्अला :** ह़ालते एह़राम में हर वह़शी जानवर का शिकार मम्नूअ़ है ख़्वाह वोह ह़लाल हो या न हो। **मस्अला :** काटने वाला कुत्ता और कव्वा, और बिच्छू और चील और चूहा और भेड़िया और सांप इन जानवरों को अह़ादीस में फ़वासिक़ फ़रमाया गया और इन के क़त्ल की इजाज़त दी गई। **मस्अला :** मच्छर, पिस्सू, च्यूंटी, मख्खी और ह़शरातुल अर्द़ और ह़म्ला आवर दरिन्दों को मारना मुआफ़ है। (تفسیر احمدی وغیرہ) 229 **मस्अला :** ह़ालते एह़राम में जिन जानवरों का मारना मम्नूअ़ है वोह हर ह़ाल में मम्नूअ़ है अ़मदन हो या ख़त़ाअन। अ़मदन का हुक्म तो इस आयत से मा'लूम हुवा और ख़त़ाअन का ह़दीस शरीफ़ से साबित है। (مدارک) 330 : वैसा ही जानवर देने से मुराद येह है कि क़ीमत में मारे हुए जानवर के बराबर हो। ह़ज़रत इमाम अबू ह़नीफ़ा और इमाम अबू यूसुफ़ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمَا का येही क़ौल है और इमाम मुह़म्मद व शाफ़ेई رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْهِمَا के नज़्दीक ख़िल्क़त व सूरत में मारे हुए जानवर की मिस्ल होना मुराद है। (مدارک واحمدی) 231 : या'नी क़ीमत का अन्दाज़ा करें और क़ीमत वहां की मो'तबर होगी जहां शिकार मारा गया हो या उस के क़रीब के मक़ाम की। 232 : या'नी कफ़्फ़ारे के जानवर का ह़रमे मक्का शरीफ़ के बाहर ज़ब्ह़ करना दुरुस्त नहीं, मक्कए मुकर्रमा में होना चाहिये और ऐन का'बे में भी ज़ब्ह़ जाइज़ नहीं, इसी लिये का'बे को पहुंचती फ़रमाया का'बे के अन्दर न फ़रमाया और कफ़्फ़ारा खाने या रोज़े से अदा किया जाए तो उस के लिये मक्कए मुकर्रमा में होने की क़ैद नहीं बाहर भी जाइज़ है। (تفسیر احمدی وغیرہ) 233 **मस्अला :** येह भी जाइज़ है कि शिकार की क़ीमत का ग़ल्ला ख़रीद कर मसाकीन को इस त़रह़ दे कि हर मिस्कीन को सदक़ए फ़ित्र के बराबर पहुंचे और येह भी जाइज़ है कि इस क़ीमत में जितने मिस्कीनों के ऐसे ह़िस्से होते थे इतने रोज़े रखे। 234 : या'नी इस हुक्म से क़ब्ल जो शिकार मारे। 235 : इस आयत में येह **मस्अला** बयान फ़रमाया गया कि मोह़रिम के लिये दरिया का शिकार ह़लाल है और ख़ुश्की का ह़राम। दरिया का शिकार वोह है जिस की पैदाइश दरिया में हो और ख़ुश्की का वोह जिस की पैदाइश ख़ुश्की में हो।

www.dawateislami.net

تُحْشَرُوْنَ ﴿٩٦﴾ جَعَلَ اللّٰهُ الْكَعْبَةَ الْبَيْتَ الْحَرَامَ قِيٰمًا لِّلنَّاسِ وَالشَّهْرَ

उठना है अल्लाह ने अदब वाले घर का'बे को लोगों के क़ियाम का बाइस किया[236] और हुरमत वाले

الْحَرَامَ وَالْهَدْیَ وَالْقَلَآئِدَ ؕ ذٰلِكَ لِتَعْلَمُوْۤا اَنَّ اللّٰهَ یَعْلَمُ مَا فِی

महीने[237] और हरम की क़ुरबानी और गले में अ़लामत आवेज़ां जानवरों को[238] येह इस लिये कि तुम यक़ीन करो कि अल्लाह जानता है जो कुछ

السَّمٰوٰتِ وَمَا فِی الْاَرْضِ وَاَنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَیْءٍ عَلِیْمٌ ﴿٩٧﴾ اِعْلَمُوْۤا

आस्मानों में है और जो कुछ ज़मीन में और येह कि अल्लाह सब कुछ जानता है जान रखो कि

اَنَّ اللّٰهَ شَدِیْدُ الْعِقَابِ وَاَنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِیْمٌ ﴿٩٨﴾ ؕ مَا عَلَی

अल्लाह का अ़ज़ाब सख़्त है[239] और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान रसूल पर नहीं

الرَّسُوْلِ اِلَّا الْبَلٰغُ ؕ وَاللّٰهُ یَعْلَمُ مَا تُبْدُوْنَ وَمَا تَكْتُمُوْنَ ﴿٩٩﴾ قُلْ لَّا

मगर हुक्म पहुंचाना[240] और अल्लाह जानता है जो तुम ज़ाहिर करते और जो तुम छुपाते हो[241] तुम फ़रमा दो

یَسْتَوِی الْخَبِیْثُ وَالطَّیِّبُ وَلَوْ اَعْجَبَكَ كَثْرَةُ الْخَبِیْثِ ۚ فَاتَّقُوا اللّٰهَ

कि सुथरा और गन्दा बराबर नहीं[242] अगर्चे तुझे गन्दे की कसरत भाए तो अल्लाह से डरते रहो

یٰۤاُولِی الْاَلْبَابِ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿١٠٠﴾ ع یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا لَا تَسْــَٔلُوْا ١٣ ع ٣

ऐ अ़क़्ल वालो कि तुम फ़लाह पाओ ऐ ईमान वालो ऐसी बातें न

عَنْ اَشْیَآءَ اِنْ تُبْدَ لَكُمْ تَسُؤْكُمْ ۚ وَاِنْ تَسْــَٔلُوْا عَنْهَا حِیْنَ یُنَزَّلُ الْقُرْاٰنُ

पूछो जो तुम पर ज़ाहिर की जाएं तो तुम्हें बुरी लगें[243] और अगर उन्हें उस वक़्त पूछोगे कि क़ुरआन उतर रहा है

236 : कि वहां दीनी व दुन्यवी उमूर का क़ियाम होता है, ख़ाइफ़ वहां पनाह लेता है, ज़ईफ़ों को वहां अमान मिलती है, ताजिर वहां नफ़्अ़ पाते हैं, ह़ज व उ़मरह करने वाले वहां ह़ाज़िर हो कर मनासिक अदा करते हैं। **237 :** या'नी ज़िल ह़िज्जा को जिस में ह़ज किया जाता है। **238 :** कि इन में सवाब ज़ियादा है, इन सब को तुम्हारे मसालेह़ के क़ियाम का सबब बनाया। **239 :** तो ह़रम व एह़राम की हुरमत का लिह़ाज़ रखो, अल्लाह तआ़ला ने अपनी रह़मतों का ज़िक्र फ़रमाने के बा'द अपनी सिफ़त ''شَدِیْدُ الْعِقَاب'' ज़िक्र फ़रमाई ताकि ख़ौफ़ो रजा से तक्मीले ईमान हो, इस के बा'द सिफ़ते ग़फ़ूर व रह़ीम बयान फ़रमा कर अपनी वुस्अ़ते रह़मत का इज़्हार फ़रमाया। **240 :** तो जब रसूल हुक्म पहुंचा कर फ़ारिग़ हो गए तो तुम पर त़ाअ़त लाज़िम और हुज्जत क़ाइम हो गई और जाए उ़ज़्र बाक़ी न रही। **241 :** उस को तुम्हारे ज़ाहिरो बात़िन, निफ़ाक़ व इख़्लास सब का इ़ल्म है। **242 :** या'नी ह़लाल व ह़राम, नेक व बद, मुस्लिम व काफ़िर और खरा खोटा एक दरजे में नहीं हो सकता। **243** **शाने नुज़ूल :** बा'ज़ लोग सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से बहुत से बे फ़ाएदा सुवाल किया करते थे, येह ख़ात़िरे मुबारक पर गिरां होता था। एक रोज़ फ़रमाया कि जो जो दरयाफ़्त करना हो दरयाफ़्त करो मैं हर बात का जवाब दूंगा, एक शख़्स ने दरयाफ़्त किया कि मेरा अन्जाम क्या है? फ़रमाया : जहन्नम। दूसरे ने दरयाफ़्त किया कि मेरा बाप कौन है? आप ने उस के अस्ली बाप का नाम बता दिया जिस के नुत़्फ़े से वोह था कि सदाक़ा है बा वुजूदे कि उस की मां का शोहर और था, जिस का येह शख़्स बेटा कहलाता था। इस पर येह आयत नाज़िल हुई और फ़रमाया गया कि ऐसी बातें न पूछो जो ज़ाहिर की जाएं तो तुम्हें ना गवार गुज़रें। (تفسیر احمدی) बुख़ारी व मुस्लिम की ह़दीस शरीफ़ में है कि एक रोज़ सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने ख़ुत़्बा फ़रमाते हुए फ़रमाया : जिस को जो दरयाफ़्त करना हो दरयाफ़्त करे! अ़ब्दुल्लाह बिन हुज़ाफ़ा

www.dawateislami.net

تُبْدَ لَكُمْ عَفَا اللّٰهُ عَنْهَا ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ حَلِيْمٌ ﴿۱۰۱﴾ قَدْ سَاَلَهَا قَوْمٌ مِّنْ

तो तुम पर ज़ाहिर कर दी जाएंगी **अल्लाह** उन्हें मुआफ़ फ़रमा चुका है[244] और **अल्लाह** बख़्शने वाला हिल्म वाला है तुम से अगली एक क़ौम ने

قَبْلِكُمْ ثُمَّ اَصْبَحُوْا بِهَا كٰفِرِيْنَ ﴿۱۰۲﴾ مَا جَعَلَ اللّٰهُ مِنْۢ بَحِيْرَةٍ وَّلَا

उन्हें पूछा[245] फिर उन से मुन्किर हो बैठे **अल्लाह** ने मुक़र्रर नहीं किया है कान चिरा हुवा और न

سَآئِبَةٍ وَّلَا وَصِيْلَةٍ وَّلَا حَامٍ ۙ وَّلٰكِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا يَفْتَرُوْنَ عَلَى

बिजार और न वसीला और न हामी[246] हां काफ़िर लोग **अल्लाह** पर झूटा

اللّٰهِ الْكَذِبَ ؕ وَاَكْثَرُهُمْ لَا يَعْقِلُوْنَ ﴿۱۰۳﴾ وَاِذَا قِيْلَ لَهُمْ تَعَالَوْا اِلٰى

इफ़्तिरा बांधते हैं[247] और उन में अक्सर निरे बे अ़क़्ल हैं[248] और जब उन से कहा जाए आओ उस तरफ़

مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ وَاِلَى الرَّسُوْلِ قَالُوْا حَسْبُنَا مَا وَجَدْنَا عَلَيْهِ اٰبَآءَنَا ؕ

जो **अल्लाह** ने उतारा और रसूल की तरफ़[249] कहें हमें वोह बहुत है जिस पर हम ने अपने बाप दादा को पाया

सहमी ने खड़े हो कर दरयाफ़्त किया कि मेरा बाप कौन है ? फ़रमाया : हुज़ाफ़ा। फिर फ़रमाया : और पूछो ! ह़ज़रते उ़मर رضی اللہ تعالٰی عنہ ने उठ कर इक़रारे ईमान व रिसालत के साथ मा'ज़िरत पेश की। इब्ने शहाब की रिवायत है कि अ़ब्दुल्लाह बिन हुज़ाफ़ा की वालिदा ने उन से शिकायत की और कहा कि तू बहुत ना लाइक़ बेटा है, तुझे क्या मा'लूम कि ज़मानए जाहिलिय्यत की औ़रतों का क्या ह़ाल था, ख़ुदा न ख़्वास्ता तेरी मां से कोई क़ुसूर हुवा होता तो आज वोह कैसी रुस्वा होती, इस पर अ़ब्दुल्लाह बिन हुज़ाफ़ा ने कहा कि अगर हुज़ूर किसी ह़बशी ग़ुलाम को मेरा बाप बता देते तो मैं यक़ीन के साथ मान लेता। बुख़ारी शरीफ़ की ह़दीस में है कि लोग ब त़रीक़े इस्तिह्ज़ा इस क़िस्म के सुवाल किया करते थे कोई कहता : मेरा बाप कौन है ? कोई पूछता मेरी ऊंटनी गुम हो गई है वोह कहां है ? इस पर येह आयत नाज़िल हुई। मुस्लिम शरीफ़ की ह़दीस में है कि रसूले करीम صلی اللہ علیہ وسلم ने ख़ुत़्बे में ह़ज फ़र्ज़ होने का बयान फ़रमाया। इस पर एक शख़्स ने कहा : क्या हर साल फ़र्ज़ है ? ह़ज़रत ने सुकूत फ़रमाया, साइल ने सुवाल की तक्रार की तो इर्शाद फ़रमाया कि जो मैं बयान न करूं उस के दरपै न हो अगर मैं हां कह देता तो हर साल ह़ज करना फ़र्ज़ हो जाता और तुम न कर सकते। **मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि अह़काम हुज़ूर को मुफ़व्वज़ (अ़त़ा कर दिये गए) हैं, जो फ़र्ज़ फ़रमा दें वोह फ़र्ज़ हो जाए, न फ़रमाएं न हो। **244 मस्अला :** इस आयत से साबित हुवा कि जिस अम्र की शरअ़ में मुमानअ़त न आई हो वोह मुबाह़ है। ह़ज़रते सलमान رضی اللہ عنہ की ह़दीस में है कि ह़लाल वोह है जो **अल्लाह** ने अपनी किताब में ह़लाल फ़रमाया, ह़राम वोह है जिस को उस ने अपनी किताब में ह़राम फ़रमाया और जिस से सुकूत किया वोह मुआफ़ तो कुल्फ़त (तक्लीफ़ व मशक़्क़त) में न पड़ो। (خازن) **245 :** अपने अम्बिया से। और बे ज़रूरत सुवाल किये। ह़ज़राते अम्बिया ने अह़काम बयान फ़रमा दिये तो बजा न ला सके। **246 :** ज़मानए जाहिलिय्यत में कुफ़्फ़ार का येह दस्तूर था कि जो ऊंटनी पांच मरतबा बच्चे जनती और आख़िर मरतबा उस के नर होता उस का कान चीर देते, फिर न उस पर सुवारी करते न उस को ज़ब्ह़ करते न पानी और चारे पर से हंकाते, उस को बह़ीरा कहते और जब सफ़र पेश होता या कोई बीमार होता तो येह नज़्र करते कि अगर मैं सफ़र से ब ख़ैरिय्यत वापस आऊं या तन्दुरुस्त हो जाऊं तो मेरी ऊंटनी साइबा (बिजार) है और उस से भी नफ़्अ़ उठाना बह़ीरा की त़रह़ ह़राम जानते और उस को आज़ाद छोड़ देते और बकरी जब सात मरतबा बच्चे जन चुकती तो अगर सातवां बच्चा नर होता तो उस को मर्द खाते और अगर मादा होता तो बकरियों में छोड़ देते और ऐसे ही अगर नर मादा दोनों होते तो कहते कि येह अपने भाई से मिल गई उस को वसीला कहते और जब नर ऊंट से दस गियाभ (ह़म्ल) ह़ासिल हो जाते तो उस को छोड़ देते, न उस पर सुवारी करते, न उस से काम लेते, न उस को चारे पानी पर से रोकते, उस को हामी कहते। (مدارک) बुख़ारी व मुस्लिम की ह़दीस में है कि बह़ीरा वोह है जिस का दूध बुतों के लिये रोकते थे, कोई उस जानवर का दूध न दोहता और साइबा वोह जिस को अपने बुतों के लिये छोड़ देते थे, कोई उन से काम न लेता। येह रस्में ज़मानए जाहिलिय्यत से इब्तिदाए अ़हदे इस्लाम तक चली आ रही थीं। इस आयत में इन को बात़िल किया गया। **247 :** क्यूं कि **अल्लाह** तआ़ला ने इन जानवरों को ह़राम नहीं किया, उस की त़रफ़ इस की निस्बत ग़लत़ है। **248 :** जो अपने सरदारों के कहने से इन चीज़ों को ह़राम समझते हैं, इतना शुऊ़र नहीं रखते कि जो चीज़ **अल्लाह** और उस के रसूल ने ह़राम न की उस को कोई ह़राम नहीं कर सकता। **249 :** या'नी हुक्मे ख़ुदा और रसूल का इत्तिबाअ़ करो और समझ लो कि येह चीज़ें ह़राम नहीं।

www.dawateislami.net

اَوَلَوْ كَانَ اٰبَآؤُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ شَيْـًٔا وَّ لَا يَهْتَدُوْنَ ﴿۱۰۴﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ

क्या अगर्चे उन के बाप दादा न कुछ जानें और न राह पर हों[250] ऐ ईमान

اٰمَنُوْا عَلَيْكُمْ اَنْفُسَكُمْ ۚ لَا يَضُرُّكُمْ مَّنْ ضَلَّ اِذَا اهْتَدَيْتُمْ ؕ اِلَى اللّٰهِ

वालो तुम अपनी फ़िक्र रखो तुम्हारा कुछ न बिगाड़ेगा जो गुमराह हुवा जब कि तुम राह पर हो[251] तुम सब की रुजूअ़

مَرْجِعُكُمْ جَمِيْعًا فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿۱۰۵﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

अल्लाह ही की त़रफ़ है फिर वोह तुम्हें बता देगा जो तुम करते थे ऐ ईमान वालो[252]

شَهَادَةُ بَيْنِكُمْ اِذَا حَضَرَ اَحَدَكُمُ الْمَوْتُ حِيْنَ الْوَصِيَّةِ اثْنٰنِ ذَوَا

तुम्हारी आपस की गवाही जब तुम में किसी को मौत आए[253] वसिय्यत करते वक़्त तुम में के दो

عَدْلٍ مِّنْكُمْ اَوْ اٰخَرٰنِ مِنْ غَيْرِكُمْ اِنْ اَنْتُمْ ضَرَبْتُمْ فِي الْاَرْضِ

मो'तबर शख़्स हैं या ग़ैरों में के दो जब तुम मुल्क में सफ़र को जाओ

250 : या'नी बाप दादा का इत्तिबाअ़ जब दुरुस्त होता कि वोह इल्म रखते और सीधी राह पर होते। **251 :** मुसल्मान कुफ़्फ़ार की महरूमी पर अफ़्सोस करते थे और उन्हें रन्ज होता था कि कुफ़्फ़ार इनाद में मुब्तला हो कर दौलते इस्लाम से महरूम रहे अल्लाह तआ़ला ने उन की तसल्ली फ़रमा दी कि इस में तुम्हारा कुछ ज़रर नहीं अम्र बिल मा'रूफ़, नही अ़निल मुन्कर का फ़र्ज़ अदा कर के तुम बरिय्युज़्ज़िम्मा हो चुके, तुम अपनी नेकी की जज़ा पाओगे। अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक ने फ़रमाया : इस आयत में अम्र बिल मा'रूफ़ व नही अ़निल मुन्कर के वुजूब की बहुत ताकीद की है क्यूं कि अपनी फ़िक्र रखने के मा'ना येह हैं कि एक दूसरे की ख़बर गीरी करे, नेकियों की रग़बत दिलाए, बदियों से रोके। (خازن) **252 शाने नुज़ूल :** मुहाजिरीन में से बुदैल जो ह़ज़रते अ़म्र बिन आ़स के मवाली (ग़ुलामों) में से थे ब क़स्दे तिजारत मुल्के शाम की त़रफ़ दो नसरानियों के साथ रवाना हुए, उन में से एक का नाम तमीम बिन औस दारी था और दूसरे का अ़दी बिन बद्दाअ, शाम पहुंचते ही बुदैल बीमार हो गए और उन्हों ने अपने तमाम सामान की एक फ़ेहरिस्त लिख कर सामान में डाल दी और हमराहियों को उस की इत्तिलाअ़ न दी, जब मरज़ की शिद्दत हुई तो बुदैल ने तमीम व अ़दी दोनों को वसिय्यत की, कि इन का तमाम सरमाया मदीने शरीफ़ पहुंच कर इन के अह्ल को दे दें और बुदैल की वफ़ात हो गई। उन दोनों ने उन की मौत के बा'द उन का सामान देखा, उस में एक चांदी का जाम था जिस पर सोने का काम बना था, उस में तीन सो मिस्क़ाल चांदी थी, बुदैल येह जाम बादशाह को नज़्र करने के क़स्द से लाए थे। उन की वफ़ात के बा'द उन के दोनों साथियों ने उस जाम को ग़ाइब कर दिया और अपने काम से फ़ारिग़ होने के बा'द जब येह लोग मदीनए त़य्यिबा पहुंचे तो उन्हों ने बुदैल का सामान उन के घर वालों के सिपुर्द कर दिया। सामान खोलने पर फ़ेहरिस्त उन के हाथ आ गई जिस में तमाम मताअ़ की तफ़्सील थी। सामान को उस के मुत़ाबिक़ किया तो जाम न पाया। अब वोह तमीम व अ़दी के पास पहुंचे और उन्हों ने दरयाफ़्त किया कि क्या बुदैल ने कुछ सामान बेचा भी था ? उन्हों ने कहा : नहीं। कहा : कोई तिजारती मुआ़मला किया था ? उन्हों ने कहा : नहीं। फिर दरयाफ़्त किया बुदैल बहुत अ़र्सा बीमार रहे और उन्हों ने अपने इलाज में कुछ ख़र्च किया ? उन्हों ने कहा : नहीं, वोह तो शहर पहुंचते ही बीमार हो गए और जल्द ही उन का इन्तिक़ाल हो गया। इस पर उन लोगों ने कहा कि उन के सामान में एक फ़ेहरिस्त मिली है, उस में चांदी का एक जाम सोने से मुनक़्क़श किया हुवा जिस में तीन सो मिस्क़ाल चांदी है, येह भी लिखा है। तमीम व अ़दी ने कहा : हमें नहीं मा'लूम, हमें तो जो वसिय्यत की थी उस के मुत़ाबिक़ सामान हम ने तुम्हें दे दिया, जाम की हमें ख़बर भी नहीं। येह मुक़द्दमा रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के दरबार में पेश हुवा, तमीम व अ़दी वहां भी इन्कार पर जमे रहे और क़सम खा ली, इस पर येह आयत नाज़िल हुई। (خازن) ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا की रिवायत में है कि फिर वोह जाम मक्कए मुकर्रमा में पकड़ा गया, जिस शख़्स के पास था उस ने कहा कि मैं ने येह जाम तमीम व अ़दी से ख़रीदा है। मालिके जाम के औलिया में से दो शख़्सों ने खड़े हो कर क़सम खाई कि हमारी शहादत इन की शहादत से ज़ियादा अह़क़ (अहम और दुरुस्त) है, येह जाम हमारे मूरिस का है। इस बाब में येह आयत नाज़िल हुई। (ترمذی) **253 :** या'नी मौत का वक़्त क़रीब आए, ज़िन्दगी की उम्मीद न रहे, मौत के आसार व अ़लामात ज़ाहिर हों।

فَاَصَابَتْكُمْ مُّصِيْبَةُ الْمَوْتِ ؕ تَحْبِسُوْنَهُمَا مِنْۢ بَعْدِ الصَّلٰوةِ فَيُقْسِمٰنِ

फिर तुम्हें मौत का हादिसा पहुंचे उन दोनों को नमाज़ के बा'द रोको[254] वोह अल्लाह की

بِاللّٰهِ اِنِ ارْتَبْتُمْ لَا نَشْتَرِيْ بِهٖ ثَمَنًا وَّلَوْ كَانَ ذَا قُرْبٰى ۙ وَلَا نَكْتُمُ

क़सम खाएं अगर तुम्हें कुछ शक पड़े[255] हम हल्फ़ के बदले कुछ माल न ख़रीदेंगे[256] अगर्चे क़रीब का रिश्तेदार हो और अल्लाह की गवाही

شَهَادَةَ اللّٰهِ اِنَّاۤ اِذًا لَّمِنَ الْاٰثِمِيْنَ ﴿۱۰۶﴾ فَاِنْ عُثِرَ عَلٰۤى اَنَّهُمَا اسْتَحَقَّاۤ

न छुपाएंगे ऐसा करें तो हम ज़रूर गुनहगारों में हैं फिर अगर पता चले कि वोह किसी गुनाह के सज़ावार

اِثْمًا فَاٰخَرٰنِ يَقُوْمٰنِ مَقَامَهُمَا مِنَ الَّذِيْنَ اسْتَحَقَّ عَلَيْهِمُ

हुए[257] तो उन की जगह दो और खड़े हों उन में से कि इस गुनाह या'नी झूटी गवाही ने उन का हक़ ले कर उन को नुक़्सान पहुंचाया[258] जो मय्यित से

الْاَوْلَيٰنِ فَيُقْسِمٰنِ بِاللّٰهِ لَشَهَادَتُنَاۤ اَحَقُّ مِنْ شَهَادَتِهِمَا وَمَا

ज़ियादा क़रीब हों तो अल्लाह की क़सम खाएं कि हमारी गवाही ज़ियादा ठीक है उन दो की गवाही से और हम

اعْتَدَيْنَاۤ ۖ اِنَّاۤ اِذًا لَّمِنَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿۱۰۷﴾ ذٰلِكَ اَدْنٰۤى اَنْ يَّاْتُوْا بِالشَّهَادَةِ

हद से न बढ़े[259] ऐसा हो तो हम ज़ालिमों में हों येह क़रीब तर है इस से कि गवाही

عَلٰى وَجْهِهَاۤ اَوْ يَخَافُوْۤا اَنْ تُرَدَّ اَيْمَانٌۢ بَعْدَ اَيْمَانِهِمْ ؕ وَاتَّقُوا اللّٰهَ

जैसी चाहिये अदा करें या डरें कि कुछ क़समें रद कर दी जाएं उन की क़समों के बा'द[260] और अल्लाह से डरो

ع وَاسْمَعُوْا ؕ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفٰسِقِيْنَ ﴿۱۰۸﴾ ع يَوْمَ يَجْمَعُ اللّٰهُ

और हुक्म सुनो और अल्लाह बे हुक्मों को राह नहीं देता जिस दिन अल्लाह जम्अ़ फ़रमाएगा

254 : इस नमाज़ से नमाज़े अ़स्र मुराद है क्यूं कि वोह लोगों के इज्तिमाअ़ का वक़्त होता है। हसन رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ ने फ़रमाया कि नमाज़े ज़ोहर या अ़स्र। क्यूं कि अहले हिजाज़ मुक़द्दमात इसी वक़्त करते थे हदीस शरीफ़ में है कि जब येह आयत नाज़िल हुई तो रसूले करीम صلی اللہ علیہ وسلم ने नमाज़े अ़स्र पढ़ कर अ़दी व तमीम को बुलाया उन दोनों को मिम्बर शरीफ़ के पास क़समें दीं, उन दोनों ने क़समें खाईं, इस के बा'द मक्कए मुकर्रमा में वोह जाम पकड़ा गया तो जिस शख़्स के पास था उस ने कहा : मैं ने तमीम व अ़दी से ख़रीदा है। (مدارک) **255 :** उन की अमानत व दियानत में और वोह येह कहें कि **256 :** या'नी झूटी क़सम न खाएंगे और किसी की ख़ातिर ऐसा न करेंगे **257 :** ख़ियानत के या झूट वग़ैरा के **258 :** और वोह मय्यित के अहलो अक़ारिब हैं। **259 :** चुनान्चे बुदैल के वाक़िए में जब इन के दोनों हमराहियों की ख़ियानत ज़ाहिर हुई तो बुदैल के वुरसा में से दो शख़्स खड़े हुए और उन्हों ने क़सम खाई कि येह जाम हमारे मूरिस का है और हमारी गवाही इन दोनों की गवाही से ज़ियादा ठीक है। **260 :** हासिले मा'ना येह है कि इस मुआ़मले में जो हुक्म दिया गया कि अ़दी व तमीम की क़समों के बा'द माल बरआमद होने पर औलियाए मय्यित की क़समें ली गईं, येह इस लिये कि लोग इस वाक़िए से सबक़ लें और शहादतों में राहे हक़्क़ो सवाब न छोड़ें और इस से ख़ाइफ़ रहें कि झूटी गवाही का अन्जाम शरमिन्दगी व रुस्वाई है। **फ़ाएदा :** मुद्दई पर क़सम नहीं, लेकिन यहां जब माल पाया गया तो मुद्दआ अ़लैहिमा ने दा'वा किया कि इन्हों ने मय्यित से ख़रीद लिया था, अब उन की हैसिय्यत मुद्दई की हो गई और उन के पास इस का कोई सुबूत न था, लिहाज़ा उन के ख़िलाफ़ औलियाए मय्यित की क़सम ली गई।

www.dawateislami.net

الرُّسُلَ فَيَقُوْلُ مَاذَآ اُجِبْتُمْ ؕ قَالُوْا لَا عِلْمَ لَنَا ؕ اِنَّكَ اَنْتَ عَلَّامُ

रसूलों को[261] फिर फ़रमाएगा तुम्हें क्या जवाब मिला[262] अ़र्ज़ करेंगे हमें कुछ इ़ल्म नहीं बेशक तू ही है सब ग़ैबों का

الْغُيُوْبِ ﴿١٠٩﴾ اِذْ قَالَ اللّٰهُ يٰعِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ اذْكُرْ نِعْمَتِيْ عَلَيْكَ وَعَلٰى

ख़ूब जानने वाला[263] जब **अल्लाह** फ़रमाएगा ऐ मरयम के बेटे ईसा याद कर मेरा एह़सान अपने ऊपर और

وَالِدَتِكَ ۘ اِذْ اَيَّدْتُّكَ بِرُوْحِ الْقُدُسِ ۫ تُكَلِّمُ النَّاسَ فِي الْمَهْدِ وَكَهْلًا ۚ

अपनी मां पर[264] जब मैं ने पाक रूह़ से तेरी मदद की[265] तू लोगों से बातें करता पालने (झूले) में[266] और पक्की उ़म्र का हो कर[267]

وقف لازم

وَاِذْ عَلَّمْتُكَ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَالتَّوْرٰىةَ وَالْاِنْجِيْلَ ۚ وَاِذْ تَخْلُقُ

और जब मैं ने तुझे सिखाई किताब और ह़िक्मत[268] और तौरैत और इन्जील और जब तू मिट्टी

مِنَ الطِّيْنِ كَهَيْـَٔةِ الطَّيْرِ بِاِذْنِيْ فَتَنْفُخُ فِيْهَا فَتَكُوْنُ طَيْرًا

से परिन्द की सी मूरत मेरे हुक्म से बनाता फिर उस में फूंक मारता तो वोह मेरे हुक्म से

بِاِذْنِيْ وَتُبْرِئُ الْاَكْمَهَ وَالْاَبْرَصَ بِاِذْنِيْ ۚ وَاِذْ تُخْرِجُ الْمَوْتٰى

उड़ने लगती[269] और तू मादर ज़ाद अन्धे और सफ़ेद दाग़ वाले को मेरे हुक्म से शिफ़ा देता और जब तू मुर्दों को मेरे हुक्म से

بِاِذْنِيْ ۚ وَاِذْ كَفَفْتُ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ عَنْكَ اِذْ جِئْتَهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَقَالَ

ज़िन्दा निकालता[270] और जब मैं ने बनी इसराईल को तुझ से रोका[271] जब तू उन के पास रोशन निशानियां ले कर आया तो

الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْهُمْ اِنْ هٰذَآ اِلَّا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿١١٠﴾ وَاِذْ اَوْحَيْتُ

उन में के काफ़िर बोले कि येह[272] तो नहीं मगर खुला जादू और जब मैं ने ह़वारियों[273]

261 : या'नी रोज़े क़ियामत **262 :** या'नी जब तुम ने अपनी उम्मतों को ईमान की दा'वत दी तो उन्हों ने तुम्हें क्या जवाब दिया ? इस सुवाल में मुन्किरीन की तौबीख़ है। **263 :** अम्बिया का येह जवाब उन के कमाले अदब की शान ज़ाहिर करता है कि वोह इ़ल्मे इलाही के ह़ुज़ूर अपने इ़ल्म को अस्लन नज़र में न लाएंगे और क़ाबिले ज़िक्र क़रार न देंगे और मुआमला **अल्लाह** तआ़ला के इ़ल्मो अ़द्ल पर तफ़्वीज़ फ़रमा (सोंप) देंगे। **264 :** कि मैं ने उन को पाक किया और जहां की औ़रतों पर उन को फ़ज़ीलत दी। **265 :** या'नी ह़ज़रते जिब्रील से कि वोह ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام के साथ रहते और ह़वादिस में उन की मदद करते। **266 :** सिग़र सिनी में, और येह मो'जिज़ा है। **267 :** इस आयत से साबित होता है कि ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام क़ियामत से पहले नुज़ूल फ़रमाएंगे क्यूं कि कहूलत (बुढ़ापे) का वक़्त आने से पहले आप उठा लिये गए, नुज़ूल के वक़्त आप तेंतीस साल के जवान की सूरत में जल्वा अफ़रोज़ होंगे और ब मिस्दाक़ इस आयत के कलाम करेंगे और जो पालने (झूले) में फ़रमाया था "اِنِّىْ عَبْدُ اللّٰهِ" (मैं हूं **अल्लाह** का बन्दा) वोही फ़रमाएंगे। (جمل) **268 :** या'नी असरारे उ़लूम **269 :** येह भी ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का मो'जिज़ा था। **270 :** अन्धे और सफ़ेद दाग़ वाले को बीना और तन्दुरुस्त करना और मुर्दों को क़ब्रों से ज़िन्दा कर के निकालना येह सब बि इज़्निल्लाह (**अल्लाह** तआ़ला के हुक्म से) ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام के मो'जिज़ाते जलीला हैं। **271 :** येह एक और ने'मत का बयान है कि **अल्लाह** तआ़ला ने ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को यहूद के शर से मह़फ़ूज़ रखा जिन्हों ने ह़ज़रत के मो'जिज़ाते बाहिरात देख कर आप के क़त्ल का इरादा किया, **अल्लाह** तआ़ला ने आप को आस्मान पर उठा लिया और यहूद ना मुराद रह गए। **272 :** या'नी ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام के मो'जिज़ात। **273 :** ह़वारी ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के अस्ह़ाब और आप के मख़्सूसीन हैं।

اِلَى الْحَوَارِيّٖنَ اَنْ اٰمِنُوْا بِيْ وَبِرَسُوْلِيْ ۚ قَالُوْۤا اٰمَنَّا وَاشْهَدْ بِاَنَّنَا

के दिल में डाला कि मुझ पर और मेरे रसूल पर[274] ईमान लाओ बोले हम ईमान लाए और गवाह रह कि

مُسْلِمُوْنَ ﴿١١١﴾ اِذْ قَالَ الْحَوَارِيُّوْنَ يٰعِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ هَلْ يَسْتَطِيْعُ

हम मुसल्मान हैं[275] जब हवारियों ने कहा ऐ ईसा बिन मरयम क्या आप का रब ऐसा

رَبُّكَ اَنْ يُّنَزِّلَ عَلَيْنَا مَآئِدَةً مِّنَ السَّمَآءِ ؕ قَالَ اتَّقُوا اللّٰهَ اِنْ

करेगा कि हम पर आस्मान से एक ख़्वान उतारे[276] कहा **अल्लाह** से डरो अगर

كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿١١٢﴾ قَالُوْا نُرِيْدُ اَنْ نَّاْكُلَ مِنْهَا وَتَطْمَئِنَّ قُلُوْبُنَا وَ

ईमान रखते हो[277] बोले हम चाहते हैं[278] कि उस में से खाएं और हमारे दिल ठहरें[279] और

نَعْلَمَ اَنْ قَدْ صَدَقْتَنَا وَنَكُوْنَ عَلَيْهَا مِنَ الشّٰهِدِيْنَ ﴿١١٣﴾ قَالَ عِيْسَى

हम आंखों देख लें कि आप ने हम से सच फ़रमाया[280] और हम उस पर गवाह हो जाएं[281] ईसा इब्ने मरयम

ابْنُ مَرْيَمَ اللّٰهُمَّ رَبَّنَاۤ اَنْزِلْ عَلَيْنَا مَآئِدَةً مِّنَ السَّمَآءِ تَكُوْنُ

ने अ़र्ज़ की ऐ **अल्लाह** ऐ रब हमारे हम पर आस्मान से एक ख़्वान उतार कि वोह

لَنَا عِيْدًا لِّاَوَّلِنَا وَاٰخِرِنَا وَاٰيَةً مِّنْكَ ۚ وَارْزُقْنَا وَاَنْتَ خَيْرُ

हमारे लिये ईद हो[282] हमारे अगले पिछलों की[283] और तेरी त़रफ़ से निशानी[284] और हमें रिज़्क़ दे और तू सब से बेहतर

274 : ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام पर **275 :** ज़ाहिर और बात़िन में मुख़्लिस व मुत़ीअ़। **276 :** मा'ना येह हैं कि क्या **अल्लाह** तआ़ला इस बाब में आप की दुआ़ क़बूल फ़रमाएगा। **277 :** और तक़्वा इख़्तियार करो ताकि येह मुराद ह़ासिल हो। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने कहा मा'ना येह हैं कि तमाम उम्मतों से निराला सुवाल करने में **अल्लाह** से डरो या येह मा'ना हैं कि उस की कमाले क़ुदरत पर ईमान रखते हो तो इस में तरद्दुद न करो। ह़वारी मोमिन, आ़रिफ़ और क़ुदरते इलाहिय्यह के मो'तरिफ़ थे। उन्हों ने ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام से अ़र्ज़ किया : **278 :** ह़ुसूले बरकत के लिये **279 :** और यक़ीन क़वी हो और जैसा कि हम ने क़ुदरते इलाही को दलील से जाना है मुशाहदे से भी इस को पुख़्ता कर लें। **280 :** बेशक आप **अल्लाह** के रसूल हैं। **281 :** अपने बा'द वालों के लिये। ह़वारियों के येह अ़र्ज़ करने पर ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام ने उन्हें तीस रोज़े रखने का ह़ुक्म दिया और फ़रमाया : जब तुम इन रोज़ों से फ़ारिग़ हो जाओगे तो **अल्लाह** तआ़ला से जो दुआ़ करोगे क़बूल होगी। उन्हों ने रोज़े रख कर ख़्वान उतरने की दुआ़ की उस वक़्त ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने ग़ुस्ल फ़रमाया और मोटा लिबास पहना और दो रक्अ़त नमाज़ अदा की और सरे मुबारक झुकाया और रो कर येह दुआ़ की जिस का अगली आयत में ज़िक्र है। **282 :** या'नी हम उस के नुज़ूल के दिन को ईद बनाएं, उस की ता'ज़ीम करें, ख़ुशियां मनाएं, तेरी इबादत करें, शुक्र बजा लाएं। **मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि जिस रोज़ **अल्लाह** तआ़ला की ख़ास रह़मत नाज़िल हो उस दिन को ईद बनाना और ख़ुशियां मनाना, इबादतें करना, शुक्रे इलाही बजा लाना त़रीक़ए सालिह़ीन है और कुछ शक नहीं कि सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की तशरीफ़ आवरी **अल्लाह** तआ़ला की अ़ज़ीम तरीन ने'मत और बुज़ुर्ग तरीन रह़मत है। इस लिये ह़ुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की विलादते मुबारका के दिन ईद मनाना और मीलाद शरीफ़ पढ़ कर शुक्रे इलाही बजा लाना और इज़्हारे फ़रह़ और सुरूर करना मुस्तह़सन व मह़मूद और **अल्लाह** के मक़्बूल बन्दों का त़रीक़ा है। **283 :** जो दीनदार हमारे ज़माने में हैं उन की और जो हमारे बा'द आएं उन की **284 :** तेरी क़ुदरत की और मेरी नुबुव्वत की।

www.dawateislami.net

الرّٰزِقِيْنَ ﴿١١٤﴾ قَالَ اللّٰهُ اِنِّيْ مُنَزِّلُهَا عَلَيْكُمْ ۚ فَمَنْ يَّكْفُرْ بَعْدُ مِنْكُمْ

रोज़ी देने वाला है **अल्लाह** ने फ़रमाया कि मैं उसे तुम पर उतारता हूं फिर अब जो तुम में कुफ़्र करेगा[285]

فَاِنِّيْۤ اُعَذِّبُهٗ عَذَابًا لَّاۤ اُعَذِّبُهٗۤ اَحَدًا مِّنَ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١١٥﴾ ع وَ اِذْ قَالَ ٥ع/١٥

तो बेशक मैं उसे वोह अ़ज़ाब दूंगा कि सारे जहान में किसी पर न करूंगा[286] और जब **अल्लाह**

اللّٰهُ يٰعِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ ءَاَنْتَ قُلْتَ لِلنَّاسِ اتَّخِذُوْنِيْ وَ اُمِّيَ اِلٰهَيْنِ

फ़रमाएगा[287] ऐ मरयम के बेटे ईसा क्या तू ने लोगों से कह दिया था कि मुझे और मेरी मां को दो ख़ुदा बना लो

مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ؕ قَالَ سُبْحٰنَكَ مَا يَكُوْنُ لِيْۤ اَنْ اَقُوْلَ مَا لَيْسَ لِيْ ۗ

अल्लाह के सिवा[288] अ़र्ज़ करेगा पाकी है तुझे[289] मुझे रवा नहीं कि वोह बात कहूं जो मुझे नहीं

بِحَقٍّ ؕ اِنْ كُنْتُ قُلْتُهٗ فَقَدْ عَلِمْتَهٗ ؕ تَعْلَمُ مَا فِيْ نَفْسِيْ وَ لَاۤ اَعْلَمُ مَا وقف النبي صلى الله عليه وسلم

पहुंचती[290] अगर मैं ने ऐसा कहा हो तो ज़रूर तुझे मा'लूम होगा तू जानता है जो मेरे जी में है और मैं नहीं जानता जो

فِيْ نَفْسِكَ ؕ اِنَّكَ اَنْتَ عَلَّامُ الْغُيُوْبِ ﴿١١٦﴾ مَا قُلْتُ لَهُمْ اِلَّا مَاۤ اَمَرْتَنِيْ

तेरे इल्म में है बेशक तू ही सब ग़ैबों का ख़ूब जानने वाला[291] मैं ने तो उन से न कहा मगर वोही जो मुझे तू ने हुक्म

بِهٖۤ اَنِ اعْبُدُوا اللّٰهَ رَبِّيْ وَ رَبَّكُمْ ۚ وَ كُنْتُ عَلَيْهِمْ شَهِيْدًا مَّا دُمْتُ

दिया था कि **अल्लाह** को पूजो जो मेरा भी रब और तुम्हारा भी रब और मैं उन पर मुत्तलअ़ था जब तक मैं

فِيْهِمْ ۚ فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِيْ كُنْتَ اَنْتَ الرَّقِيْبَ عَلَيْهِمْ ؕ وَ اَنْتَ عَلٰى كُلِّ

उन में रहा फिर जब तू ने मुझे उठा लिया[292] तो तू ही उन पर निगाह रखता था और हर चीज़ तेरे

شَيْءٍ شَهِيْدٌ ﴿١١٧﴾ اِنْ تُعَذِّبْهُمْ فَاِنَّهُمْ عِبَادُكَ ۚ وَ اِنْ تَغْفِرْ لَهُمْ

सामने हाज़िर है[293] अगर तू उन्हें अ़ज़ाब करे तो वोह तेरे बन्दे हैं और अगर तू उन्हें बख़्श दे

285 : या'नी ख़्वान नाज़िल होने के बा'द **286 :** चुनान्चे आस्मान से ख़्वान नाज़िल हुवा, इस के बा'द जिन्हों ने उन में से कुफ़्र किया वोह सूरतें मस्ख़ कर के ख़िन्ज़ीर बना दिये गए और तीन रोज़ में सब हलाक हो गए। **287 :** रोज़े क़ियामत ईसाइयों की तौबीख़ के लिये **288 :** इस ख़ित़ाब को सुन कर ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام कांप जाएंगे और **289 :** जुम्ला नक़ाइस व उ़यूब से और इस से कि कोई तेरा शरीक हो सके। **290 :** या'नी जब कोई तेरा शरीक नहीं हो सकता तो मैं येह लोगों से कैसे कह सकता था। **291 :** इल्म को **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ निस्बत करना और मुआ़मला उस को तफ़्वीज़ कर देना और अ़ज़्मते इलाही के सामने अपनी मिस्कीनी का इज़्हार करना येह ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام की शाने अदब है। **292 :** "تَوَفَّيْتَنِيْ" के लफ़्ज़ से ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام की मौत पर दलील लाना सह़ीह़ नहीं, क्यूं कि अव्वल तो लफ़्ज़ "توفّی" मौत के लिये ख़ास नहीं, किसी शै के पूरे तौ़र पर लेने को कहते हैं ख़्वाह वोह बिग़ैर मौत के हो जैसा कि क़ुरआने करीम में इर्शाद हुवा : "اَللّٰهُ يَتَوَفَّى الْاَنْفُسَ حِيْنَ مَوْتِهَا وَالَّتِيْ لَمْ تَمُتْ فِيْ مَنَامِهَا" (**अल्लाह** जानों को वफ़ात देता है उन की मौत के वक़्त और जो न मरें उन के सोए में) (رکوع:٢) दुवुम जब येह सुवाल व जवाब रोज़े क़ियामत का है तो अगर लफ़्ज़ "تَوَفّٰی" मौत के मा'नी में भी फ़र्ज़ कर लिया जाए जब भी

فَاِنَّكَ اَنْتَ الْعَزِیْزُ الْحَكِیْمُ ﴿۱۱۸﴾ قَالَ اللّٰهُ هٰذَا یَوْمُ یَنْفَعُ الصّٰدِقِیْنَ

तो बेशक तू ही है ग़ालिब हिक्मत वाला[294] अल्लाह ने फ़रमाया कि येह[295] है वोह दिन जिस में सच्चों को[296]

صِدْقُهُمْ ؕ لَهُمْ جَنّٰتٌ تَجْرِیْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِیْنَ فِیْهَاۤ اَبَدًا ؕ

उन का सच काम आएगा उन के लिये बाग़ हैं जिन के नीचे नहरें रवां हमेशा हमेशा उन में रहेंगे

رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَ رَضُوْا عَنْهُ ؕ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِیْمُ ﴿۱۱۹﴾ لِلّٰهِ مُلْكُ

अल्लाह उन से राज़ी और वोह अल्लाह से राज़ी येह है बड़ी काम्याबी अल्लाह ही के लिये है

ع۱۵ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ وَ مَا فِیْهِنَّ ؕ وَ هُوَ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ ﴿۱۲۰﴾ ع

आस्मानों और ज़मीन और जो कुछ इन में है सब की सल्तनत और वोह हर चीज़ पर क़ादिर है[297]

اٰیَاتُهَا ۱۶۵ ﴿۶ سُوْرَةُ الْاَنْعَامِ مَكِّیَّةٌ ۵۵﴾ رُكُوْعَاتُهَا ۲۰

सूरए अन्आम मक्किय्या है, इस में एक सो पेंसठ आयतें और बीस रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो बड़ा मेह्रबान रह्म वाला[1]

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضَ وَ جَعَلَ الظُّلُمٰتِ وَ النُّوْرَ ؕ۬

सब ख़ूबियां अल्लाह को जिस ने आस्मान और ज़मीन बनाए[2] और अंधेरियां और रोशनी पैदा की[3]

हज़रते ईसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की मौत क़ब्ले नुज़ूल इस से साबित न हो सकेगी। **293 :** और मेरा उन का किसी का हाल तुझ से पोशीदा नहीं। **294 :** हज़रते ईसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को मा'लूम है कि क़ौम में बा'ज़ लोग कुफ़्र पर मुसिर रहे, बा'ज़ शरफ़े ईमान से मुशर्रफ़ हुए, इस लिये आप की बारगाहे इलाही में येह अ़र्ज़ है कि उन में से जो कुफ़्र पर क़ाइम रहे उन पर तू अ़ज़ाब फ़रमाए तो बिल्कुल हक़ व बजा और अ़द्लो इन्साफ़ है क्यूं कि उन्हों ने हुज्जत तमाम होने के बा'द कुफ़्र इख़्तियार किया और जो ईमान लाए उन्हें तू बख़्शे तो तेरा फ़ज़्लो करम है और तेरा हर काम हिक्मत है। **295 :** रोज़े क़ियामत **296 :** जो दुन्या में सच्चाई पर रहे जैसे कि हज़रते ईसा عَلَیْہِ السَّلَام। **297 :** सादिक़ को सवाब देने पर भी और काज़िब को अ़ज़ाब फ़रमाने पर भी। **मस्अला :** क़ुदरत मुम्किनात से मुतअ़ल्लिक़ होती है न कि वाजिबात व मुहालात से, तो मा'ना आयत के येह हैं कि अल्लाह तआ़ला हर अम्रे मुम्किनुल वुजूद पर क़ादिर है। (جمل) **मस्अला :** किज़्ब वग़ैरा उ़यूबो क़बाएह़ अल्लाह سُبْحَانَہٗ تَبَارَکَ وَتَعَالٰی के लिये मुहाल हैं इन को तह़्ते क़ुदरत बताना और इस आयत से सनद लाना ग़लत़ व बात़िल है। **1 :** सूरए अन्आ़म मक्की है इस में बीस रुकूअ़ और एक सो पेंसठ आयतें तीन हज़ार एक सो कलिमे और बारह हज़ार नव सो पेंतीस ह़र्फ़ हैं। हज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا ने फ़रमाया कि येह कुल सूरत एक ही शब में ब मक़ाम मक्कए मुकर्रमा नाज़िल हुई और इस के साथ सत्तर हज़ार फ़िरिश्ते आए जिन से आस्मानों के किनारे भर गए। येह भी एक रिवायत में है कि वोह फ़िरिश्ते तस्बीह़ो तक़्दीस करते आए और सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم "سُبْحَانَ رَبِّیَ الْعَظِیْم" फ़रमाते हुए सर ब सुजूद हुए। **2 :** हज़रते का'ब अह़बार رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ ने फ़रमाया तौरैत में सब से अव्वल येही आयत है, इस आयत में बन्दों को शाने इस्तिग़्ना के साथ ह़म्द की ता'लीम फ़रमाई गई और पैदाइशे आस्मान व ज़मीन का ज़िक्र इस लिये है कि इन में नाज़िरीन के लिये बहुत अ़जाइबे क़ुदरत व ग़राइबे हिक्मत और इ़ब्रतें व मनाफ़ेअ़ हैं। **3 :** या'नी हर एक अंधेरी और रोशनी ख़्वाह वोह अंधेरी शब की हो या कुफ़्र की या जह्ल की या जहन्नम की और रोशनी ख़्वाह दिन की हो या ईमान व हिदायत व इ़ल्म व जन्नत की। ظُلُمَات को जम्अ़ और نُوْر को वाहिद के सीग़े से ज़िक्र फ़रमाने में इस त़रफ़ इशारा है कि बात़िल की राहें बहुत कसीर हैं और राहे ह़क़ सिर्फ़ एक दीने इस्लाम।

www.dawateislami.net